भूगोल हस्तामलक

OR

THE EARTH AS [A DROP OF]CLEAR WATER IN HAND

IN THREE VOLUMES.

तीन जिल्दों में

श्रीमन्महाराजाधिराज पश्चिमोत्तरदेशाधिकारी श्रीयुत नव्वाब लेफ्टिनेंट गवर्नर बहादुर की आज्ञानुसार

वैकुण्ठबासी राजा शिवप्रसाद सितारेहिन्द (३) ने बनाया

BY

LATE RAJA SIVA PRASAD, C. S. I.

॥ मस्त ॥

बैठकर सैर मुल्क की करनी यह तमाशा किताब में देखा

VOLUME I.

पहली जिल्द

PART II.

दूसरा हिस्सा

इलाहाबाद गवर्नमेंट के छापेखाने में छापा गयाथा

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेख़ाने में छपी

नवम्बर सन् १८९८ ई० ॥

2nd edition 600 copies.

Price per copy 9 annas.

दूसरीबार ६०० पुस्तकें

मोल फ़ी पुस्तक ॥-) आने

भूगोल हस्तामलक

OR

THE EARTH AS [A DROP OF] CLEAR WATER IN HAND

IN THREE VOLUMES.

तीन जिल्दों में

श्रीमन्महाराजाधिराज पश्चिमोत्तरदेशाधिकारी श्रीयुत नव्वाब लेफ्टिनेंट गवर्नर बहादुर की आज्ञानुसार

बैकुण्ठबासी राजा शिवप्रसाद सितारैहिन्द (३) ने बनाया

BY

LATE RAJA SIVAPRASAD, C. S. I.

॥ मस्त ॥

बैठकर सैर मुल्क की करनी यह तमाशा किताब में देखा

VOLUME I.

पहली जिल्द

PART II.

दूसरा हिस्सा

इलाहाबाद गवर्नमेंट के छापेखाने में छापा गयाथा

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेखाने में छपी

अक्टूबर सन् १८९८ ई० ॥

CONTENTS

OF THE

SECOND VOLUME.

विज्ञापन

जानना चाहिये कि यह भूगोल हस्तामलक सन् १८५१ या १८५२ ई० में लिखा गया था उस समय जो कुछ हालत कश्मीर की देखीगयी थी लिखने में आयी थी पर अब उस की हालत कुछ और ही सुनने में आती है महाराज गुलाबसिंह के बेटे महाराज रण-बीरसिंह बहादुर बड़े धर्मात्मा और अपनी प्रजा प्यारे हैं इनका यश सारे भारतबर्ष में छारहा है और इन्हों ने अपना सारा मन प्रजा पालन में तत्पर कर रक्खाहै अब हम कहसक्ते हैं कि कश्मीर स्वर्ग है और देवताओं के हाथ में है महाराज रणबीरसिंह इन्द्रकी समान शासन कररहे हैं ॥

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
९०	३	"झगड़ती हैं" इस के आगे "कारीगर" तक	झगड़ती हैं । कारीगर
९३ ९४	१८ से २३ तक	"यातें सरसन और॥१॥" इसके आगे "आमदनी उसकी" तक	यातें सरस न और॥ १ ॥ आमदनी उसकी

शिवप्रसाद

दूसरे भाग का सूचीपत्र

भूगोल हस्तामलक
दूसरा भाग

बंगाले की डिपुटी गवर्नरी

बंगाले के डिपुटी गवनर के तहत में जो ज़िले हैं उन में—१—चौबीस परगना हैं भागीरथी के पूर्व और सुन्दर बन के उत्तर। कहने में अबतक भी यह ज़िला चौबीस परगना कहलाता है, पर हक़ीक़त में उसके अंदर अब अठारही परगने गिने जाते हैं, छ दूसरे ज़िलों के साथ लग गए। उसका सदर मुक़ाम कलकत्ता इसी ज़िले में उत्तर की तरफ़ २२ अंश २३ कला उत्तर अक्षांश और ८८ अंश २८ कला पूर्व देशांतर में समुद्र से ५० फ़ुट ऊंचा और माय सौ मील दूर और इलाहाबाद से ४९८ मील अग्निकोन पूर्व को झुकता छ मील लंबा भागीरथी के बाएं कनारे पर जिसे वहां दरयाय हुगली कहते हैं बसा है। अनुमान करते हैं कि कलकत्ता इस शहर का नाम काली घाट के सबब से जो वहां दरया कनारे देवी का एक मंदिर है रहाथा। अब यही शहर हिन्दुस्तान की राजधानी है। साबिक़ में उस शहर के पास दलदल झील और जंगलों की बहुतायत से आब हवा ख़राब थी, पर जब से सरकार ने पानी का निकास करके दलदल ज़मीनों को सुखवा दिया,

जंगल कट गये, और हर तरफ़ सफ़ाई रहने लगी तब से बहुत राह पर आती चली है । अब यह शहर बड़ी रौनक पर है । क्या शक्ति है परमेश्वर की जहां सौ बरस भी नहीं गुज़रे साठ सत्तर झोपड़ों की बस्ती थी, वहां अब तीन कोस लंबा शहर बसता है । शहर भी कैसा कि जहां बीस से ऊपर तो बड़े बड़े नामी बज़ार हैं कि जिन में सारी दुनियाकी चीजें मयस्सर और बसती जिसकी दो लाख तीस हज़ार आदमी से ऊपर गिनी जाती है । लाख आदमी से अधिक नित गिर्दनवाह और आस पास के गांवों से आया करते हैं । वहां सब विलायतों के आदमी नज़र पड़ जाते हैं । सुस्ती और काहिली का निशान कम दिखलाई देता है, जिसको देखिये अपने काम में मशगूल है बग्गी और गाड़ियां वहां इतनी दौड़ा करती हैं, कि बाज़े वक्त़ रसता न मिलने के सबब घड़ियों खड़ा रहना पड़ता है । सवारी वहां पालकी और घोड़े की गाड़ी जिस वक्त़ जिस जगह चाहिये, दो असरफ़ी रोज़ से दो आने रोज़ तक की घोड़े की गाड़ी, किराए पर मौजूद है । कोठियां वहां अंगरेज़ी डौल की दुमंज़िली तिमंज़िली बरन चौमंज़िली तक हज़ारों बनी हैं । बाग़ बाबुओं के ऐसे उमदः और सूथरे कि राजाओं का भी दिल उन की सैर को ललचाय । जहाज़ गंगा में सैकड़ों लगे हुए, जहां तक नज़र जावेगी मस्तूलही मस्तूल दिखलाई देवेंगे । शाम के वक्त़ जब हज़ारों साहिब मेमों के साथ गाड़ियों पर सवार होकर गंगा कनारे की सड़क पर हवा खाने को निकलते हैं अजब एक कैफ़ियत होती है । निदान यह शहर लाइक़ सैरके है । लंदन का नमूना है । क़िले की तय्यारी में जिसका नाम फ़ोर्ट विलियम है दो करोड़ से ऊपर ख़र्च हुआ है, और गवर्नर जेनरल के रहने का मकान भी बहुत आलीशान और सुंदर बनाहै । एक म्यूज़ियम

अर्थात् अजाइब घर उस शहर में ऐसाहै कि उसके अंदर तमाम ए-
शिया की अद्भुत और अनोखी चीज़ें भरी हैं। यदि नाममात्र भी उन
चीज़ों का लिखें तो ऐसे ऐसे कई ग्रंथ बनजावें। धातु बनस्पति जीव
विशेष कृत्रिम और स्वाभाविक जो पदार्थ जहां कहीं क्या जल क्या
थल में अद्भुत मिला सब को इस घरमें ला रखा। फल फूल पेड़ोंकी
टहनियां मरेहुए जीव जंतु और नए नए तरह के पक्षी कीट पतंग इ-
त्यादि शीशों के अंदर ऐसे दवाके अरकों में रखे हैं, कि मानों वह तो
अभी तोड़े गये और यह अभी हिलें चलें और बोलेंगे। अस्पताल
कई एक बहुत बड़े बड़े बने हैं। विद्यालय इतने हैं कि जिन में हजारों
लड़के सारी दुनियां के इल्म सीखते हैं। मेडिकल कालिज में लड़कों
को डाक्टरी का इल्म सिखलाया जाताहै, और मुर्दों का पेट चीर चीर
कर दिखलाया जाताहै। जब वे पक्के होते हैं तब डाक्टरी के कामपर
मुकर्रर होजाते हैं। वहां इस कालिज में शीशोंके अंदर अर्कों के द-
मियान बड़ी बड़ी चमत्कारी चीज़ रखी हैं। कहीं दो धड़ एक सिर
और कहीं दो सिर एक धड़ का लड़का, कहीं सारा बदन आदमी
और मुंह जानवर का और कहीं सारा बदन जानवर और मुंह आ-
दमी का। मा के गर्भ में बालकों की पहिले क्या सूरत रहती है और
फिर दिनपर दिन क्योंकर बदलती जाती है, नौ दिनसे लेकर नौ म-
हीने तक आंवलनाल समेत रखेहुए हैं। लड़कियों के पढ़नेके वास्ते
भी इस्कूल बने हैं। अब वहां के अमीरों ने आपस में चंदाकरके एक
इस्कूल ऐसा तय्यार कियाहै कि जिसमें सिवाय हिंदुओं के और किसी
जात के लड़के नें आनेपावें। टकसाल भी लाइक़ देखने के है, कैसी
कैसी धूंएं की कलें उस में लगाई हैं। और कैसा उन कलों के बल-
आपसे आप जल्द सिक्का तैयार होताहै। गनफ़ौंडरी में इसी तरह धूंएं

की कलों के ज़ोरसे तोपें ढलती और ख़राद पर चढ़ती हैं। जेनरल अक्टरलोनी के मानबेंट अर्थात् मीनार पर जो १६५ फुट ऊंचा है चढ़ने से सारा शहर मानों हथेलीपर दिखलाई देने लगताहै। चढ़ने के लिये उसके अंदर २१३ सीढ़ियां बनी हैं। सड़कें वहां की सब साफ़ और चौड़ी और रातको रोशन रहती हैं रोशनी का यहां भी लंदनकी तरह बाफ़से बंदोबस्त होगया है। (१) और छिड़काव के लिये नहरों में पानी लानेको गंगाके कनारे धूएं का पम्प अर्थात् वह कल जिस्से पानी ऊपर उठता है बना दियाहै। लहर समुद्रकी गंगा में कलकत्ते तक पहुँचती है, उसीको ज्वार भाठा कहते हैं। जहाज भी कलकत्ते तक आते हैं। मांस अहारियों की बहुतायत से कव्वे चील और हड़गिल्ले वहां बहुत हैं। यह हड़गिल्ला पांचफुट ऊंचा होताहै और पर उसका फैलने से पंद्रह फुट तक नापागया है। कलकत्ते से आठ कोस उत्तर गंगा के बांएं कनारे बारकपूर की छावनी है। वहां भी गवर्नर जेनरल के रहने का एक उमदा मकान और बाग़ बना है। कलकत्ते से छ मील ईशानकोन को दमदमे में तोपख़ाना रहता है। यह भी मालूम रखना चाहिये कि शहर कलकत्ते का सुप्रिमकोर्ट के तहत में है, परगनों के लिये जज कलेक्टर इत्यादि जुदा मुक़र्रर हैं, और वे सब फ़ोर्ट विलियम के क़िले से कोस आध एक पर अलीपूर में कचहरी करते हैं —२— हौरा चौबीस परगने के पश्चिम। सदर मुक़ाम

---

(१) जिस तरह ख़ज़ाने से नलों की राह फ़व्वारों में पानी पहुँचा करता है, इसी तरह यह बाफ़ भी अपने ख़ज़ाने से नलों की राह जाबजा पहुँच जाती है, और जिस तरह फ़व्वारे के मुँह से पानी निकला करता है उसी तरह इसके नलोंके मुँह से इसकी ज्वाला निकलती है। मुफ़स्सल बयान इस बाफ़ के तैयार करने का और नलों में उसके बांटने का लंदन के बयान के साथ होगा यहां इतनाही रहेगा॥

हौरा अथवा हवड़ा ठीक कलकत्ते के साम्हने गंगा पार बसा है। वहां बारूत बनाने की मेगज़ीन धूंएं के ज़ोर से चलते हुए आरे कल के कोल्हू इत्यादि, कई कारख़ाने हैं।–३–बारासत चौबीस परगने के उत्तर। सदर मुक़ाम बारासत कलकत्ते से १२ मील ईशानकोन की तरफ़ है।–४–नदिया बारासत के उत्तर। उसका सदर मुक़ाम किशन नगर कलकत्ते के उत्तर ५७ मील पर बसा है। शहर नादिया अथवा नवद्वीप गंगा के कनारे उस मुक़ाम पर है जहां उसकी दोनों धारा जलंघी और भागीरथी का संगम हुआ है, पर वह अब बर्दवान के ज़िले में गिना जाता है। बंगाले में वहां के पण्डित बहुत प्रसिद्ध हैं, विशेष करके नय्यायिक। इसी ज़िले में वायुकोन की तरफ़ भागीरथी के कनारे मुर्शिदाबाद के दक्षिण तीस मील पर पलासी का गांव है, जहाँ लार्ड क्लाइव ने सन् १७५७ में सिराजुद्दौला को शिकस्त दी थी।–५–जसर नदिया के पूर्व। आब हवा बहुत ख़राब। सुंदरबन इस ज़िले के दक्षिण भाग से बड़ा है। सदर मुक़ाम जसर अथवा मुरली कलकत्ते में ६२ मील ईशानकोन की तरफ़ है।–६–बाक़रगंज जसर के पूर्व। सन् १८०१ में इसका सदर मुक़ाम बाक़रगंज से उठकर बैरीसाल में आगया। वह कलकत्ते से १२५ मील ठीक पूर्व गंगा के एक टापूमें बसा है।–७–नावकोली बाक़रगंज के पूर्व। सदर मुक़ाम बलुआ कलकत्ते से १८० मील पूर्व ईशानकोन को झुकता मेघना के बांएं कनारे है।–८–फ़रीदपुर अथवा ढाका जलालपुर बाक़रगंज के के उत्तर। उसका सदर मुक़ाम फ़रीदपुर कलकत्ते से १२५ मील ईशानकोन की तरफ़। वहां से अढ़ाई कोस पर पद्मा बहती है। इसी ज़िले में ढाके से चार कोस अग्निकोन की तरफ़ नरायनगंज में नमक का बहुत रोज़गार होता है।–९–ढाका ढाका जलालपुर के पूर्व ढाके

का शहर, जिसे जहांगीर नगर भी कहते हैं, कलकत्ते से १८० मील ईशानकोन की तरफ़ बूढ़ी गंगा के बांएं कनारे बसा है, बरसात के दिनों में जब पानी की बाढ़ आती है, तो हर तरफ़ उसके जल ही जल दिखलाई देता है। किसी समय में यह शहर बहुत आबाद और सूबै बंगाले की राजधानी था। अब तक भी उस के गिर्दनवाह में बहुतेरे खंडहर पड़े हैं और अनुमान ६०००० आदमी उस में बसते हैं। कहते हैं। कि शाइस्ताख़ां की सूबेदारी में वहां रूपये का आठ मन चावल बिका था, सन् १६८९ में जब वह वहां से चलने लगा तो उसने शहर का पश्चिम दरवाज़ा चुनवाकर उस पर यों तिलाक़ अर्थात् आन लिखवा दिया, कि इस दरवाज़े को मेरे पीछे वही सूबेदार खोले जो फिर ऐसा सस्ता करे।—१०—त्रिपुरा ढाका और इस जिले के बीच में ब्रह्मपुत्र का दर्या जिसे वहां वाले मेघनाके नाम से पुकारते हैं बहता है। इस जिले का नाम पुराने काग़ज़ों में कहीं कहीं रौशनाबाद भी लिखा है। यह पूर्व दिशा में हिन्दुस्तान का सब से परला ज़िला है। इस से आगे फिर जंगल पहाड़ है, कि जिन से परे बर्म्हा का मुल्क बस्ता है। आदमी वहां के जिन्हें बंगाली तिउरा पुकारते हैं कुछ जंगली से हैं बहुधा ज़मीन में बल्लियां गाड़ कर उन बल्लियों पर अपने झोपड़े बनाते हैं। सूरतें उनकी चीन और बर्म्हावालों से बहुत मिलती हैं। धर्म का उनके कुछ ठिकाना नहीं। इसका सदर मुक़ाम कोमेला पहाड़ के पास गोमती नदी के बांएं कनारे कलकत्ते के पूर्व ईशान कोन को झुकता २०० मील पर बसा है।—११—चित्रग्राम अथवा चटगांव जिसे अंगरेज़ लोग चिटागांग कहते हैं, त्रिपुरा के अग्निकोन की तरफ़ नाफ़ नदी तक चलागया है। यहभी ज़िला हिन्दुस्तान की हद पर है इस से पूर्व जंगल पहाड़ और फिर उन से आगे बर्म्हा का

मुल्क है। इस जिले में बस्ती कम है और बन बहुत। यहां के आदमी भी त्रिपुरावालों की तरह छ सात हाथ लम्बी बल्लियां जमीन में गाड़कर उस पर अपने झोपड़े बनाते हैं। अठवारे में एक दो बार कई मुक़ामों पर हाट लगा करती है उसी जगह लोग सौदा करने के लिये इकट्ठा होते हैं। मज़हब का उनके कुछ ठिकाना नहीं सब चीज खाते पीते हैं। शिकारी बहुधा हाथी मारकर उसी के गोश्त पर गुज़ारा करते हैं। हाथी वहां के जंगलों में त्रिपुरा की तरह बहुतायत से होते हैं। गरजन का तेल जो काठ की चीज़ों को साफ़ रखने के लिये खूब चीज है वहां बहुत बनता है। आब हवा अच्छी है। चटगांव अथवा इसलामाबाद २२००० आदमी की बस्ती इसका सदर मुक़ाम कर्नफूली नदी के दहने कनारे कलकत्ते के पूर्व तीन सौ मील पर बसा है। उस से बीस मील उत्तर हिंदुओं का तीर्थ सीता कुंड है, कि जिस का जल सदा गर्म रहता है। जो कोई उसके जल के पास जलती हुई बत्ती लेजावे तो उसकी बाफ़ गोरख डिब्बी की तरह बारूत सी भभक जाती है। उसी थाने के इलाक़े में बलेवा कुंड हिंदुओं का दूसरा तीर्थ है, उस में पानी के ऊपर ज्वालामुखी की तरह सदा आग बला करती है। ज्वालामुखी और गोरखडिब्बी का बर्णन और वहां आग के जलने और भभकने का कारण कांगड़े के जिले में लिखा जावेगा—१२--सिलहट जिसका शुद्ध नाम श्रीहट्ट है त्रिपुरा के उत्तर। शास्त्र में जो मत्स्यदेश लिखा है वह इसी के आस पास है। इस ज़िले के पूर्व और दक्षिण भाग में जंगल और पहाड़ हैं, और बाक़ी मैदान कि जो बरसात के दिनों में बहुधा जल मग्न हो जाता है। लोहे और कोयले की खान है। इन पहाड़ों में अक्सर खसिये लोग बसते हैं, मज़बूत होते हैं, और हथियार उनके तीर कमान और नंगी लंबी त-

लवारें और और ढालें चौखूंटी इतनी बड़ी कि जिनसे मेह में छतरी की बिलकुल इहतियाज नहीं। उन लोगों में पैतृकाधिकार बड़ी बहन के लड़के को पहुंचता है। ढाल और सीतलपाटी अर्थात् बेत की बुनी हुई चटाई यहां के बराबर कहीं नहीं बनती। इमारत कम बहुत आदमी छान छप्परों में रहते हैं। सदर मुक़ाम इसका सिलहट कलकत्ते के ईशानकोन को कुछ ऊपर ३०० मील पर बसा है। सिलहट से एक दिन का राह पर वायुकोन को पडुआ नाम बस्ती है। वहां से नौ मील ईशान कोनको पहाड़में एक अद्भुत गुफा है, दस से अस्सी फ़ुट तक ऊंची और चौड़ी, लम्बान की खबर नहीं, लोग आध कोस तक तो उसके अंदर गए हैं, फिर लौट आए। सिलहट से २० मील ईशानकोन उत्तर को झुकता जयंतापुर पहले एक राजा के दखल में था, सन् १८२२ में वहां के राजा की बहन ने काली के साम्हने नर बलि चढ़ाने को एक बंगाली पकड़ने के लिये अपने आदमी सरकारी अमलदारी में भेजे थे, पर क़िस्मत बंगालियों की अच्छी थी कि वह आदमी गिरफ्तार हो गए और जेलखाने में भेजे गए, परंतु सन् १८३५ में वहां के राजा ने तीन आदमी सरकारी रैयत को अपने इलाक़े के अंदर पकड़कर काली के साम्हने बल देही दिया, तब सरकार ने उस इलाक़े को जब्त करके सिलहट में मिला लिया, और राजा के खाने को पिंशन मुक़र्रर कर दिया। —१३—कचार अथवा हेरम्ब सिलहट के पूर्व। यह जिला तीन तरफ़ पहाड़ों से घिरा है, कि जो आठ आठ हज़ार फुट तक ऊंचे हैं, और मैदान दलदल और झीलों से भरा है। दक्षिण भाग में बड़ा घना जंगल है। लोहा खान से निकलता है। सदर मुक़ाम सिलचार कलकत्ते से ३०० मील ईशानकोन बारक नदी के बाएं कनारे बसा है।—१४—मैमनसिंह सिल-

हट से पश्चिम। यह जिला ब्रह्मपुत्र के दोनों कनारों पर बसा है। और बहुत सी नदियां उस में बहती हैं। बरसात के दिनों में प्राय सारा जिला जल मग्न हो जाता है इसका सदर मुक़ाम सोवारा अथवा नसीराबाद ब्रह्मपुत्र के दहने कनारे कलकत्ते के उत्तर ईशानकोन को झुकता हुआ २०० मील है। –१५–पबना जसर के उत्तर। इसका सदर मुक़ाम पबना कलकत्ते से १३७ मील उत्तर ईशानकोन को झुकताहै। –१६–राजशाही पबना के वायुकोनकी तरफ़। इस ज़िले के बीच कई धारा गंगा की और दूसरी नदियां भी बहती हैं, और बरसात में सब जगह जल ही जल हो जाता है। इसका सदर मुक़ाम बौलिया कलकत्ते से १३० मील उत्तर गंगा के बांएं कनारे पर बसा है। –१७–बगुड़ा राजशाही के ईशानकोन की तरफ़। इसका सदर मुक़ाम बगुड़ा कलकत्ते से १७५ मील उत्तर ज़रा ईशानकोन को झुकता हुआ है। –१८– रंगपुर बगुड़ा के उत्तर। ब्रह्मपुत्र तिष्टा करतोया इत्यादि कई नदियां इस में बहती हैं, और ईशानकोन की तरफ़ झीलें भी हैं। गर्मी कम पड़ती है। पूर्व भाग में लू बिलकुल नहीं चलती। इस ज़िले में बहुतेरे आदमी आटा पीसने की तरकीब न जानने के कारन गेहूं भी चावल की तरह उबाल कर खाते हैं। इमारत बहुत कम, बड़े बड़े आदमी और महाजन भी घास फूस के बंगलों में रहते हैं। जंगल ऐसे कि जिन में हाथी गैंड़े फिरते हैं। सदर मुक़ाम रंगपुर कलकत्ते से २४० मील उत्तर ज़रा ईशानकोन को झुकता है। –१९–दिनाजपुर रंगपुर के पश्चिम। नदियां इस ज़िले में बहुत हैं, गांव गांव नाव घूमती है, पर बरसात में जगह २ पर जो पानी बंद रह जाता है और बहुत से तालाब जो बे मरम्मत पड़े हैं गर्मियों में उनका सड़ना और सूखना बुरा होता है। सदर मुक़ाम

दिनाजपुर कलकत्ते के ठीक उत्तर २२५ मील पूर्णा बाबा नदी के कनारे अनुमान ३०००० आदमी की बस्ती है।—२०—पुरनिया दिनाजपुर के पश्चिम । मोरंग का पहाड़ और जंगल इस ज़िले के उत्तर पड़ता है, जिसे संस्कृत में किरात देश लिखा है । बरसात में इस ज़िले की प्राय आधी धरती जल मग्न हो जाती है। जमींदारों को खेतियों की हाथियों से रखवाली करनी पड़ती है। जब अंगरेज़ों की वहां नई अमल्दारी हुई थी तो उन के नौकरों ने उन से यह मशहूर कर दिया कि यहां की लोमड़ी रात को रुपए और कपड़े भी उठा ले जाती है और इस बहाने से बहुतेरी चीज़ें चुरालीं । गाय भैंस यहां बहुत होती हैं, मोरंग के जंगल में चराई का आराम है। सदर मुक़ाम पुरनियां कलकत्ते से २५० मील उत्तर वायुकोन को ज़रा झुकता, यद्यपि नौ मील मुरब्बा के बिस्तार में बसाहै, पर आदमी उसमें चालीस हज़ारसे अधिक न होंगे । जो लोग कुलीन नहीं होते वे लोग कुलीन बनने के लिये अपनी बेटियों को कुलीनों के साथ ब्याहने में बड़ा रुपया ख़र्च करते हैं, बरन क़भी कभी दंतहीन और कंठागत प्राणवालों के साथभी ब्याह देते हैं, कि जिससे फिर उसके भाइयों का विवाह कुलीनों के साथ हो सके, और अकुलीन स्त्रियों के लेने में रुपया मिले।—२१—मालदह पुरनिया के दक्षिण। सदर मुक़ाम मालदह कलकत्ते से १८० मील उत्तर महानंद नदीके तटपर अनुमान २०००० आदमियों की बस्ती है। गौड़का शहर जो किसी समय में बंगाले की राजधानी था, मालदह से नौ दस मील दक्षिण गंगा कनारे बस्ताथा, अब गंगाकी धारा वहांसे चारपांच कोस हटगई, शहर की जगह खंडहर और जंगली दरख़्त खड़े हैं। अकबर के बाप हुमायूं बादशाह ने उसका नाम जन्नताबाद रखा था।

पुराना नाम उसका लक्ष्मणावती है। उसके खंडहर अब तक भी बीस मील मुरब्बा में नजर पड़ते हैं। उसमें एक मीनार ७१ फुट ऊंचा है।-२२-मुर्शिदाबाद मालदह से दक्षिण आब हवा वहांकी खराब। सदरमुक़ाम मुर्शिदाबाद भागीरथी के बांएं कनारे १२० मील कलकत्ते के उत्तर बसा है। पहिले उसका नाम मक़सूदाबाद था, सन् १७०४ में बंगाले के नाज़िम मुरशिदकुली खां ने उसे मुर्शिदाबाद किया, और सूबे बंगालेकी राजधानी बनाया, कि जो बिहार से पूर्व ब्रह्मा की हद्दतक चलागया है। अब भी नव्वाब नाज़िम जो सरकार से पंद्रह लाख रुपया सालाना पिंशन पाताहै इसी शहर में रहता है, एक कोठी अंगरेजी तौर की अपने रहनेके वास्ते बहुत उमदा बनाई है, कहते हैं कि उसकी तैयारी में अठारह लाख रुपया खर्च हुआ है, और अनुमान डेढ़लाख आदमी उस शहरमें बस्ते हैं। मुर्शिदाबादसे छ मील दक्षिण भागीरथी के बांएं कनारे बहरामपुर की छावनी है। -२३-बीरभूम मुर्शिदाबाद के पश्चिम इस ज़िले में कोयले और लोहे की खान है। सिउड़ी इसका सदर मुक़ाम कलकत्ते से ११० मील उत्तर वायुकोन को झुकता हुआहै। वहां से ६० मील वायुकोन को झाड़खंडके बीच देवगढ़ में वैद्यनाथ महादेव का प्रसिद्ध मंदिर है। शिवरात्री को बड़ा मेला होताहै। हजारों कांवड़िये गंगासे महादेवके लिये गंगाजल लाते हैं। और पंद्रह मील पश्चिम नागौर का पुराना शहर वीरानसा पड़ा है। उससे सातमील पर बकलेसर में गर्म पानी का एक सोता जारी है। गंधकका उसमें असरहै और थर्मामेटर (१)

---

(१) गर्मी का प्रमाण जानने के लिये थर्मामेटर खूब चीज़ है। पतली लम्बी गर्दन की एक शीशी में पारा भरा रहता है मुंह शीशी का बिलकुल बंद और गर्दन शीशी की हवासे खाली होती है, और उस शीशी के नीचे एक पटरा पीतल की

उसके अंदर डुबाने से १५२ दर्जे चढ़ता है। खिडकी से अनुमान २० मील नैर्ऋतकोन को मंगलपुरके पास वृक्ष रहित बीहड़ धरती में जो कोयलेकी खान है, तीस सीढ़ी उतरकर उसके अंदर जाना होताहै, धरती के नीचे सुरंगोंकी तरह आध आध कोस तक हर तरफ़ खान खोदते चले गये हैं, और उन सुरंगों में जगह जगह पर बड़े बड़े मोखे रखे हैं, उन्हीं मोखों की राह से जैसे कुए से पानी खींचते हैं, लोहे की चरखियों से खुदा हुआ कोयला खींच लेते हैं, खान अंदर अंधेरी हैं, पर सीधी ऊंची चौड़ी और साफ़ ऐसी, कि यदि आदमी बिना मशाल भी उस में जावे तो ठोकर और टक्कर न खावे कई सौ आदमी सरकारकी तरफ़से कोयला खोदा करते हैं और सालमें चार पांच लाख मन कोयला वहां से निकल जाता है। खानके अंदर जो सोतों से पानी निकलता है उसके बाहर फेंकनेके लिये धूंएं की कल लगाई है। दस बारह कोस के घेरे में और भी इस तरह की कई खान हैं। जगह देखने लायक़ है—२४—बर्दवान बीरभूम के दक्षिण। शुद्ध नाम इसका बर्द्धमान जैसा नाम तैसा गुण, धरती बड़ी उपजाऊ, बनारस से उतरकर ऐसा आबाद और उपजाऊ तो दुनियां में कोई दूसरा जिला नहीं देख पड़ता। फैलाने से फ़ी मील मुरब्बा छ सौ आदमी की बस्ती पड़ती है। सदर मुक़ाम इसका बर्दवान कलकत्ते से ६० मील वायुकोन की तरफ़ अनुमान ६०००० आदमी की बस्ती

---

२४० बराबर हिस्सों में बंटी हुई लगी रहती है। पारे का स्वभाव है कि गर्मी से फैलता और सर्दी से सिकुड़ जाता है, पस वह पारा जहां जितना फैलकर जितने दर्जे तक उस शीशी के अंदर चढ़े वहां उतनी गर्मी समझनी चाहिये। बिना थर्मामेटर के कदापि कोई यह बात नहीं बतला सकता कि एक जगह से दूसरी जगह किस क़दर कम या ज़ियादा गर्मी है॥

है। मकान वहां के राजा ने बहुत उमदा उमदा बनवाये हैं, पालेस की कोठी और गुलाब बाग़ दोनों देखने लायक़ हैं, उनकी तैयारी में राजा ने अपने हौसिले बमूजिब कोई बात बाक़ी नहीं छोड़ी। वहांवाले कहते हैं कि यह गुलाब बाग़ लंदन के हैडपार्क के नमूने पर बना है, अंगरेज़ी तौर के मकान और बाग़ इस तैयारी और सफ़ाई के साथ इस गिर्दनवाह में और कहीं भी नहीं मिलेंगे।—२५— हुगली बर्द्वान के अग्निकोन को। उस में कोयले की खान है सदर मुक़ाम हुगली भागीरथी के दहने कनारे पर कलकत्ते से २६ मील उत्तर बसा है। मुर्शिदाबाद के नव्वाब के किसी रिश्तेदारने वहां एक इमाम बाड़ा बनवाकर उसके खर्च के वास्ते कुछ ज़मीन माफ़ कर दी थी, लेकिन आमदनी ज़मीन की वहां के मुतवल्ली हज़म कर जाते थे, अब सरकार ने अपनी तरफ़ से ऐसा बंदोबस्त कर दिया है कि उस ज़मीन की आमदनी से इमामबाड़ा भी खूब तैयार रहता है, और एक अस्पताल और दो बड़े विद्यालय भी मुक़र्रर हो गये हैं।—२६— मेदनीपुर हुगली और हवड़ा के नैर्ऋत कोन। आदमी इस जिले के बड़े सुस्त आलस्यी और धनहीन हैं। सदर मुक़ाम मेदनीपुर कलकत्ते से ६९ मील पश्चिम ज़रा नैर्ऋतकोनको झुकता हुआ है।— २७—बलेश्वर जिसे बालासोर भी कहते हैं मेदनीपुर के दक्षिण। नमक इस जिले में लाख रुपये से ज़ियादः का बनता है। लोहे की खान है। सदर मुक़ाम बलेश्वर कलकत्ते से १४० मील दक्षिण नैर्ऋत- कोनको झुकता हुआ बूढ़ी बलङ्ग नदी के दहने कनारे समुद्रसे आठ मील पर बसा है। किसी समय में जब सरकार कम्पनी की तरफ़ से वहां तिजारत का कारखाना जारी था, और फ़रासीस डेनमार्क और डचवाले भी दूकान और कोठियां रखते थे, तो बहुत आबाद

था, पर अब बिलकुल बे रौनक़ है। वहां के आदमी शराब बहुत पीते हैं और जो लोग शराब से परहेज़ रखते हैं वे अफ़यून खाते हैं।—२८— कटक बलेश्वर के दक्षिण। संस्कृत में उसे उत्कल देश कहते हैं। बादशाही वक़्त में वह अपने आस पास के जिलों के साथ बंगाले की हद तक सूबै उड़ेसा लिखा जाताथा। बाग़ यहां अच्छे नहीं लगते कहीं कहीं लोहा और पहाड़ी नदियों का बालू धोने से कुछ सोनाभी मिलता है। समुद्र के कनारे नमक बहुत बनता है। समुद्रके कनारे तो यह जिला दस कोस तक नीचा और जंगल है, और जब समुद्र से हुम्मा आता है तो बिलकुल जल मग्न होजाता है, और फिर दस कोस तक आबाद है, उस से आगे पश्चिम को पहाड़ और बन है। पहाड़ सब से बड़ा दो हज़ार फुट तक समुद्र से ऊंचा है। सदर मुक़ाम कटक नब्बे हज़ार आदमी की बस्ती, कलकत्ते से अढ़ाई सौ मील दक्षिण नैर्ऋतकोन को झुकता हुआ महानदी के किनारे पर बसा है। क़िला बारहभट्टी अथवा बारहबट्टी का शहर से आधकोस पर बना है, गिर्द उस के ८० गज़ चौड़ी खंदक़ है। —२९—खुरदा अथवा पुरी कटक के दक्षिण चिलका झील तक। सदर मुक़ाम पुरुषोत्तमपुरी अथवा जगन्नाथ कलकत्ते से ३०० मील नैर्ऋतकोन दक्षिण को झुकता समुद्र के कनारे बसा है, उस में जगन्नाथ का मंदिर कुछ कम सवा दो सौ गज़ लंबा और इतना ही चौड़ा एक ऊंचा पत्थर की दीवारों का हाता है उसके भीतर ६७ गज़ ऊंचा बना है, इस बड़े मंदिर के सिवाय जिसमें जगन्नाथ बिराजते हैं उस हाते के अन्दर और देवताओं के भी बहुत से मंदिर हैं। जगन्नाथ के रथ के पहिये के नीचे दबकर मरने में हिंदूलोग बड़ा पुण्य समझते हैं, और आगे कितनेही आदमियों ने इसतरह

पर अपनी जान दे डाली है। इस मंदिर को राजा अनंगभीमदेवने बनवाया था, और वह सन् ११७४ में उड़ेसे की गद्दी पर बैठा था। कटक से जगन्नाथ जाते हुए कोई सोलह मील पर खुरदा की तरफ़ झाड़ी में एक ऊंचा सा बुर्ज दिखलाई देता है, वहां से दो तीन कोस भवानेश्वर का उजड़ा हुआ शहर है, वहांवाले बतलाते हैं कि किसी समय में इसके अन्दर सात हज़ार मंदिर और एक करोड़ महादेव के लिङ्ग थे, अब भी बहुतेरे मंदिर टूटे फूटे पड़े हैं, एक उन में से १८० फ़ुट ऊंचा है, और एक लिङ्ग भी महादेव का वहां चालीस फ़ुट से कम नहीं है। भवानेश्वर से पांच मील पश्चिम खंडगिर के पहाड़ में कई जगह पत्थर काटकर गुफ़ा बनाई हैं, एक पर पुराने अक्षर भी खुदे हैं, पुराने मंदिरों के टूटे हुए खंभे इत्यादि और जैन-मत की मूर्तें वहां बहुत पड़ी हैं, राजा ललितेन्द्र केसरी के महलों के निशान हैं, और पहाड़ की चोटी पर एक नया मंदिर पार्श्वनाथ का अब थोड़े दिनों से बना है। कटक से ३५ मील उत्तर ईशानकोन को झुकता वैतरणी नदी के दहने कनारे जहाजपुर में जो सब पुराने मंदिर और मूरतें कि अब तक भी बाक़ी हैं उन से मालूम होता है कि वह किसी समय में बड़ा मशहूर और हिंदुओं का तीर्थ था। जगन्नाथ से १८ मील उत्तर समुद्र के तट पर कनारक गांव के पास एक पुराना टूटा हुआ पर बड़ा अद्भुत सूर्य का मंदिर है, सन् १२४१ में राजा नृसिंहदेव लंगोरे ने बनवाया था और बारह बरस की आमदनी उड़ेसे की उस में ख़र्च हुई थी, यद्यपि शिखर बिलकुल गिर गया है पर फिर भी जितना बाक़ी, है सवा सौ फ़ुट के लग भग ऊंचा होवेगा। कहते हैं किसी समय में उसके ऊपर एक टुकड़ा चुम्बुक का इतना बड़ा लगा था कि लोहे के कील कांटेवाले जहाज़ों

को जो उस तरफ़ से निकलते थे कनारे पर खींच लेता था। जगमोहन अथवा सभामंडप उस मंदिर का साठ फ़ुट लंबा और इतना ही चौड़ा और ऊंचा है, दीवारें बीस बीस फ़ुट तक मोटी हैं, यह मंदिर निरे पत्थरों का बना है, कि जिन को लोहे से आपस में जड़ दिया है, और उसमें स्त्री पुरुष जीव जंतु पक्षी की सूरतें और बेल बूटे बड़ी कारीगरी के साथ बनाये हैं। -३०- बांकुड़ा बर्दवान के पश्चिम। कोयले की खान है। सदर मुक़ाम बांकुड़ा कलकत्ते से सौ मील पश्चिम वायुकोन को झुकता है। वहां सरकार की तरफ़ से मुसाफ़िरों के लिये एक सरा बनाई गई है।-३१-भागलपुर मुर्शिदाबाद के वायुकोन बिंध्य के पहाड़ पूर्व में इसी जिले तक हैं, यहां से फिर दक्षिण को मुड़ जाते हैं। एक क़िस्म की खरी मिट्टी इन पहाड़ों में बहुतायत से होती है; अकसर वहां की औरतें जब गर्भवती होती हैं तो उसे खाती हैं। सदर मुक़ाम भागलपुर पांच हज़ार घर की बस्ती कलकत्ते से २२५ मील उत्तर वायुकोन को झुकता गंगा के दहने कनारे कोस भर के फ़ासले से बसा है। भागलपुर के पूर्व दक्षिण को ज़रा झुकता साठ मील पर गंगा के दहने कनारे तीस हज़ार आदमियों की बस्ती राजमहल है। मकान बादशाही जो गंगा कनारे अच्छे उमदा बने थे अब सब टूट फूट कर खंड़हर होगये। भागलपुर से दो मंज़िल दक्षिण जंगल के बीच आध कोस ऊंचे मंदरगिर पर्वत पर हिन्दुओं का प्राचीन तीर्थ है। पहाड़ और पानी के झरने बरसात में बड़ी कैफ़ियत दिखलाते हैं। वहांवाले कहते हैं कि देवताओं ने इस पहाड़ से समुद्र मथा था।-३२-मुंगेर भागलपुर के पश्चिम सदर मुक़ाम मुंगेर, जिसका असली नाम मुद्गिर बतलाते हैं, कलकत्ते से २५० मील उत्तर वायुकोन को झुकता गंगा के दहने कनारे पर

है। क़िला मज़बूत था, पर अब बेमरम्मत और टूटा फूटा सा पड़ा है। बंदूक़ पिस्तौल छुरी कांटे इत्यादि लोहे की अंगरेज़ी चीज़ें वहां अच्छी और सस्ती बनती हैं। यह शहर सूबै बंगाले की सरहद पर बसा है, इसके पश्चिम सूबै बिहार शुरू होता है। मुंगेर से पांच मील पूर्व सीताकुंड का गर्म सोता है, अठारह फ़ुट मुरब्बा में पक्का ईंटों का एक हौज़ बना है, और उसी में कई जगह पानी के नीचे से बुलबुले उठा करते हैं, जहां बुलबुले उठते हैं वहां पानी अधिक गर्म रहता है, पानी साफ़ है, और उस में थर्मामेटर डुबाने से १३६ दर्जे तक पारा उठता है। उसी गिर्दनवाह में और भी कई एक इस तरह के गर्म सोते हैं।–३३–बिहार मुंगेर के पश्चिम दक्षिण भाग में पहाड़ हैं। अफ़यून इस ज़िले में बहुत होती है, और चावल बासमती अच्छा। वहां ग्वालों के दर्मियान अजब एक रस्म जारी है, दिवाली के दिन एक सूवर के पांव बांध कर मैदान में छोड़ देते हैं, और फिर उसको अपने गाय बैलों के पैर से रुंदवाते हैं, यहां तक कि वह मर जाता है, इसका एक मेला होता है, और फिर उस सूवर को वे लोग खा जाते हैं, इस ज़िले में अबरक बिल्लौर गेरू लोहा संगमूसा और अक़ीक़ की खान है। सदर मुक़ाम गया हिन्दुओं का तीर्थ कलकत्ते से २८९ मील वायुकोन को फल्गु नदी के बांएं कनारे है। हिन्दू निश्चय रखते हैं कि फल्गु कभी दूध की बहती है, कारण ऐसा मालूम होता है कि शायद उसके करारों के टूटने से कभी कभी खरी मिट्टी इतनी पानी के साथ मिल जाती है कि वह दूध सा दिखलाई देता है। यह बात अकसर नदियों में हुआ करती है, जिन के कनारों पर या थाह में खरिया का असर है, हम दूध उसी को कहेंगे जिस से मक्खन निकले। पुराना शहर गया जिस में

गयावाल ब्राह्मण बसते हैं एक पथरीली उचान पर फल्गु नदी और एक पहाड़ी के बीच में बसा है, और साहिब गंज जहां बाज़ार है और ब्योपारी लोग रहते हैं, रामशिला की पहाड़ी के दक्षिण और शहर के उत्तर फल्गु के कनारे मैदान में है, इन दोनों के बीच साहिब लोगों के बंगले हैं। शहर की गलियां तंग और निहायत ग़लीज़ ऊंची नीची बीच बीच में पत्थर के ढोके पड़े हुए, पत्थरों के तपने से और फल्गु का बालू धिकने से गर्मी वहां शिद्दत की होती है। फल्गु के कनारे बिष्णुपादोदका का मंदिर है, मंदिर के बीच में कुण्ड को जिस में चरण का चिह्न है, चांदी से मढ़ा है। पास ही एक मंदिर में पुण्डरीकाक्षजी की मूर्त्ति है, उस मूर्त्ति का पत्थर हाथ की चोट लगने से धातु की सी आवाज़ देता है, हिन्दू उसे करामात समझते हैं, यह नहीं जानते कि चीन में ऐसा भी एक पत्थर होता है कि उसे बजाओ तो बाजे की आवाज़ें निकलें। आदमी वहां सब मिलाकर प्राय एक लाख बसते होंगे। गयावाल ब्राह्मण आगे यात्रियों पर बहुत ज़ियादती करते थे, अब भी अकसरोंसे जो कुछ वे बेचारे अपने घर से लाते हैं ले लिवाकर आगे को उन से तमस्सुक लिखवा लेते हैं। बिहार ३००० आदमियों की बस्ती गया से ४० मील ईशानकोन की तरफ़ है। मुसल्मान बादशाहों के वक्त में इसी शहर के नाम से यह सूबा जो सूबै इलाहाबाद और बंगाले के बीच में पड़ा है पुकारा जाता था। संस्कृत में उसके दक्षिण भाग को मगध और उत्तर भाग को मिथिला लिखा है। किसी ज़माने से इस के आस पास बौध लोगों के बड़े तीर्थ थे। बिहार वे लोग उस जगह को कहते हैं जहां उस मत के भिक्षुकों के रहने के लिये मठ और धर्मशाला बनें, बरन उन्हीं मठ और धर्म-

शाला का नाम बिहार है। अब भी इस ज़िले में हर जगह बौध लोगों के मकान और मंदिरों के निशान मिलते हैं, और हर तरफ़ उनकी मूरतें टूटी फूटी ढेर की ढेर नज़र आती हैं, बरन जैनी और वैष्णवों ने भी वहां अपने मंदिरों में कितनी ही मूरतें बौध मत की उठा कर रख ली हैं। बराबर के पहाड़ों में जो गया से सात कोस है भिक्षुकों के रहने के लिये पत्थर काट काट कर सुन्दर सचिक्कण गुफ़ा बनाई हैं, उन में उस समय के खुदे हुए अक्षर भी मौजूद हैं। निदान ये सब निशान किसी समय में बौध मत के प्रबल होने के देखने लाइक़ हैं। बुध गया में, जो गया से आठ मील होगा, एक पुराने बुध के मंदिर के पीछे पीपल का पेड़ है, ब्राह्मण उसे ब्रह्मा का लगाया और बौध उसे सिंहलद्वीप के राजा दुग्धकामिनी का लगाया कुछ कम तेईस सौ बरस का पुराना और उस स्थान को पृथ्वी का मध्य बतलाते हैं। देखने में तो वह पेड़ कोई १५० बरस का पुराना मालूम होता है, पर यह अलबत्ता हो सकता है कि उसी स्थान पहले कोई दूसरा पीपल रहा हो। बिहार से सोलह मील दक्षिण पहाड़ों की जड़ में राजग्रह की छोटी सी बस्ती है, जिसे जरा-सिन्ध की राजधानी बतलाते हैं, और पहाड़ों के अंदर उसके मकान और उस मैदान का जहां वह भीम के हाथ से मारा गया था निशान देते हैं। मकानों के निशान और क़िले अथवा शहरपनाह की टूटी हुई पुरानी दीवार और बुर्जों को देखने से जो पहाड़ों के ऊपर दस मील के घेरे में नमूदार हैं मालूम होता है कि राजग्रह किसी समय में निस्सन्देह बहुत बड़ा शहर बस्ता था। यह जगह जैनी और वैष्णव दोनों का तीर्थ है। जैनियों के तो पांचों पर्वतों पर पांच मंदिर बने हैं, और वैष्णव गर्म और सर्द कुण्डों में जिनकी वहां

इफरात है नहाते और अपने मत के देवलों में दर्शन करते हैं। गर्म कुंड के पास ही एक गुफा, जैसी बराबर के पहाड़ में है, पत्थर काट कर भिक्षुकों के रहने के लिये बनी है। वहां के अकसर बेवकूफ उसे सोन भंडार बतला कर कहते हैं कि उसमें जरासिंध की दौलत गड़ी है। राजग्रह से पंदरह मील कुण्डलपुर रुक्मिनी का जन्मस्थान एक गांव सा बस्ता है, बुध की मूरतें और पुरानी इमारतों के निशान वहां भी बहुतायत से हैं।–३४—पटना अथवा अज़ीमाबाद बिहार से पश्चिम वायुकोन को झुकता हुआ। सदर मुक़ाम पटना कलकत्ते से ३२० मील बायुकोन गंगा के दहने कनारे पर बसा है, और कनारेही कनारे कोई नौ मील तक चला गया, पर बस्ती बहुत दूर दूर है, अगली सी आबादी अब नहीं रही, फिर भी लाख से ऊपर आदमी है। बाज़ार तो चौड़ा है, पर गलियां तंग मेह में कीचड़ खुश्की में गर्द। बहुत दिन हुए कि सरकार ने वहां एक गोदाम चावल रखने के लिये जिसे वहांवाले गोलघर कहते हैं गुम्बज़ अथवा औंधी हुई हांड़ी की सूरत का बनाया था, अब उस में सिपाहियों का असबाब रहता है, आवाज़ उसके अंदर खूब गूंजती है, चढ़ने को बाहर से दुतरफ़ा सीढ़ियां लगी हैं। एक मूर्त्ति को वहां के ब्राह्मण पटनेश्वरी देवी कह कर पूजते हैं, लेकिन वह मूर्त्ति असल में बुध की है। हरिमन्दिर सिखों का तीर्थ है, कहते हैं कि उनका नामी गुरु गोबिन्दसिंह इसी जगह पैदा हुआ था। शाह अर्ज़ानी का मुक़बरा मुसल्मानों का ज़ियारतगाह है। यह शहर बौध मती गुप्त राजाओं के समय में बड़ी रौनक़ पर था, मगध देश बरन सारे हिंदुस्तान की राजधानी और पाटलीपुत्र पद्मावती और कुसुमपुर के नाम से पुकारा जाता था। उस समय के यूनानियों ने उसे दस मील लम्बा और

६४ दरवाज़ों का शहर लिखा है। शास्त्र में पाटलीपुत्र को शोण के संगम पर कहा है, इस से ऐसा मालूम होता है कि शोण आगे पटने के समीप गंगा से मिलती थी, अब १६ मील हट गई है। पटने से १० मील पश्चिम गंगा के दहने कनारे दानापुरकी बहुत बड़ी छावनी है। दानापुर से इतनी ही दूर पर जहां शोण गंगा से मिली है मोनिया अथवा मनेरमें एक मक़बरा पत्थरका मख़दूमशाह दौलत का बहुत अच्छा बना है। पटने से तीस मील पूर्व गंगा के दहने कनारे बाढ़ छोटा सा क़सबा है, चंबेली का फूलेल वहां बहुतउमदा बनता है।–३५–तिरहुत अथवा त्रिहुत जिसे बाज़े आदमी त्रिभुक्ति भी कहते हैं भागलपुर और मुंगेर से वायुकोन को। उत्तरमें तराई का जंगल है। गंडक और कोसी नदी के बीच जो देश है उसे संस्कृत में मिथिला और वैदेह कहते हैं, उसी का यह मानो मध्य भाग है। आब हवा वहां की अंगरेजों को तो मुवाफ़िक़ है, पर हिन्दुस्तानियों के लिये ख़राब। शोरा बहुत होताहै। सदर मुक़ाम मुज़फ्फ़रपुर आठ हजार आदमियों की बस्ती कलकत्ते से ३४० मील बायुकोन उत्तर झुकता हुआ है।––३६––शाहाबाद पटने से पश्चिम शोण से लेकर कर्म्मनाशा नदी तक, जो सूबै बिहार की हद है। नैर्ऋत कोन की तरफ़ उजाड़ है, बाक़ी सब आबाद और उपजाऊ। फिटकरी की खान है, कभी कभी हीरा भी मिल जाता है। इस का सदर मुक़ाम आरा कलकत्ते से ३५० मील वायुकोन को है। आरे से दो मंजिल पूर्व गंगा के दहने कनारे बकसरका क़िला और शहर है। सन् १७६४ में नव्वाब वज़ीर शुजाउद्दौला ने सरकारी फ़ौज से इसी जगह शिकस्त खाई थी। बकसर से चौंतीस मील दक्षिण सहसराम में एक पक्के तालाब के बीच, जो मील भर के घेरे में होगा,

शेरशाह बादशाह का मक़बरा संगीन बना है। आरे से अनुमान ७५ मील दक्षिण पश्चिम को झुकता प्राय १००० फुट ऊंचे पहाड़ पर दस मील मुरब्बा के बिस्तारमें शोण नदी के बांएं कनारे एक बड़ा मज़बूत क़िला रुहतासगढ़, जिसका शुद्ध नाम रोहिताश्म बतलाते हैं, उजाड़ पड़ा है। उस पर जाने के लिये दो कोस की चढ़ाई का कुल एक तंग सा रस्ता है, बाक़ी सब तरफ़ वह पहाड़ जंगल और नदियों से ऐसा घिरा है, कि किसी प्रकार भी आदमी का गुज़र नहीं हो सकता। दो मंदिर उस में प्राचीन हैं, बाक़ी सब इमारतें महल बाग़ तालाब इत्यादि जिनके अब केवल निशान भर बाक़ी रह गये हैं मुसल्मान बादशाहों के बनवाये मालूम होते हैं।–३७–सारन, जिसका शुद्धोच्चारण शरण है, शाहाबाद के उत्तर, बहुत आबाद और उपजाऊ। शोरा वहां बहुत पैदा होता है, गाय बैल भी अच्छे होते हैं। सदर मुक़ाम छपरा ५०००० आदमियों की बस्ती कलकत्ते से ३६० मील पर वायुकोन को गंगा के बांएं कनारे है। वहां से दो मंजिल पूर्व गंडक के बांएं कनारे, जहां गंगा के साथ उसका संगम हुआ है, हाजीपुर में हर साल कार्तिक की पूर्णमा को एक बहुत बड़ा मेला हुआ करता है।–३८–चम्पारन सारन के उत्तर। सदर मुक़ाम मोतीहांड़ी कलकत्ते से ३७५ मील वायुकोन को है वहां से थोड़ी सी दूर उत्तर सुगौली की छावनी है।–३९–आशाम सिलहट के उत्तर ब्रह्मपुत्र के दोनों तरफ़ हिमालय में चीन की सरहद तक चला गया है। आशाम आईनी ज़िलों में नहीं गिना जाता, कमाऊं गढ़वाल और सागर नर्मदा की तरह इस इलाक़े के लिये भी एक जुदा कमिश्नर और अजंट मुक़र्रर है, और उसके नीचे छ बड़े असिस्टेंट छ जगहों में कचहरियां करते हैं।

पहिला सदर मुक़ाम गोहाट में । दूसरा गोहाट से ७५ मील पूर्व ईशानकोन को झुकता नौवांग में। तीसरा गोहाट से ६५ मील ईशानकोन ब्रह्मपुत्र के दहने कनारे तेजपुर में । चौथा गोहाट से ८० मील पश्चिम ब्रह्मपुत्र के बाएं कनारे ग्वालपाड़े में । पांचवां गोहाट से १९० मील ईशानकोन लखमपुर में। और छठा गोहाट से १८० मील ईशानकोन पूर्व को झुकता शिवपुर अथवा शिवसागर में । गोहाट से ६५ मील दक्षिण खसियों के पहाड़ में जिसे अंगरेज़ कोसिया कहते हैं समुद्र से ४५ फुट ऊंची चेरापूंजी साहिब लोगों के हवा खाने की जगह है । रहने के लिये बंगले बन गये हैं । मेह वहां बहुत बरसता है । साल भर में ३०० इंच तक नापा गया है (१) अजंटी के तहत में बीस राजा और सरदार गिने जाते हैं, पर केवल गिनती मात्र को हैं, राजा के बदल उनको बनरखा कहना चाहिये, केवल बन और झाड़ी उनकी मिलकियत है, और यही जंगली आदमी जिनका वर्णन आगे होता है, उन की रैयत हैं । सरकार के सब ताबे और फ़रमाबर्दार हैं । जितनी नदियां इस ज़िले में बहती हैं, शायद और कहीं भी इतने बिस्तार में न बहती होंगी ।

---

(१) मेह का हर जगह अंदाज़ा समझने के लिये यह तर्कीब बहुत अच्छी है, अर्थात् जिस स्थान के मेह का प्रमाण जानना दरकार हो इस बात को समझ लेना चाहिये कि जो वहां धरती बराबर होती और मेह का पानी जितनी धरती पर पड़ता उतनी ही धरती पर इकट्ठा होने पाता, तो वह नापने में कितना गहरा होता, जैसे चेरापूंजी की सारी धरती थाली की तरह बराबर होती और साल भर के मेह का पानी बिना सूखने और बहने के उस पर इकट्ठा होने पाता, तो ३०० इंच गहरा होता । सरकार ने मेह का पानी नापने के लिये लोहे के यंत्र बनवा तहसीलों में रखवा दिये हैं । जब मेह बरसता है तो उसका प्रमाण नितका नित किताब में लिखलिया जाता है ॥

इकसठ नदियां इस तरह की हैं, कि जिन में प्राय बारहों महीने नाव चलती है । बरसात के दिनों में जल चहुँदिश फैल जाताहै । अगले समय में वहां के राजाओं ने पानीके बीच रस्ता जारी रखने को बंध के तौर पर ज़मीन से तीन चार गज़ ऊंची सड़कें बनाई थीं, इस से ऐसा अनुभव होता है कि उन दिनों में वह देश अच्छा बस्ता था, और आश्चर्य्य नहीं जो उसी राह से चीनवाले यहां और यहांवाले चीन को आते जाते हों, परंतु अब उन सड़कों पर जंगल जम गयाहै, और शेर भालू चलते हैं । लोहे और कोयले की खान है । नदियों का बालू धोने से सोना भी मिलता है। मटिया तेल कई जगह से निकलता है । उत्तर में जिस जगह ब्रह्मपुत्र दरया हिमालय को काटकर आशाम में आता है, उसका नाम प्रभु कुठार है, क्योंकि ब्राह्मणों के मत बमूजिब उसे परशुराम ने अपने कुठार से काटाथा । जंगल पहाड़ बहुत हैं, विशेष करके पूर्व और उत्तर में, और उनके बीच बहुतेरी जात के जंगली मनुष्य अर्थात् आबर डफला गारुड़ विजनी खामती मिस्मी महामरी मीरी सिंहफो नागे इत्यादि बसते हैं । धर्म का इन के कुछ ठिकाना नहीं सब चीज़ खाते हैं । तीरों को ज़हर में बुझाते हैं । ग़लीज़ ऐसे कि आबदस्त तक नहीं लेते । चौपायों के खोपड़े काले करके शोभा के निमित्त बंदनवार की तरह अपने घरों में लटकाते हैं । कोई उन में बौध भी है । अकसर पेड़ों की छाल का लंगोट और सींक का टोप पहनते हैं, कोई कम्बल भी ओढ़ लेता है । कहते हैं कि इन में गारुड़लोग जो ब्रह्मपुत्र के दक्षिण और सिलहट और मैमनसिंह के उत्तर बसते हैं सांप को भी खाजाते हैं, और कुत्ते के पिल्ले तो उन की बड़ी मिठाई है । पहले उसे पेट भरकर चांवल खिलाते हैं और

फिर उसे जीता आग पर भूनकर भक्षण कर जाते हैं। और जब आपस में तकरार होती हैं तो दोनों आदमी अपने अपने घरमें चटाकर का दरख़्त लगाते हैं, और इस बात की सपथ करते हैं, कि क़ाबू मिलते ही अपने दुश्मन का सिर उस पेड़के खट्टे फल के साथ खा जावें, और जब अपने दुश्मन का सिर काटलाते हैं, तो क़सम बमूजिब उसे चटाकर के साथ उबाल कर शोरबे की तरह खाजाते हैं, बरन अपने मित्र बांधवों को भी निमंत्रण करते हैं, और फिर उस पेड़ को काट डालते हैं, और जब लड़ाई झगड़े में किसी बंगाली जमींदार का सिर काटलाते हैं, तो उसके गिर्द पहले तो सब मिलकर नाचते गाते हैं, और फिर उसकी खोपरी साफ़ करके घरमें लटकाते हैं बरन अशरफ़ी और बंकनोट की बराबर वहां ये बंगालियों की खोपरियां चलती हैं। सन् १८१५ में कालूमालूपांड़े के ज़मींदार की खोपरी हज़ार रुपये और इंद्र तअल्लुक़ेदार की खोपरी पांचसौ रुपयेपर चलती थी। वे लोग अपने मुर्दोंको जलाकर बिलकुल राख कर डालते हैं, कि जिस में कोई मनुष्य खोटे रुपये की तरह किसी गारुड़ की खोपरी बंगाली के एवज़ में देकर उन्हें ठग न लेवे। बिवाह वहां मर्द औरत की रज़ामंदी से होता है, और जो उन में से किसी का बाप उस बिवाह से नाराज़ हो तो सब लोग मिलकर उसे इतना पीटते हैं कि जिस में वह राज़ी होजावे। स्वामी मरने से वहां की स्त्री देवर जेठ को ब्याहती हैं, और सारे भाई मर जावें तो श्वशुर से बिवाह करती हैं। मालिक वहां छोटी लड़की होती है। मुर्दे को चार दिन बाद जलाते हैं। जो छोटा सर्दार मरे तो उसके साथ एक गुलाम का सिर काटकर जलाते हैं, और जो कोई बड़े दर्जे वाला मरे तो उसके सब गुलाम मिल कर एक हिंदू को प-

कड़ लाते हैं, उसका सिर काटकर उसके साथ जलाते हैं। आदमी वे लोग मज़बूत और मिहनती, नाकहबशियों की तरह फैली हुई, आखें छोटी, माथे पर झुर्रियां, भवें लटकी हुई, मुह बड़ा, होंठ मोटे चिहरा गोल, और रंग उनका गेहुंआं होता है। औरतें नाटी, मंदरी, और मर्दों से भी जियादः मज़बूत होती हैं। और कानों में उनके बीस बीस तीस तीस पीतल के इतने बड़े बड़े बाले पड़े रहते हैं, कि छाती तक लटकते हैं। आशाम के अमीर भी घास फूस के बंगले अथवा छपरों में रहते हैं। आशाम का पश्चिम भाग अब तक भी कामरूप के नाम से पुकारा जाता है, पर शास्त्र में जो सीमा कामरूप देश की लिखी है, उस बमूजिब रंगपुर मैमनसिंह सिलहट जयंता कचार मनीपुर और आशाम ये सब कामरूपही ठहरते हैं। संस्कृत में कामरूप को प्रागज्योतिष भी कहते हैं। पुरानी पोथियों में इस देश के बड़े बड़े अद्भुत कहानी क़िस्से लिखे हैं नादान आदमी अबतक भी उसे जादू का घर समझते हैं तांत्रिक मत इसी जगह से फैला है। २६ दर्जे ३६ कला उत्तर अक्षांश और ९२ दर्जे ५६ कला पूर्व देशांतर में कामाक्षादेवी का प्रसिद्ध मंदिर है। वहां के आदमियों की सूरत चीनियों से मिलती है। सदर मुक़ाम गोहाट कलकत्ते से ३२५ मील ईशानकोन, जो किसी समय में कामरूप की राजधानी था, और अब जहां साहिब कमिश्नर रहते हैं, ब्रह्मपुत्र के बाएं कनारे पर एक गांव सा बस्ता है। —४०—नैर्ऋतकोन की सीमा और संभलपूर की अजंटी और छोटे नागपुर की कमिश्नरी बांकुड़ा के पश्चिम। यह एक बहुत बड़ा इलाक़ा है। साहिब कमिश्नर के नीचे कई असिस्टेंट रहते हैं, वही उसमें जगह जगह पर आईनी जिले के मजिस्ट्रेट कलक्टरों की तरह कचहरियां करते हैं, अपील उन सब का साहिब

कमिश्नर के पास आता है, वे कलकत्ते से २०९ मील पश्चिम वायुकोन को झुकता बिल्किंसनपुर अथवा छोटेनागपुर में रहते हैं। छावनी डोरंडा में कोस भर दक्षिण है। हद इस इलाक़े की उत्तर को बीरभूम बिहार और मिरज़ापुर के जिलों से मिलती है, और दक्षिणको गंजाम तक जो मंदराज हाते का ज़िला है चली गई। पूर्व उस के बाजगुज़ार महाल मेदनीपुर और बर्दवान है, और पश्चिम बघेलखंड का राज सागर—नर्मदा और नागपुर का इलाक़ा। इस इलाक़े में आबादी कम है और उजाड़ और झाड़ी बहुत, जमीन बीहड़ और पथरीली, पर अकसर जगह तर और उपजाऊ, आब हवाख़राब, सीसा सुरमा लोहा अबरक कोयला जबरजद और हीरे की खान है। नदी का बालू धोने से कुछ सोना भी मिल रहता है। पहाड़ों में गोंद चुआड़ कोल धांगड़ इत्यादि कई जाति के जंगली मनुष्य ऐसे बसते हैं कि न उन के धर्म का कुछ ठिकाना है और न खाने पीने का आदमीयत की बूबास बिलकुल नहीं रखते, और लूटमार बहुत पसंद करते हैं। बहुतेरे उन में से, विशेष करके जो लोग सिरगूजा के पहाड़ों में रहते हैं, बनमानसों की तरह नंगे फिरते हैं, और केवल बन के फल फूल तेंदू महुआ इत्यादि और कंद मूल खाकर गुज़ारा करते हैं, बरन वहांवाले तो उनकी असभ्यता का वर्णन यहां तक करते हैं कि जब उनके रिश्तेदार लोग इतने बूढ़े अथवा रोग से शक्तिहीन होजाते हैं कि चल फिर नहीं सकते तो उन्हें वे लोग काट काट कर खा जाते हैं। इस में जो मुल्क सरकारी बंदोबस्त में कमिश्नरी से संबंध रखता है, उसे छोटा नागपुर मानभूम और हज़ारीबाग़ तीन हिस्सों में बांट कर तीन असिस्टेंटों के ताबे कर दिया है पहले का सदर मुक़ाम लोहार डग्गा

छोटे नागपुर से ४५ मील पश्चिम, दूसरे का पुरुलिया छोटे नागपुर से ७० मील पूर्व, तीसरे का हज़ारीबाग़ छोटे नागपुर से ५० मील उत्तर, वहां सरकारी फ़ौज की छावनी है। हज़ारीबाग़ के पास कई सोते गर्मपानी के ऐसे हैं जिन में गंधक का असर है, और उनके अंदर थर्मामेटर डुबाने से १९० दर्जे तक पारा चढ़ता है। हज़ारीबाग़ से अनुमान दो मंज़िल पूर्व समेत शिखर के पहाड़ पर जैनियों का एक बड़ा तीर्थ और मंदिर है। अजंटी के आधीन नाम को तो ५८ राजा हैं, पर इख्तियार उनको बहुत थोड़े, रुपया मालगुज़ारी का सरकारी खज़ाने में दाखिल करते हैं।-४१-बाजगुज़ार मुहाल नैर्ऋतकोन की सीमा और संभलपुर की अजंटी के पूर्व, और कटक और बलेश्वर के पश्चिम, जंगल झाड़ी बहुत, आब हवा निहायत खराब, कोयला लोहा पेवड़ी खरिया और अबरक की खान है। नदी के बालू में से सोना भी हाथ लगता है, पर बहुत थोड़ा। आदमी असभ्य और प्राय जंगली, राजा इन मुहालों में केवल नाम मात्र हैं, इख्तियार सब साहिब सुपरिंटेंडेंट का है। खंड लोग वहां अब तक अपने देवता के आगे आदमी का बल देते हैं, बरन उनका यह निश्चय है; कि जब तक आदमी को बल चढ़ाकर उसका मांस खेत में गाड़ें, तब तक ग़ल्ला अच्छा पैदा न होगा। मकफ़र्सन साहिब अपने रिपोर्ट में लिखते हैं कि ये लोग अपनी क़ौमका आदमी नहीं काटते आस पास के इलाक़ों से लड़के ले आते हैं, बलदान के समय पहले उनके हाथ पैर की हड्डियां तोड़ डालते हैं, फिर खेतों में गाड़ने के लिये उनके बदन से मांस के टुकड़े काटते हैं। सरकार ने इस बुरे काम को बंद करने के लिये बहुतेरी तदबीरें की हैं। पर वे कमबख्त चोरी छिप्पे आदमियों को काटही डालते हैं।-४२-

नागपुर, नैर्ऋतकोन की सीमा और संभलपुर की अजंटी के पश्चिम। यह बड़ा इलाक़ा नैर्ऋतकोन की तरफ़ हैदराबाद की अमल्दारी से जा मिला है। इस इलाक़े में कुछ हिस्सा सूबे गोंदवाने का आ गया है, बाक़ी सूबे बराड़ है। अकबर के वज़ीर अबुलफ़ज़ल ने नागपुर के राजा को बराड़ का राजा लिखा, कि जिस सबब से अब तक भी उसका वह नाम चला जाता है, पर हक़ीक़त में नागपुर गोंदवाने में है, बराड़ की राजधानी इलचपुर था जो अब हैदराबादवाले के क़ब्ज़े में है। उस समय वे लोग इन इलाक़ों से बहुत कम वाक़िफ़ थे, और ये इलाक़े बादशाहों के क़ब्जे में अच्छी तरह नहीं आए थे। अब भी नागपुर के इलाक़े में, विशेष करके पूर्व भाग के दर्मियान, जैसे जैसे जंगल उजाड़ और झाड़ पहाड़ पड़े हैं हम जानते हैं किसी दूसरे इलाक़े में न होंगे, और उन में विशेष करके बसतर की तरफ़ जो अग्निकोन को है, आदमी भी जिन्हें गोंद कहते हैं प्रकृति में बन मानसों से कम नहीं होते। स्त्रियें तो उनकी दो चार पत्ते कमर में लटकाए रहती हैं, पर मर्द नंगे मादर्ज़ाद जंगलों में फिरा करते हैं, घर बार बिलकुल नहीं रखते नाक उनकी चिपटी फैली हुई होंठ मोटे बाल अकसर घूंघरवाले, केवल बन के कंदमूल और फल फूल अथवा शिकार से गुज़ारा करते हैं। गोमांस तक खाते हैं। अपनी देवी के साम्हने आदमी का बल चढ़ाते हैं। उनमें से जो लोग बस्तियों के पास बसगए हैं वे खेती बारी और नौकरी चाकरी भी करते हैं, और अब आदमी बनते चले हैं। ज़मीन वहां की बलंद बीहड़ और अकसर पथरीली है, पहाड़ी नाले खोले और घाटे हर मुक़ाम पर हैं। आब हवा जंगलों की ख़राब, पानी उसमें कहीं कहीं बहुत कम मिलता है। लोहा

इस इलाके में कई जगह से निकलता है, और गेरूकी भी खान है। किसी जमाने में बैरागढ़ की खान से हीरा निकलता था, पर अब बंद हो गया। कहीं कहीं नदियों का बालू धोने से कुछ सोना भी निकल आया करताहै, लेकिन निहायत कम। निदान इस बेआईनी इलाके में भी आशाम और छोटे नागपुर की तरह एक कमिश्नर रहताहै, और उसके तहत में पांच डिपुटी कमिश्नर आईनी ज़िले के कलक्टर की तरह पांच ज़िलों में काम करते हैं। पहला कलकत्ते से ६७७ मील पश्चिम २१ अंश ९ कला उत्तर अक्षांस और ७९ अंश ११ कला पूर्व देशांतर में समुद्र से १००० फ़ुट बलंद सदर मुक़ाम नागपुर में रहता है। गर्मी की शिद्दत वहां बहुत नहीं होती। आदमी शहर में १४०००० बसते हैं, लेकिन गली कूंचे तंग और निहायत ग़लीज़, बरसात में कीचड़ बड़ी हो जाती है, मकान देखने लाइक़ कोई नहीं, जिधर देखो झोंपड़ेही झोंपड़े दिखाई देते हैं। शहर के गिर्दनवाह में दरख़्त बिलकुल नहीं, पटपर मैदान पड़ा है। दक्षिण तरफ़ एक छोटा सा नाला नाग नदी नाम बहता है, इसी से शायद इस शहर का नाम नागपुर रहा। छावनी पासही सीताबलदी की पहाड़ी पर है। दूसरा नागपुर से १५० मील पूर्व रायपुर में रहता है। वहां से १०० मील उत्तर सतपुड़ा पहाड़ के ऊपर जहां से सोन और नर्मदा निकली हैं एक बड़े भारी जंगल में अमरकंटक महादेव का मंदिर हिंदू का तीर्थ है। तीसरा नागपुर से ४० मील पूर्व्व बान गंगा के दहने कनारे भंडारे में रहता है। चौथा नागपुर से ८० मील उत्तर छिंदवारे में रहता है। और पांचवां नागपुर से १०५ मील दक्षिण अग्निकोन को ज़रा झुकता बरदा नदी के बांएं कनारे से ५ मील के तफ़ावत पर चांदा में रहता है।

पंजाब की लेफ्टिनेंट गवर्नरी

अब उन जिलों का बयान किया जाता है जो पंजाब के लेफ्टिनेंट गवर्नर के तहत में हैं।—१—दिल्ली बलंदशहर के वायुकोन। बादशाही जमाने में इस नाम का एक सूबा गिना जाता था, कि जिसकी हद सूबे लाहौर से मिलती थी। शहर दिल्लीका, जिसे बहुधा शाहजहानाबाद कहते हैं, लाहौर से २५० मील अग्निकोन को जमना के दहने कनारे बसा है। युधिष्ठिर महाराज ने इस जगह इंद्रप्रस्थ बसाया था, और तब से वह स्थान बराबर हिंदुस्तान की राजधानी रहा। जिसने इस देश पर चढ़ाव किया पहले उसी के तोड़ने पर मन दिया, जो बादशाह वहां आया उसने पुराने शहर को तोड़ कर नया अपने नाम से आबाद किया। अब जो शहर मौजूद है अकबर के पोते शाहजहां बादशाह का बसाया है, और इसी लिये उसके नाम से पुकारा जाता है। चारों तरफ़ संगीन ६३६४ गज़ शाहजहानी शहरपनाह है, तेरह दर्वाज़े, सोलह खिड़कियां, तीन उन में बंद, बाजार क़िले से दिल्ली दर्वाज़े तक तीस गज चौड़ा, और लाहौरी दर्वाज़े तक चालीस गज़ चौड़ा होवेगा। नहर जमना की गली गली घूमी है। क़िला लाल पत्थर का ऐन जमना के कनारे बहुत सुंदर बना है। करोड़ रुपया उसकी तैयारीमें ख़र्चहुआ बतलाते हैं। और उसके अंदर दीवानआम दीवानख़ास इत्यादि कई मकान संगमर्मर के बहुत उमदा बने हैं। यह वही मकानहै जिस में किसी समय तख़्त ताऊस रखा जाताथा, टवर्नियर साहिब अपनी किताबमें लिखते हैं, कि शाहजहां ने हुक्म दिया था, इस दीवानख़ास के तमाम दर दीवारों पर अंगूर के गुच्छे बनाए जावें, इस ढब से, कि कच्चे अंगूर की जगह पन्ना और पक्के की जगह एक एक लाल संगमर्मर में जड़ देवें, बरन

एक ताक़ इस तरह का बनकर तैयार भी हो गया था, परंतु फिर औरंगजेब का इख़्तियार हो जाने से वह काम जाता रहा। अब यह मकान बेमरम्मत है, जिन हौज़ों में गुलाब और बेदमुश्क भरा जाता था, उन में अब काई जम गई है, और जहां मख़मल और कमख़ाब के फ़र्श पर मोतियों की झालर के शमियाने खड़े होते थे, वहां अब कोई झाड़ू भी नहीं देता, बरन सैकड़ों मन कबूतर और अबाबीलों की बीटें पड़ी हैं। कहते हैं कि औरंगजेब के वक़्त में यहां बीस लाख आदमी बसते थे। नादिरशाह ने सन् १७३९ में क़तलआम किया, और फिर मरहठों ने तो इसे ऐसा तबाह कर डाला, कि सन् १८०३ में जब लार्डलेक ने उन लोगों से छीना तो बिलकुल उजाड़ पाया, जो वहां आया सो लूटने ही को आया था, केवल एक यह लेक साहिब उसे लूटमार से बचाने के लिये पहुंचे। सन् १८५४ में १५२००० आदमी उस में गिने गये थे, और हिंदुस्तान के पहले दर्जे के शहरों में गिना जाता है। जामेमस्जिद, जिस में दस लाख रुपया लगा है, इस शहर की सी हिंदुस्तान में तो क्या शायद सारे जहान में इस शान की न निकलेगी। तूल उसका २६१ फ़ुट, कुरसी ३५ ज़ीनों की, मीनार १३० फ़ुट बलंद, इन मीनारों पर चढ़ने से सारा शहर थाली की तरह दिखलाई देता है। हरसुखराय काग़ज़ी का बनाया हुआ जैन मंदिर भी देखने लाइक़ है, संगमर्मर और पच्चीकारी का काम किया है। शहर के बाहर दस दस कोस तक हर तरफ़ खंडहर और मक़बरे पड़े हैं, खंडहर कैसे कि जब तैयार हुए होंगे लाखों बरन बहुतों में करोड़ों रुपये लगे होंगे, क़बरें किनकी कि जिन की अर्दली में लाखों सवार दौड़ते होंगे, जो रत्नजड़ित चिलमचियों में पिशाब करते थे अब उन की क़बरों पर कुत्ते मूतते हैं, जो सारे

हिन्दुस्तान में न समाते थे सो अब डेढ़ गज़ ज़मीन में सोए हैं, जिन-पर मक्खी नहीं बैठने पाती थी उन्हें अब दीमक चाटते हैं। निदान कोड़ियों बादशाह इस शहर के आस पास मिट्टी में दबे पड़े हैं॥

दोहा

इत तुग़लक़ इत इलतमिश इतहि मुहम्मदशाह।
इतहि सिकन्दर सारखे बहुतेरे नर नाह॥ १॥
जो न समाए बाहु बल अटक कटक के बीच।
तीन हाथ धरती तले मीच कियो अब नीच॥ २॥

शहर से अढ़ाई कोस बाहर अकबर के बाप हुमायूं का मक़बरा, जिसकी तैयारी में पन्द्रह लाख रूपया लगा था, और निज़ामुद्दीन औलिया की दर्गाह, अब भी देखने लाइक़ है। शहर से सात कोस पर नैर्ऋतकोन को कुतब साहिब की दर्गाह है, वहां झाल का बंध बांधकर उस पर से चादर झरने नहर और फ़व्वारे निकाले हैं, बरसात में सैर की सुहावनी जगह है, फूलवालों का मेला मशहूर है, वहां शहाबुद्दीनग़ोरी ने महाराज पृथीराज का मंदिर तोड़कर उस के मसाले से कुव्वतुल्इसलाम नाम एक मस्जिद बनानी चाही थी, उमर उसकी पूरी हो गई और मस्जिद अधूड़ी ही रही॥

दोहा

जो आए नूतन रचे घर गढ़ नगर समाज।
पूरे काहू ने नहीं किये जगत के काज॥ १॥

मंदिर की भी कुछ दीवारें जो टूटने से बचीं अब तक उस में खड़ी हैं, पर मूरतों के आकार बिलकुल खंडित कर दिए। यदि यह मस्जिद तैयार होजाती, शायद इतनी बड़ी दुनिया भर में दूसरी न निकलती, और उसके बीच एक कीली अष्टधात की, जिस पर कुछ

पुराने हिन्दी हर्फ़ खुदे हुए हैं सवा पांच फुट मोटी और बाईस फुट ऊंची गड़ी है, मिहराबों पर मस्जिद के, जो साठ फुट ऊंची होवेंगी, इस खूबी और सफ़ाई के साथ संगतराशी की है, कि शायद मुहर खोदने में भी कोई न करे, और एक मीनार उस मस्जिद का, जो फिर पीछे से शमशुद्दीन इलतमिश ने बनवाया था, २४२ फुट ऊंचा, जिस में चढ़ने के लिये ३७८ सीढ़ियां लगी हैं, अब तक खड़ा है। यह मीनार जिसका तीन दर्जा तो लाल पत्थर और चौथा संगमर्मर का बनाया है, और हर दर्जों पर कुरान की आयत बहुत खूबसूरती से खोदी हैं, निहायत खूबसूरत बना है। इतना ऊंचा और साथ ही ऐसा खूबसूरत शायद दूसरा मीनार दुनियां में न निकलेगा। शहर के पास एक मुक़ाम पर जिसे लोग जंतर मंतर कहते हैं, ग्रह नक्ष-त्रादिकों के देखने के लिये राजा जयसिंह के बनवाये कुछ यंत्र अब तक मौजूद हैं। शहर से बाहर पास ही एक खंड़हरे में, जिसे लोग फ़ीरोजशाह का कोटला कहते हैं, ४८ फुट ऊंची एक ही पत्थर की एक लाट खड़ी है, और उस पर भी वही हर्फ़ और वही बातें खुदी हैं, जो इलाहाबाद की लाट पर हैं। -२-गुड़गांवां दिल्ली के नैर्ऋतकोन को। सदर मुक़ाम गुड़गांवां लाहौर से २६० मील अ-ग्निकोन को है। —३—झझर गुड़गांवें के उत्तर। सदर मुक़ाम झझर लाहौर से २४० मील अग्निकोन को जरा दक्षिण की तरफ़ झुकता हुआ है। —४—रोहतक गुड़गांवें के उत्तर। सदर मुक़ाम रोहतक लाहौर से २२५ मील अग्निकोन दक्षिण को झुकता हुआ, शहर पुराना और टूटा फूटा है। —५—हिसार अथवा हरियाना रोहतक से पश्चिम वायुकोन को झुकता। गाय भैंस उस जिले में अच्छी होती हैं, दूध बहुत देती हैं। एक साहिब ने वहां एक बैल

सवा चार हाथ ऊंचा नापा था, और वह दस मन पानी की पखाल उठाता था। बस्ती बहुधा जाट गूजरों की, पानी कम, सत्तर अस्सी हाथ गहरे कूए खोदने पड़ते हैं। सदर मुक़ाम इसका हिसार लाहौर से २०० मील दक्षिण अग्निकोन को झुकता हुआ है, किसी वक्त में वह बहुत बड़ा शहर था, अब उस में दस हज़ार आदमी भी नहीं बसते। फ़ीरोज़शाह के महल के खंड़हरे जिस जगह खड़े हैं, वह उस समय शहर का मध्य गिना जाता था। उसी के पास लोहे की एक कीली भी गड़ी है।—६—सिरसा हिसार के वायुकोन। सदर मुक़ाम सिरसा लाहौर से १५० मील दक्षिण है।—७—पानीपत रोहतक के वायुकोन। सदर मुक़ाम पानीपत लाहौर से २२५ मील अग्निकोन को बसा है। वहां बूअलीक़लंदर की दर्गाह है, जिस में कसौटी के खंभे लगे हैं। इस जगह में दो लड़ाइयां बहुत बड़ी बड़ी हुई हैं, पहली सन् १५२५ में अकबर के दादा बाबर और इबराहीम लोदी के बीच, और दूसरी सन् १७६१ में अहमदशाह दुर्रानी और सदाशिवराव भाऊ के बीच, कि जिस से पीछे फिर इतनी फ़ौज किसी लड़ाई के मैदान में अब तक इस मुल्क में इकट्ठी नहीं हुई। कहते हैं कि अस्सी हज़ार सवार पियादे तो अहमदशाह की तरफ़ थे, और पचासी हज़ार मरहठों की तरफ़, और बहीर तो गिनती से बाहर थी, मरहठों के लशकर में सब मिलाकर कम से कम पांच लाख आदमियों की भीड़ भाड़ होगी। पानीपत से २४ मील उत्तर करनाल बीस हज़ार आदमी की बस्ती जमना की नहर के कनारे है, छावनी वहां की प्रसिद्ध थी पर अब बिलकुल टूटगई। —८—थानेसर सहारनपुर के पश्चिम। सदर मुक़ाम थानेसर, जिसे संस्कृत में स्थाणुतीर्थ और कुरुक्षेत्र कहते हैं, लाहौर से १९० मील

अग्निकोन को सरस्वती के बांएं तीर हिन्दुओं का बड़ा तीर्थ है, इसी जगह कौरव पांडव जूझे थे, और महाभारत हुई थी। सरस्वती में अब पानी बहुत कम रहता है। शेखचुहिली का, जिसे लोग शेखचिल्ली कहते हैं, यहां मक़बरा है। कहते हैं कि उस के दर्वाज़े पर नीचे तो यह लिखा था कि खुदा के वास्ते ज़रा ऊपर देख, और ऊपर यह लिखा था ऐ बेवकूफ़ क्या देखता है, पर अब तो टूटा फूटा सा पड़ा है, यह बात वहां कहीं दिखलाई नहीं देती।—९—अम्बाला थानेसर के उत्तर। सदर मुक़ाम अम्बाला लाहौर से १६० मील अग्निकोन पूर्व को झुकता बड़ी छावनी की जगह है।—१०—लुधियाना अम्बाले के वायुकोन। सदर मुक़ाम लुधियाना लाहौर से १००मील अग्निकोन पूर्व को झुकता सतलज की एक धारा के बांएं कनारे पर बसा है। यहां भी पशमीने का काम बनता है।—११—फ़ीरोज़पुर लुधियाने से पश्चिम। सदर मुक़ाम फ़ीरोज़पुर लाहौर से ४६ मील दक्षिण अग्निकोन को झुकता सतलज के बांएं कनारे पर बड़ी छावनी की जगह है। क़िला भी एक कच्चा पर दुश्मन का दांत खट्टा करने को बहुत पक्का सरकार ने बनवाया है। इन ऊपर लिखे हुए चारों ज़िलों में दरख़्त बहुत कम हैं, कोसों तक सिवाय आक और झड़बेरी के दूसरा कोई पेड़ दिखलाई नहीं देता। फ़ीरोज़पुर की गर्द मशहूर है छनी हुई राख की तरह उड़ती है आंधी में क़यामत का नमूना दिखलाती है। बस्ती बहुधा सिखों की है। पश्चिम के बादशाहों की चढ़ाई और नित की लड़ाई भिड़ाई से यह देश निपट उजाड़ होगया था, पर अब सरकार के साए में फिर आबाद होता चला है। इन जिलों में भी पंजाब की तरह कूए में रहट लगा कर पानी निकालते हैं, मोट बैलों से नहीं खिचवाते।—१२—शिमला

हिमालय के पहाड़ों में अम्बाले से नव्वे मील उत्तर पूर्व को झुकता हुआ। लोहा इस जिले में कोटखाई के परगने के दर्मियान बहुत निकलता है। सदर मुक़ाम शिमला लाहौर से १५० मील पूर्व अग्निकोन को झुकता हुआ समुद्र से सात हज़ार दो सौ फ़ुट ऊंचे पहाड़ पर बसा है। अम्बाले से पैंतालीस मील पर पहाड़ की चढ़ाई शुरू होती है, वहां पहाड़ की जड़ में कालका नाम एक छोटी सी बस्ती है, बाज़ार गोदाम इत्यादि जगहें बनी हैं, साहिब लोग गाड़ी बग्गी ऊंट पालकी इत्यादि इसी जगह छोड़ देते हैं, और यहां से खच्चर और पहाड़ी कुलियों पर बोझा लादकर घोड़े पर अथवा झम्पान में, कि जिसे पहाड़ी तामजान कहना चाहिये, सवार होजाते हैं, पुरानी सड़क में तो चढ़ाव उतार बहुत पड़ता था, पर अब जो नई सड़क निकली है उस पर लोग कालका से शिमला तक सरपट घोड़ा दौड़ाए चले जाते हैं, बरन अब इस राह से वहां ऊंट और गाड़ी छकड़े भी आने जाने लगे हैं। यह सड़क जब तक रहेगी, वलियम इडवार्ड साहिब का नाम क़ाइम रक्खेगी, उन्हीं की तजवीज़ से यह सड़क बनाई गई है, और उन्हीं के बाइस से यह राह निकली है। पांच पांच सात सात कोस पर डाक बंगले बने हैं, और पानी के झरने क़दम क़दम पर झरते हैं। कालका से पुरानी सड़क की राह नौ मील कसौली चढ़कर, जो समुद्र से सात हज़ार फ़ुट ऊंचा है और जहां गोरों की पलटन रहती है, फिर प्राय नौ ही मील सबाठू को उतरना पड़ता है। सबाठू समुद्र से ४२०० फ़ुट ऊंचा है, वहां भी गोरे सिपाहियों की छावनी है, और शिमला की कलक्टरी का ख़ज़ाना रहता है। सबाठू से शिमला तक फिर बराबर सत्ताईस मील उतार चढ़ाव है। गर्मी के दिनों में जब कालका में लूएं चलतीं

हैं, और पंखे से भी जान नहीं बचती, तब दो घंटे की राह कसौली चढ़कर ऊनी और रुईदार कपड़े पहने पड़ते हैं, और आग तापते हैं। हिमालय के बर्फ़ी पहाड़ भी वहां से नज़र आते हैं। शिमला के पहाड़ पर प्राय तीन सौ कोठियां केलों के जंगलों में, जिसे फ़ारसी वाले सनोबर कहते हैं साहब लोगों के रहने के वास्ते बहुत उमदा बनी हैं। जाड़ों में शिमला ख़ाली रहता है, पर गर्मियों में चार पांच सौ अंगरेजों की भीड़ भाड़ हो जाती है। चीज़ें ऐश की सब यहां मयस्सर, आबहवा की सफ़ाई स्वर्ग से भी शायद कुछ बढ़कर। गर्मी में वहां इतनी सर्दी रहती है, कि जितनी मैदान में पूस माघ के दर्मियान; और जाड़ों में तो वहां सड़कों पर हाथ हाथ दो दो हाथ बर्फ़ पड़ जाती है। बर्फ़ गिरने के वक्त अजब कैफ़ियत होती है, जाड़ों में जिस तरह कुहरा छाता है, उसी तरह पहले तो अंधेरा सा होजाता है, और फिर जैसे रूई के छोटे छोटे फाहे धुनते वक्त उड़ते हैं, उसी तरह बर्फ़ भी गिरने लगती है, यहां तक कि सारे पहाड़ दरख्त और मकान सफ़ेद होजाते हैं, मानो किसी ने आसमान से सैकड़ों मन कंद या पीसा हुआ सफ़ेद नमक छिड़क दिया है, उस वक्त उस में चलने से बालू की तरह पांव धस्ता है, पर कुछ देर बाद जब वह जमकर पाला होजाती है, तो फिर पत्थर भी उस के आगे नर्म्म है, और चलनेवालों का पैर खूबही फिसलता है, बरन घोड़े के सवारों को तो जान जोखों है। निदान शिमला भी इस हिमालय के पहाड़ में एक अतिरम्य और मनोहर स्थान है।—१३—जालंधर लुधियाने के उत्तर पश्चिम को झुकता हुआ सतलज पार। पानी इस ज़िले में ज़मीन से नज़दीक है, अकसर जगह गज़ भर खोदने से निकल आता है। सदर मुक़ाम जालंधर

लाहौर से ८० मील पूर्व बसाहै।—१४—हुशयारपुर जालंधर के पूर्व। सदर मुक़ाम हुशयारपुर लाहौर से ९५ मील पूर्व है।–१५–कांगड़ा हुशयारपुर के ईशानकोन। यह ज़िला बिलकुल हिमालय के पहाड़ों में बसा है। घेघे की बीमारी यहां अकसर होती है। सदर मुक़ाम कांगड़ा, जिसे नगर कोट भी कहते हैं, लाहौर से १३० मील पूर्व ईशानकोन को झुकता एक छोटे से पहाड़ पर बसा है। क़िला वहां का मज़बूती में प्रसिद्ध है, उसके आस पास पर्वतस्थली ने फैलाव खूब पाया है, और पानी के सोते अनगिनत जारी हैं इसलिये धान बहुत उपजता है। महामाया का मंदिर, जिसे वहां देवी का भवन कहते हैं, हिंदुओं का बड़ा तीर्थ है। तीन चार कोसकी चढ़ाई चढ़कर धर्म्मशाला की छावनी में साहिब लोगों के बंगले हैं, वहां बर्फ़ का पहाड़ बहुत समीप है, गर्मी में भी कांगड़ेवालों को बर्फ़ लेने के वास्ते सात आठ कोस से अधिक नहीं जाना पड़ता। कांगड़े से दो मंज़िल बायुकोन की तरफ़ कोहिस्तान में समुद्र से दो हज़ार फ़ुट ऊंचा नूरपुर बसा है, शालबाफ़ों की दूकान हैं, पर थोड़ी और शाल भी अच्छी नहीं बनती, कांगड़े से ७० मील ईशानकोन पूर्व्व को झुकता मणिकर्णिका तप्तकुंड है, उस कुंडका पानी इस क़दर गर्म रहता है, कि जो चावल रूमाल में बांधकर उस में डाल दो, देखते ही देखतेपक पकाकर भात होजाता है। कांगड़े से अनुमान पच्चीस मील इधर, व्यास नदी के सात मील पार, ज्वालामुखी हिंदुओं का बड़ा तीर्थ है। शिवालय और देवस्थान वहां कई पक्के बने हैं और कुंडभी निर्म्मल पहाड़ी जल से सुथरे भरे हैं। ज्वालाजीका मंदिर ऐन पहाड़ की जड़में है, उसके कलस और गुम्बज़ पर बिलकुल सुनहरी मुलम्मा किया है। दर्वाजे पर चांदी के पत्र जड़े हैं, और सभा मंडप में नय-

पाल के राजा का चढ़ाया जिस पर उसका नाम भी खुदा हुआ है एक बड़ा सा घंटा लटकता है। मंदिर के अंदर बीचों बीच में एक कुंड तीन हाथ लंबा डेढ़ हाथ चौड़ा और दो हाथ गहरा बना है, उस कुंड के अंदर वायुकोन की तरफ़ चार पांच अंगुल का चौड़ा एक मोखा है, उसी मोखे के अंदर से आगकी ज्वाला साथ हाथ भर ऊंची निकलती है, सिवाय इस मोखे के उस कुंडमें आग निकलने के और भी कई छोटे छोटे सूराख़ हैं। कुंड से बाहर उसी रुख़को मंदिर की दीवार के कोने में भी एक मोखा है, उसमें से भी हाथ भर ऊंची एक ज्वाला निकलती है, इसको वहांवाले हिंगलाज की लाट पुकारते हैं। पश्चिम की दीवार में चांदी से मढ़ा एक छोटा सा आला है, उस में भी छोटे छोटे दीए की टेम की तरह आग निकलने के सूराख़ हैं। उत्तर दीवार की जड़में भी इस तरह के कई छेद हैं, पर हिंगलाज की लाट के सिवाय बाक़ी सभों का कुछ ठिकाना नहीं है, कभी कभी बंद भी हो जाती हैं और किसी समय में थोड़े और किसी समय में अधिक तेज़ के साथ जलती हैं। अक्सर जब किसी सूराख़ में से आग का निकलना बन्द होजाता है, और उसके मुंह पर जलती हुई बत्ती ले जाते हैं, तो उस में से फिर आग की ज्वाला निकलने लगती है, जैसे किसी झरोखे की राह से हवाकी झकोर आया करती है। उसी तरह इन मोखों से आग की लाटें निकला करती हैं। क्या महिमा है सर्व शक्तिमान जगदीश्वर की, कि बिना ईंधन आग पड़ी दहकती है, और बिना तेल बत्ती दीपक जला करते हैं। मंदिर के बाहर लेकिन उसके हाते के अंदर उसी रुख़ को अर्थात् वायुकोन की तरफ़ एक हाथ भर लंबा चौड़ा छोटा सा पानी का कुंड है, पहाड़ से जो नहर आई है वह उसी कुंड में

होकर बहती है, वहांवालों ने उसका नाम गोरखडिब्बी रखा है, छूने में पानी उस कुंड के भीतर शोरे की तरह ठंढा, पर देखने में अदहन सा खौलता हुआ, और यदि उसके पानी को ज़रा हाथ से हिलाकर एक जलती हुई बत्ती उसके पास ले जाओ, तो फ़ौरन् रंजक की तरह एक आग का शोला सा उड़ जाता है। निदान इन सब बातों से साफ़ मालूम होता है, कि यह आग, अथवा जलती हुई हवा, गंधक हरिताल इत्यादि किसी धातु की खान में उत्पन्न होकर वायुकोन से पहाड़ के नीचे ही नीचे ज़मीन के अंदर चली आती है, जहां कहीं शिगाफ़ या दरार पाई प्रगट होती हुई कुंड में आकर बिलकुल तमाम हो जाती है। गोरखडिब्बी में पानी के खौलने का भी यही सबब है, कि उस आग का रास्ता पानी के नीचे से गुज़रता है, पानी बहता हुआ है इस कारन गर्म नहीं होता, यदि पानी न होता तो वहां ज्वाला प्रगट होती। मंदिर के अंदर भी कुंड के उत्तर और पश्चिम तरफ़, जो उस जलती हुई हवा के आने का रास्ता है, उस में फ़र्श के पत्थर तपा करते हैं, और दक्षिण और पूर्व के सदा ठंढे रहते हैं। अंगरेज़ी में इस तरह की हवा को जो सदा जलती रहती है हैड्रोजनगैस कहते हैं। जिन्हों ने किमिस्ट्री अर्थात् रसायन विद्या पढ़ी है वे इसके भेद से खूब वाक़िफ़ हैं। यदि किसी शीशी के अंदर थोड़ा सा लोहचुन रखकर उस पर पानी में घुला हुआ सल्फ्यूरिकएसिड अर्थात् गंधक का तेज़ाब डालो, तो हैड्रोजनगैस बन जावेगा, और उस शीशी के अंदर से वही चीज़ निकलेगी, कि जो ज्वालाजी में कुंड के मोखे से निकलती है। जैसे वहां पंडे लोग ज्वाला ठंढी होने पर बत्ती दिखला देते हैं, उसी तरह यदि तुम भी उस शीशी के मुंह पर जलती हुई बत्ती ले जाओ, तो जिस तौर पर

ज्वालामुखी में सूराखों से आग की लाटें निकलती हैं, उस शीशी के मुंह पर भी आग जलने लगेगी। बाज़े आदमी ऐसी चीज़ें देखकर बड़ा अचरज मानते हैं, बरन उनको सृष्टकर्ता ईश्वर जानकर उनकी पूजा करते हैं, और बाज़े जो उनके भेद से वाक़िफ़ हैं उन्हें भी औरों की तरह स्वाभाविक वस्तु समझकर सर्वशक्तिमान जगदीश्वर की अद्भुत अपार रचना पर बलिहारी जाते हैं, और उस जगह उसी के ध्यान में मग्न होकर उसी की पूजा करते हैं।–१६–अमृतसर जालंधर के पश्चिम उत्तर को झुकता हुआ व्यास नदी के पार। सदर मुक़ाम अमृतसर सिक्खों का तीर्थ लाहौर से ३५ मील पूर्व ईशानकोन को झुकता बड़े व्यौपार की जगह है, लाख आदमी से ऊपर बसते हैं। शहर के बीच एक सुंदर स्वच्छ जल से भरा हुआ तालाब अमृतसर नाम १३५ क़दम लंबा और इतना ही चौड़ा पक्का बना है, और उस तालाब के बीच एक छोटे से संगमर्मर के मकान में, जिसके गुम्बज़ पर सुनहरी मुलम्मा हुआ है, ग्रंथ साहिब अर्थात् सिक्खों के मत की पुस्तक गुरु गोविंदसिंह के हाथ का लिखा रखा है। पहले इस शहर का नाम चक था, जब से गुरु रामदास ने यह तालाब बनाया तब से अमृतसर रहा। शालबाफ़ों की दूकानें बहुत हैं, और सरकारी अमलदारी के सबब महसूल न लगने से माल पशमीने का बहुधा इसी जगह से दिसावरों को जाता है। पास ही गोविंदगढ़ का मज़बूत क़िला बना है, रंजीतसिंह का ख़ज़ाना उसी में रहता था।–१७– बटाला अमृतसर के ईशानकोन। सदर मुक़ाम गुरदासपुर लाहौर से ७५ मील ईशानकोन पूर्व को झुकता है। –१८– हवां लाहौर अमृतसर के पश्चिम दक्षिण को झुकता। बादशाही ज़माने में यही नाम इस सारे सूबे का था। शहर लाहौर,

अथवा लहावर रावी के बांएं कनारे पर समुद्र से ९०० फुट ऊंचा कलकत्ते से ११०० मील और सड़क की राह १३५२ मील (१) वायुकोन को सात मील के घेरे में पक्की शहरपनाह के अंदर बसा है। हिन्दू इस शहर को रामचंद्र के पुत्र लव का बसाया और असली नाम उसका लवकोट बतलाते हैं। बसती उस में अनुमान लाख आदमियों की होगी। दिल्ली की तरह इस शहर के गिर्दनवाह में भी बहुत से खंड़हर और मक़बरे पड़े हैं। शहर से दो मील पर रावी पार शाहदरे में अकबर के बेटे जहांगीर का मक़बरा देखने लाइक़ है। शहर से तीन मील ईशानकोन को बादशाही समय का बना हुआ ४ मील के घेरे में शालामार बाग़ है, रंजीतसिंह को इमारत का शौक़ न था मरम्मत के बदल और भी उसके पत्थर उखाड़कर अमृतसर भिजवा दिये, अब सरकार की तरफ़ से उसकी सफ़ाई हुई है। इस बाग़ में ४५० फ़व्वारे छुटते हैं, और कई हौज़ संगमर्मर के बने हैं, और उसके पानी के लिये सवा सौ मील से नहर काट लाये हैं। पंजाब के लेफ्टिनेंट गवर्नर इसी जगह रहते हैं, और पास ही मीयामीर में छावनी भी बहुत बड़ी है।—१९—शैखूपुरा लाहौर के पश्चिम रावी पार। सदर मुक़ाम गूजरांवाला लाहौर से ४० मील उत्तर वायुकोन को झुकता हुआ रंजीतसिंह के पुरखाओं की जन्मभूमि है।—२०—स्यालकोट शैखूपुरे के उत्तर। सदर मुक़ाम स्यालकोट लाहौर से ६५ मील उत्तर ईशानकोन को झुकता हुआ चनाब नदी के बांएं कनारे ५ मील हटकर बसा है।—२१—गुजरात स्यालकोट

---

(१) नक़शे की नाप से सड़क की नाप में फ़र्क़ पड़ता है, क्योंकि सड़कें सीधी नहीं रहतीं घूम फिर कर जाती हैं। देखो नक़शे की नाप से हमने मुंगेर को २५० मील कलकत्ते से लिखा है, लेकिन सड़क की राह जाओ तो ३०४ मील पड़ेगा॥

के पश्चिम चनाब पार। सदर मुक़ाम गुजरात लाहौर से ७५ मील उत्तर चनाब के दहने कनारे अढ़ाई कोस के तफ़ावत पर शहरपनाह के अंदर बसा है।-२२-शाहपुर गुजरात के नैर्ऋतकोन। सदर मुक़ाम शाहपुर लाहौर से १२५ मील पश्चिम वायुकोन को झुकता झेलम नदी के बाएं कनारे है। इस जिले को शैख़ूपुरे के साथ जिसका जिकर ऊपर लिखा गया शास्त्र में मद्र देश कहा है।-२३-पिंडदादनखां गुजरात के पश्चिम। सदर मुक़ाम झेलम लाहौर से १०० मील वायुकोन उत्तर को झुकता झेलम नदी के दहने कनारे है। मंज़िल एक पर पहाड़ में नमक की खान है। छ मील वायुकोन को सवा कोस लंबा रुहतास का मज़बूत क़िला टूटा हुआ बेमरम्मत पड़ा है, दीवार उसकी ३० फ़ुट चौड़ी संगीन है।-२४-रावलपिंडी पिंडदादनखां के उत्तर। सदर मुक़ाम रावलपिंडी लाहौर से १६० मील उत्तर वायुकोन को झुकता शहरपनाह के अंदर बसा है। रावलपिंडी से ६० मील पश्चिम वायुकोन को झुकता अटक का मशहूर क़िला ८०० गज़ लंबा ४०० गज़ चौड़ा सिंध के बाएं कनारे एक पहाड़ी पर मज़बूत बना है, कोई इसे अटक बनारस भी कहता है, क़िला देखने में बहुत अच्छा बना है, पर उसके पास एक पहाड़ उससे ऊंचा है, इस कारण उसकी मज़बूती में ख़लल पड़ गया, क्योंकि वह उस पहाड़ की मार में है। रावलपिंडी से अग्निकोन को अनुमान १५ मील पर मानिकयाला गांव के पास बौध मत का एक देहगोप सत्तर फ़ुट ऊंचा ३२५ फ़ुट के घेरे में उसी तरह का बना है जैसा काशी में सारनाथ के नज़दीक मौजूद है, और इसके सिवाय उस गिर्दनवाह में और भी पंदरह देहगोप हैं, जेम्स प्रिंसिप साहिब की तरह जेनरल वंतूरा और अबीतबेला ने उन में से दो

देहगोप खुदवाये थे, तो उनके अन्दर से बनारस के देहगोप की तरह राख और हड्डी निकली, और उसके साथ कुछ अशरफ़ी रुपये और पैसे भी मिले, और उन में से कई रुपयों पर रूम के बड़े बादशाह जूलियस् क़ैसर का नाम खुदा था। -२५-पाकपट्टन लाहौर के दक्षिण नैर्ऋतकोन को झुकता सतलज और रावी के बीच में है। सदर मुक़ाम फ़तेहपुर गूगेरा लाहौर से ८० मील नैर्ऋतकोन रावी के बाएं कनारे है। पाकपट्टन वहां से ४५ मील दक्षिण अग्निकोन को झुकता सतलज के दहने कनारे छ मील के तफ़ावत पर बसा है, उस में शेख़ फ़रीद की दरगाह है। -२६-मुल्तान पाकपट्टन के पश्चिम। इस ज़िले के दक्षिण और पूर्व भाग में रेगिस्तान बहुत है। बादशाही अमल्दारी में उसी नाम के सूबै की राजधानी था, जिसकी हद ठट्ठे और कच्छ तक गिनी जाती थी। सदर मुक़ाम मुल्तान लाहौर से २०० मील नैर्ऋतकोन को चनाब के बाएं कनारे से दो कोस पर चौदह पंदरह हाथ ऊंची शहर पनाह के अंदर बसा है। क़िला उसका मज़बूती में मशहूर है। शेख़ बहाउद्दीन ज़करिया का वहां मक़बरा है। रेशमी कपड़े खेस दाराई इत्यादि वहां अच्छे बनते हैं, क़ालीन भी बुने जाते हैं। ज़मीन शहर के गिर्दनवाह में उपजाऊ है।—२७—झंग मुल्तान के वायुकोन। सदर मुक़ाम झंग अथवा झंग सियाल लाहौर से ११५ मील पश्चिम नैर्ऋतकोन को झुकता चनाब के बाएं कनारे पर कोस एक के फ़ासिले से बसा है।—२८—खानगढ़ मुल्तान के दक्षिण नैर्ऋतकोन को झुकता। सदर मुक़ाम खानगढ़ लाहौर से २२५ मील नैर्ऋतकोन है।-२९-लैया खानगढ़ के उत्तर। सदर मुक़ाम लैया लाहौर से २०० पश्चिम नैर्ऋतकोन को झुकता सिंधु नदी के बाएं कनारे पर पांच कोस के

फ़ासिले से बसा है। बरसात में जब दरिया बढ़ता है बारह बारह कोस तक पानी फैल जाता है। बहुत लोग जो दरिया के समीप रहते हैं इसी डर से आठ दस हाथ ऊंचे लट्ठे गाड़कर उस पर अपने छान छप्पर बनाते हैं। शास्त्र में इस का नाम सिंधुसौबीर लिखा है। —३०—देरागाज़ीख़ां खानगढ़ के नैर्ऋतकोन सिंधु पार। इस ज़िलेमें मुसल्मानों की बस्ती बहुत है। सदर मुक़ाम देरागाज़ीख़ां लाहौर से २३० मील नैर्ऋतकोनको सिंधु के दहने कनारे पर बसाहै।—३१— देराइसमाईलखां देरैग़ाज़ीख़ां के उत्तर। इस ज़िले में बलूच और पठान बहुत और हिंदू अति अल्प। सदर मुक़ाम देराइसमाईलखां लाहौर से २१५ मील पश्चिम सिंधु के दहने कनारे खजूर के दरख़्तों में बसा है। इसी ज़िले में पिशौर से सैंतीस कोस इधर सिंधु के कनारे सेंधे नमक का पहाड़ है, कि जो अफ़ग़ानिस्तान में सफ़ेद कोह से निकलकर झेलम के कनारे तक चला आया है। जगह देखने योग्य है, दोनों तरफ़ पहाड़ आजाने के कारन दरया बहुत तंग और गहरा हो गया है, धरती बिलकुल लाल, पहाड़ नमक का जिसके नीचे दरया बहता है गुलाबी बिल्लौर सा चमकता, दहने तट पर पहाड़ के ऊपर कालाबाग़ बसा हुआ, नमक के डले खान के खुदे हुए, मनों वज़न में एक एक, ढेर के ढेर लगे रहते हैं, और व्यौपारियों के ऊंट क़तार की क़तार लदे हुए दिखाई देते हैं।—३२— हज़ारा रावलपिंडी के वायुकोन पहाड़ों के अंदर। सदर मुक़ाम हज़ारा लाहौर से १८० मील उत्तर वायुकोन को झुकता हुआ है। —३३—पिशौर हज़ारे के पश्चिम सिंधुपार। यह इस तरफ़ हिंदुस्तान का सब से परला ज़िला है, इस से आगे ख़ैबर घाटे के पार जो शहर से १५ मील है अफ़ग़ानिस्तान का मुल्क शुरू होता है। इस

के चारों तरफ़ पहाड़ है, और बीच में मैदान। मुसल्मान बहुत हैं, और ज़ुबान वहां वालों की पश्तो। सदर मुक़ाम पिशौर अथवा पिशावर जो इस समय हिन्दुस्तान में सब से बड़ी छावनी है लाहौर से सवा दो सौ मील वायुकोन को सिंधुपार ४४ मील के तफ़ावत पर समुद्र से १००० फ़ुट ऊंचा बड़े व्यौपार की जगह है, ईरान तूरान अफ़ग़ानिस्तान सब जगह के सौदागर वहां आते हैं। सरा बहुत अच्छी बनी है। शहर के उत्तर एक पहाड़ पर बाला हिसार का क़िला है, लड़ने के गौं का तो नहीं, पर रहने को अच्छा है। गोरखनाथ का मंदिर वहां कनफटे जोगियों का तीर्थ है। शहर से ८ मील पर काबुल की नदी बहती है।–३४–कोहाट पिशौर के दक्षिण। सदर मुक़ाम कोहाट लाहौरसे २१५ मील वायुकोन है। वहां एक क़िस्म का पत्थर होता है उसको पानी में उबाल कर मोमियाई बनाते हैं॥

अवध की चीफ़ कमिश्नरी

नीचे वे ज़िले लिखे जाते हैं जो अवध के चीफ़ कमिश्नर के ताबे हैं शास्त्र में इसे उत्तर कोशल कहा है, और बादशाही दफ़्तर में सूबे अवध लिखा जाता था। उत्तर की तरफ़ उसके नयपाल है, और दक्षिण के तरफ़ गंगा बहती है।–१–ज़िला उन्नांव कान्हपुर के पूर्व गंगापार है। सदर मुक़ाम उस का उन्नांव लखनऊ से ३५ मील नैर्ऋतकोन है। –२–लखनऊ उन्नांव के ईशानकोन। सदर मुक़ाम लखनऊ अनुमान तीन लाख आदमी की बस्ती २८ अंश ५१ कला उत्तर अक्षांश और ८० अंश ५० कला पूर्व देशांतर में कलकत्ते से ५७५ मील और सड़क की राह ६१९ मील वायुकोन गोमती के दहने कनारे बसा है। असल नाम इसका लक्ष्मणावती बतलाते हैं, और कितनेही लोग ऐसा भी कहते हैं कि नैमिषारण्य जहां सूतजी

ने साठ हज़ार मुनियों के समाज में पुराण सुनाए थे इसी जगह पर था, अब जहां जात्री जाते हैं और जिसे नीमखार कहते हैं वह जगह गोमती के कनारे लखनऊ से बहुत हटकर है। यद्यपि शहर की गलियां बहुत तंग और ग़लीज़ हैं, पर सड़कें खूब चौड़ी और निहायत साफ़ हैं। यदि किसी ऊंची जगह पर चढ़कर इस शहर को देखो, तो जहां तक नज़र जाती है, दरख्त बाग़ मीनार गुम्बज़ आलीशान मकान और चमकती हुई सुनहरी कलसियां नज़र पड़ती हैं। सड़कों के आस पास विशेष करके हुसेनाबाद के निकट हौज़ और फ़व्वारे और संगमर्मर इत्यादि के निहायत खूबसूरत बड़ेबड़े खिलौने बने हुए हैं। शहर निहायत आबाद है, हज्जामों के बदन पर भी दुशाले, हलालखोरों के पैर में भी जर्दोज़ी जूते, जिनके घर में चूल्हे पर तवा नहीं, वे भी बाज़ार में मिरज़ा बने फिरते हैं। दुकानों में सब तरह की चीज़ अच्छी से अच्छी मौजूद रहती है, चार कौड़ी को भी जो लड़के खानचेवालों से दोना लेते हैं, उसमें सारी न्यामतों का मज़ा मिलता है। अंगरेज़ी अमल्दारी से पहले वहां बादशाही मकानों की तैयारी देखकर अक़ल दंग हो जाती थी, झाड़ फ़ानूस दीवारगीर आइने तसवीर घड़ी खिलौने विलायती कलें जो चीज़ देखिये नादिर, सफ़ाई हद के दर्जे पर, फ़रह बख्श मुबारक मंज़िल इन्द्रासन मोती महल पंज महल शीश महल हुसेनाबाद मूसा बाग़ हैदरबाग़ क़ैसरबाग़ परिस्तान दिलकुशा दौलतखाना कुतुबखाना तारेवाली कोठी, जिस में ग्रह नक्षत्रादिकों के देखने के लिये बहुत बड़ी बड़ी दूरबीनें पत्थर के खंभों पर लगी थीं सारे मकान देखने योग्य थे। सिवाय इनके और भी बहुत से इमामबाड़े इत्यादि सैर के लाइक़ थे। आसिफुद्दौला के इमामबाड़े की छत एक

सौ बीस फुट लंबी और साठ फुट चौड़ी बिलकुल लदाव की बनी है, खंभे बिना इतनी बड़ी छत शायद दुनिया में दूसरी न निकलेगी। शहर से बाहर जेनरल मार्टीन की कोठी कांस्टेंशिया जिसकी तैयारी में उसका पंद्रह लाख रुपया खर्च पड़ा था बहुत आलीशान और बेनज़ीर है, और उस दरदीवारों पर गुल बूंटे और तसवीरें बहुत सुंदर बनी हैं। अंगरेज़ी अमल्दारी से पहले इस शहर की सैर मुहर्रम के दिनों में देखनी चाहिये थी कि जब इमामबाड़ों में हज़ारों कंवल क़ंदील और मोमबत्तियों की रोशनी होती थी विशेष करके हुसेनाबाद में कि जहां यह नहीं मालूम होता था कि इमामबाड़ा रौशन हुआ या रौशनी का इमामबाड़ा बन गया। यद्यपि लखनऊवाले अपनी तराश ख़राश और बोल चाल के आगे दूसरों को दिहक़ानी गवांर समझते हैं, और कहते हैं कि यह लखनऊ हिन्दुस्तान का नमूना है जो कुछ ज़िंदगी का मज़ा है इसी जगह में है, यदि कुंदैनातराश भी आवे यहां ख़राद पर चढ़ जाता है, पर सच पूछो तो जो आदमी होगा लखनऊ और लखनऊ वालों से अवश्य नफ़रत करेगा, क्योंकि उनके चलन बहुत ख़राब हैं, ईश्वरको भूल कर दुनिया के झूठे मज़े में तन मन से लवलीन रहते हैं, ऐयाशी और ज़नानापन उनकी सूरत से बरसता है, जब बादशाह ही ने नाचने और तबला बजाने पर कमर बांधी तो फिर रैयत की क्या गिनती है, बदकारी को सब जगह छुपाते हैं, पर वहां इसका न करना ऐब है, दिन में कसबियों के साथ बरामदों में बैठे हुए उसी शहर के अमीरों को देखा। गोमती पर पक्का पुल तो पहिले से बना है, और एक पुल किश्तियों का भी रहता है, पर लोहे का पुल अब हाल में तैयार हुआ है। साहिब चीफ़ कमिश्नर इसी जगह रहते हैं, एक नया क़िला बड़ी धूमधाम से तैयार

कर रहे हैं।-३-रायबरेली लखनऊ के दक्षिण। सदर मुक़ाम रायबरेली लखनऊ से ४६ मील दक्षिण अग्निकोन को झुकता सई के बांएं कनारे बसा है।-४-सुलतांपुर रायबरेली के पूर्व। सदर मुक़ाम सुलतांपुर लखनऊ से ८५ मील अग्निकोन पूर्वको झुकता गोमती के बांएं कनारे बसा है। -५-सलोन रायबरेली के दक्षिण अग्निकोन को झुकता। सदर मुक़ाम परतापगढ़ लखनऊ से ९५ मील अग्निकोन को सई के दहने कनारे है।-६-फ़ैज़ाबाद सुलतांपुर के उत्तर। सदर मुक़ाम फ़ैज़ाबाद लखनऊ से ७८ मील पूर्व है, इसे बंगला भी कहते हैं शुजाउद्दौला के वक्त़ में सूबै अवध की राजधानी था, सन् १७७५ में उसके बेटे आसिफुद्दौला ने लखनऊ को राजधानी बनाया। पास ही सरयू नदी के दहने कनारे अयोध्या अथवा अवध का पुराना शहर हिंदुओं का बड़ा तीर्थ है। शास्त्र में लिखा है कि मनु ने सब से पहले यही शहर बसाया। किसी समय में वह रामचन्द्र की राजधानी था। बाल्मीक ने उसे अपनी पोथी में १२ योजन (१) लंबा लिखा है। अबुलफ़ज़ल लिखता है कि वह शहर अपने ज़माने में १४८ कोस लंबा और ६६ कोस चौड़ा बस्ताथा, यद्यपि यह तो बढ़ावा है, पर इमारतों के निशान दूर दूर तक मिलने से यह बात बख़ूबी साबित है, कि वह पहिले दर्जे का शहर था। राम लक्ष्मण सीता और हनुमान के मंदिर बने हैं। प्राचीन बड़े बड़े मंदिर और रामचन्द्र के समय की इमारतें जो कुछ रही सही थीं वह मुसल्मानों ने सब तोड़ताड़ कर बराबर कर दीं, बरन उनकी जगह पर मसजिदें बन गईं।—७—गोंडा फ़ैज़ाबाद

---

(१) कोई तो योजन चार कोस का मानता है, और कोई उस से न्यूनाधिक॥

के वायुकोन उत्तर को झुकता सदर मुक़ाम गोंडा लखनऊ से ६५ मील पूर्व ईशान कोन को झुकता बसा है।–८–बहराइच गोंडे के वायुकोन सदर मुक़ाम बहराइच लखनऊ से ६४ मील उत्तर, वहां सुलतान मसऊद्गाज़ी की दरगाह और रजब सालार का मक़बरा है।–९–मुल्लापुर बहराइच के वायुकोन। सदर मुक़ाम मुल्लापुर लखनऊ से ६१ मील उत्तर ईशानकोन को झुकता सरयू के दहने कनारे बसा है।–१०–सीतापुर मुल्लापुर के पश्चिम। सदर मुक़ाम सीतापुर लखनऊ से ५३ मील उत्तर बसा है।–११–दरयाबाद सीतापुर के वायुकोन। सदर मुक़ाम दरयाबाद लखनऊ से ४५ मील वायुकोन उत्तर को झुकता हुआ है।—१२—मुहम्मदी दरयाबाद के उत्तर है। सदर मुक़ाम मुहम्मदी लखनऊ से ९० मील वायुकोन उत्तर को झुकता बसा है॥

॥ मंद्राज हाता ॥

अब वे ज़िले लिखे जाते हैं जो मंद्राज की गवर्नरी के ताबे हैं –१–गंजाम कटक से दक्षिण चिलकिया झील से सिकाकोल नदी तक। समुद्रके तटके निकट धरती उपजाऊ है। सदर मुक़ाम गंजाम मंद्राज से ५५० मील ईशानकोन समुद्र के कनारे पर बसा है, और उसके नीचे एक नदी भी उसी नाम की समुद्रसे मिली है। गंजाम से ११० मील नैर्ऋतकोन की तरफ़ सिकाकोल जिसे चिका कूल भी कहते हैं उसी नाम की नदी के बांएं कनारे बसा है, सिपाहियों के रहने की बारकें और साहिब लोगों के कई बंगले भी वहां बने हैं।–२–बिजिगापट्टन गंजाम के नैर्ऋतकोन। यह ज़िला पर्बतस्थली में बसा है। सदर मुक़ाम बिजिगापट्टन जिसे विशाखपट्टन् भी कहते हैं मंद्राज से ३९० मील ईशानकोन समुद्र के तट पर बसा है।

आब हवा वहां की खराब है।—३—राजमहेंद्री विजिगापट्टन के नैर्ऋतकोन। सदर मुक़ाम राजमहेंद्रवरं मंदराज से २९० मील ईशान कोन उत्तर को झुकता समुद्र से पचीस कोस गोदावरी के बांएं कनारे एक ऊंचे करारे पर बसा है। बाज़ार उसका पटा हुआ दो खंड का है। इन ऊपर लिखे हुए तीनों जिलों के पश्चिम भाग में जंगल पहाड़ बहुत हैं, उन में निरे असभ्य आदमी रहते हैं।-४-मछलीबंदर जिसे अंगरेज़ मौसलीपट्टन कहते हैं राजमहेंद्री के दक्षिण नैर्ऋतकोन को झुकता। इन दोनों जिलों का नाम शास्त्र में कलिंग देश लिखा है। सदर मुक़ाम मछलीबंदर मंदराज से २२५ मील उत्तर ईशानकोन को झुकता समुद्र के तट पर बसा है। बंदर अच्छे होने के कारण तिजारत की जगह है। छींट वहां की मशहूर है ईरान को बहुत जाती है। क़िला कृष्णा नदी की एक धारा के समीप शहर से पौन कोस पर दलदल में बना है। मछलीबंदर से पैंतीस मील उत्तर इल्लौर का शहर है।—५—गंतूर मछलीबंदर के नैर्ऋतकोन। पेड़ इस ज़िले में कम हैं, मुसाफ़िरों को कहीं कहीं इमली की छाया अच्छी मिलती है। हीरे की खान है, पर अब उस्से कुछ फ़ाइदा नहीं होता। सदर मुक़ाम गंतूर अथवा मुर्तज़ानगर मंदराज से २३० मील उत्तर है। इन ऊपर लिखे हुए दोनों जिलों में अर्थात् मछलीबंदर और गंतूर में गर्मी बहुत शिद्दत से पड़ती है, यहांतक कि शीशे टूटजाते हैं और लकड़ीकी चीज़ें इतनी खुशक हो जाती हैं कि उनके अंदर से कील कांटे झड़ पड़ते हैं कृष्णा के मुहाने पर बालू के पटपर में गर्मियों के दर्मियान थर्मामेटर में १०८ दर्जे पर पारा रहता है। -६-नेल्लूरु गंतूर के दक्षिण। तांबे की खान है। सदर मुक़ाम नेल्लूरु मंदराज से १०० मील उत्तर पन्नार

अथवा पेन्ना नदी के दहने कनारे बसा है। इस नदी का शुद्ध नाम पिनाकिनी है।—७—कडप नेल्लूरु के पश्चिम हीरे की खान है। सदर मुक़ाम कडप जिसका शुद्धोच्चारण कृपा है उसी नाम की नदी के कनारे मंदराज से १४० मील वायुकोन उत्तर को भुकता हुआ है।–८–बल्लारी कुडप के पश्चिम वायुकोन को भुकता। सदर मुक़ाम बल्लारी जिसे बलहरी भी कहते हैं मंदराज से २६० मील वायुकोन की तरफ़ हुगरी नदी के बांएं कनारे दो कोस हटकर बसा है। क़िला चौखूंटा एक पहाड़ पर बना है। पास ही छावनी है। बल्लारी से उनतीस मील वायुकोन को तुङ्गभद्रा के दहने कनारे विजयनगर का प्रसिद्ध और पुराना शहर कम से कम आठ मील के घेरे में उजड़ा हुआ पड़ा है। यह शहर एक ऐसे मैदान में है, कि जिसके गिर्द बड़े बड़े ढोके पत्थर के पड़े हैं, बरन किसी किसी जगह में उनके ऐसे ऐसे ढेर लगे हैं कि मानो छोटे छोटे पहाड़ हैं, शहर के बीच में भी कहीं कहीं ऐसे बड़े बड़े पत्थर पड़े हैं कि कई जगह रस्ता उनकी छांव में चलता है, रास्तों में बिलकुल पत्थर का फ़र्श, नहर तालाब और कूए पत्थर काट कर बने हुए, क़िला महल बुर्ज कंगूरे फाटक मंदिर धर्मशाला और मकान बहुत बड़े बड़े पुरानी हिन्दुस्तानी चाल के, दीवार खंभे मिहराब और छत्त सारी चीज़ें निरे पत्थरों की, और वे पत्थर भी इतने बड़े कि समझ नहीं पड़ता बिना कलके बल क्योंकर आदमी उन्हें अपनी जगह से हटा सके, पंद्रह २ फ़ुट के लम्बे चौड़े और मोटे पत्थर उनमें लगे हैं, और बहुत ख़ूबसूरती से उन्हें तराशा और जमाया है, बाज़ार के सिरे पर जो नव्बे फ़ुट चौड़ा है एक शिवाला दस मरातिब का १६० फ़ुट ऊंचा बना है, रामचंद्र के मंदिर में काले पत्थर के खंभों पर बहुत बारीक नक़ाशी की है, शहर के बीचों बीच में एक बहुत उमदा

मंदिर जिसके मकानों की लंबान ४०० फ़ुट और चौड़ान २०० फ़ुट होगी वैष्णवी मतका बना है, उसमें एक रथ निराले पत्थर का धुरी पहिये इत्यादि सब समेत सच्चे रथ की तरह निहायत बारीकी और कारीगरी के साथ बनाकर रखा है। यह शहर कुछ न्यूनाधिक ५०० बरस गुज़रते हैं महाराज बीरबुक्कराय ने बसाया था, और वह उसकी राजधानी था। पहले उसका नाम विद्यानगर था, फिर विजय नगर हुआ। माधवाचार्य जिसने बड़े बड़े ग्रंथ संस्कृत में बनाये हैं इसी राजा का मंत्री था। विजय नगर के साम्हने तुङ्गभद्रा पार इसी तरह दूसरा शहर अम्मागुंडी का उजड़ा हुआ पड़ा है, केवल कुछ थोड़े से आदमी रहते हैं। कहते हैं किसी समय में यहां से वहां तक नदी के दोनों तरफ़ यह एक ही शहर था, और चौबीस मील के घेरे में बस्ता था। बल्लारी से ४४ मील पूर्व समुद्र से कुछ ऊपर २१०० फ़ुट ऊंचा मिट्टी का क़िला एक पहाड़ पर मज़बूत बना है। -९-चित्तूर कडप के दक्षिण। सदर मुक़ाम चित्तूर अथवा चैतूर मंदराज से ८० मील पश्चिम वायुकोन को झुकता हुआ है। -१०- मार्काडु अथवा अर्काडु जिसे अर्काट कहते हैं कडप के दक्षिण। इस जिले में चाही जमीन बहुत है, क्योंकि ३५९९ गांव के बीच ४००० तालाब और १९००० से ऊपर कूए सिवाय उन नहरों के जो नदी और झरनों से काटकर लाए हैं बने हैं। सदर मुक़ाम अर्काडु, जिसे पंडित लोग अरुकाटि भी कहते हैं, सूबै कर्नाटक की पुरानी राजधानी मंदराज से पैंसठ मील पश्चिम पालार नदी के दहने कनारे कि जो गर्मी में सूख जाती है शहरपनाह के अंदर बसा है। क़िला और नव्वाबों के पुराने महल अब खंड़हर हो गए। वहां से १५ मील पश्चिम पालार के उसी कनारे पर इल्लौर का, जिसे बहुधा विल्लूर

कहते हैं, शहर क़िला और छावनी है। अर्काडु से प्राय चालीस मील दक्षिण अग्निकोन को झुकता ५०० फ़ुट ऊंचे पहाड़ पर झिंजी का मज़बूत क़िला ऊजड़ पड़ा है। झिंजी के पश्चिम एक मंज़िल पर तिरूनमाली में हिंदुओं के मंदिर धर्मशाला और कुंड हैं, उन में बड़े मंदिर का दर्वाज़ा जो पहाड़ की जड़ में बना है बारह मरातिब का २२२ फ़ुट ऊंचा है झिंजी से मंज़िल एक अग्निकोन को त्रिविकेरा गांव के पास बहुत से पेड़ पत्थर होकर पड़े हैं, और खोदने से धरती के अंदर भी निकलते हैं (१) एक पेड़ इस तरह का वहां साठ फ़ुट का लंबा पड़ा है, जड़ उसकी ज़िला देने से यशम और अक़ीक़ से भी अच्छा रूप दिखलाती है। साहिब लोग अकसर उसके माला और गहने बनाते हैं। अर्काडु से ८५ मील दक्षिण अग्निकोन को झुकता कड़ालूर का बंदर है, अंगरेज़ों के बंगले भी वहां बहुत से बने हैं।—११—चेंगलपट्टु नेल्लूरु से दक्षिण। ज़मीन अकसर पथरीली। ताड़ के पेड़ बहुत। इस ज़िले को जागीर भी कहते हैं, क्योंकि अर्काडु के नव्वाब ने सन् १७५० और १७६३ में सरकार कम्पनी को बतौर जागीर के दे दिया था। सदर मुक़ाम चेंगलपट्टु जिसे लोग सिंहलपेटा भी कहते हैं मंदराज से ३५ मील दक्षिण नैर्ऋतकोन को झुकता एक छोटी सी नदी पर, जो पालार में गिरती है, पहाड़ों के बीच बसा है। क़िला मज़बूत था

---

(१) जिस पानी में पत्थर के अत्यंत सूक्ष्म परमाणु मिले रहते हैं, उस में लकड़ी पड़ने से काल पाके पत्थर हो जाती है, क्योंकि लकड़ी के परमाणु दिन पर दिन गलते जाते हैं, और पत्थर के परमाणु उनकी जगह पर उस लकड़ी के छेदों की राह इस ढब से बैठते जाते हैं, कि यद्यपि वह लकड़ी से पाषाण हो जाती है, परंतु रंग रूप और रग रेशे उस में उसी लकड़ी के से बने रहते हैं॥

पर अब बेमरम्मत है। मंदराज, जिसका शुद्धोच्चारण मंदिरराज है, और जिसे चीनापट्टन भी कहते हैं, उस हाते की राजधानी कलकत्ते से ८५० मील और सड़क की राह १०६३ मील नैर्ऋतकोन दक्षिण को झुकता ठीक समुद्र के तट पर बसा है। क़िला सेंटजार्ज का बहुत मज़बूत है, यदि फैलाव में फ़ोर्ट विलियम् से छोटा है, पर लड़ाई के ढंगों का उस्से भी अधिक है। लहरें समुद्र की यहां बेतरह टकराती हैं, बंदर कोई नहीं, जहाजों का ठहरना बहुत मुश्किल बरन अकतूबर नवम्बर और दिसम्बर में तो तबाह हो जाने का डर लगा रहता है, जब हवा तेज़ चलती है, मुम्किन नहीं कि जहाज वाले कनारे आ सकें, या कनारे वाले जहाज़ पर जा सकें, बरन जब हवा मुवाफ़िक़ रहती है तब भी लोगों को जहाज़ तक, कि जो हमेशः कनारे से कुछ तफ़ावत पर लंगर डालते हैं, आने जाने के लिये उसी शहर की नावों पर सवार होना पड़ता है, जहाज़ वालों का मक़दूर नहीं कि अपने बोट उस लहर में खोल सकें, ये नाव हलकी और चमड़े की तरह लचकती रहती हैं, कि जिस में लहरों के ज़ोर से टूटने न पावें, और उनके मल्लाह ऐसे उस्ताद होते हैं, कि लहर पर अपनी नाव चढ़ाकर उस के साथ ही कनारे पर ला डालते हैं, ज़रूरत के वक्त वे मल्लाह लकड़ी के लट्ठों पर जो दो तीन आपस में बंधे रहते हैं सवार होकर चिट्ठी इत्यादि जो पानी से बचाने को अपनी चटाई की टोपियों में रख लेते हैं जहाज़ तक पहुंचा देते हैं, जब पानी का ज़ोर उन्हें गेंद की तरह उठाकर दूर फेंक देता है, तो वे तैर कर फिर अपने बेड़े पर आ चढ़ते हैं जब किसी समय ये आदमी की जान बचाते हैं, तो इन्हें सरकार से तग़मा मिलता है। समुद्र के कनारे सरकारी और साहिब लोगों के मकान बहुत उमदा बने हैं चूना वहां कौड़ी जलाकर बनाते

हैं, इस कारन बहुत साफ़ और सफ़ेद होता है। गवर्नमेंटहौस के नज़दीक करनाटक के नव्वाब का बनवाया चिपाक बाग़ है। सड़क साहिब लोगों के हवा खाने की सुन्दर बनी है। दोनों तरफ़ सायादार पेड़ों के लगे रहने और अंगरेज़ों के बाग़ और बंगलों के होने से फूलों की मीठी मीठी सुगन्ध हर तरफ़ से चली आती है। यद्यपि अच्छे बंदर या कोई बड़ी नदी के न होने के कारन यह शहर कलकत्ते और बंबई की तरह तिजारत की जगह नहीं है, पर तौ भी चीज़ें सब तरह की मिल जाती हैं। सन् १८०३ में शहर से ईन्नौर नदी तक एक नहर १०५६० गज़ लंबी ऐसी खोदी गई कि उसमें नाव भी चल सकती है। सिपाही पलटन के वहां बंगाल हाते की बनिसबत छोटे और कमज़ोर होते हैं, पर चुस्ती चलाकी और क़वाइद में इन से भी अधिक हैं। मंदराज के गवर्नर कमांडरिंचीफ़ सुप्रिमकोर्ट और सदर निज़ामत व दीवानी के जज और बोर्डआफ़ रेवन्यू के साहिब लोग इसी जगह रहते हैं। सन् १६३९ में विजय नगर के राजा श्रीरंगराइल ने इस शर्त से अंगरेज़ों को मंदराज में क़िला बनाने की इजाज़त दी थी, कि वह क़िला उसके नाम से श्रीरंगरायपट्टन पुकारा जाय, पर इन्हों ने क़िले का नाम तो सेंटजार्ज रखा और शहर जो बसाया उस का नाम वहां के कारदार ने स्वामी की अवज्ञा करके अपने बाप चिनापा के नाम पर चीनापट्टन रखा। अब इस शहर में गिर्दनवाह समेत सात लाख आदमी बसते हैं। मंदराज से ४८ मील नैर्ऋतकोन को कुंजवरंका शहर है, जिस का असली नाम शास्त्र में कांचीपुर लिखा है। वहां बाज़ार में दोनों तरफ़ नारियल के पेड़ लगे हैं। शिव का एक बहुत बड़ा मंदिर बना है, उस मंदिर के भीतर एक धर्मशाला है जिसमें हज़ार

खंभे बतलाते हैं, सीढ़ी के दोनों तरफ़ दो हाथी रथ समेत पत्थर के बने हैं, दर्वाजे पर चढ़ने से दूर दूर के जंगल झील और पहाड़ दिखलाई देते हैं। कोस एक के तफ़ावत पर विष्णुकुंजी अथवा विष्णुकांची में वरदराज विष्णु का मंदिर नक़ाशी और कारीगरी में इस से भी बढ़कर है, दर्वाजे के आगे एक खंभा तांबे का सुनहरी मुलम्मा किया हुआ गड़ा है। मंदराज से पैंतीस मील दक्षिण समुद्र के तट पर महाबलिपुर में कई जगह पहाड़ के पत्थर काटकर गुफ़ा मंदिर और मूर्तें वैष्णव मत की पुराने समय की बनी हुई मौजूद हैं, देखने योग्य हैं। वहांवाले कहते हैं, कि शहर पुराना महाबलिपुर बिलकुल समुद्र में डूब गया, और देखने से भी वहां ऐसा मालूम होता है कि समुद्र का जल दिन पर दिन तट की तरफ़ हटता आता है। यदि यही हाल रहेगा तो ये मंदिर इत्यादि भी कुछ दिन में जलमग्न हो जायंगे। मंदराज से अस्सी मील वायुकोन को पहाड़ों में त्रिपतिनाथ का बड़ा प्रसिद्ध मंदिर है। मंदराज से ४० मील नैर्ऋतकोन को पालार नदी के बांएं कनारे वालाजाह नगर बड़े ब्योपार की जगह है।—१२—शेलं अर्काडु के नैर्ऋतकोन। पहाड़ ५००० फ़ुट तक समुद्र से ऊंचे हैं और इसी कारन वहां गर्मी बहुत नहीं पड़ती। सदर मुक़ाम शेलं मंदराज से १७० मील नैर्ऋतकोन है। —१३-तिरुच्चिनापल्ली शेलं के दक्षिण अग्निकोन को झुकता हुआ। सदर मुक़ाम तिरुच्चिनापल्ली मंदराज से १९० मील नैर्ऋतकोन दक्षिण को झुकता कावेरी के दहने कनारे शहरपनाह के अंदर एक पहाड़ी पर बसा है। बाहर बहुत बड़ी छावनी है। शहर के साम्हने कावेरी के एक सुन्दर टापू में जो १३ मील लम्बा होवेगा श्रीरंगजी का बड़ा भारी मंदिर बना है, उसकी बाहर की दीवारका घेरा प्राय चार

मील होवेगा, उसके दर्वाज़े में तैंतीस फुट लंबे और पंद्रह फुट दौर के मोटे पत्थर के खंभे लगे हैं, इस दीवार के अंदर साढ़े तीन तीन सौ फुट के तफ़ावत पर एक के अंदर एक फिर छ दीवारें और हैं, पच्चीस पच्चीस फुट ऊंची, और चार चार फुट मोटी, और उन में चारों दिशा को चार चार दर्वाज़े लगे हैं। निदान इन सात दीवारों के अंदर श्रीरंगजी का मंदिर है, उसके गुम्बज़ पर सुनहरी मुलम्मा किया है, और उन सब दीवारों के बीच बीच में मकान दुकान देवालय और धर्मशाला बनी हैं। एक धर्मशाला इतनी बड़ी है कि जिस में हज़ार खंभे लगे हैं। अंगरेज़ लोग चौथी दीवार के आगे नहीं जाने पाते, पर पंडे लोग श्रीरंगजी की पालकी और छत्र जो निरे सोने के बने हैं और रत्न जटित आभूषण बाहर लाकर दिखला देते हैं।—१४—तंजाउरू जिसे तंजौर अथवा तंजावर और तंजनगर भी कहते हैं, और संस्कृत पुस्तकों में चोलदेश के नाम से लिखा है, तिरुच्चिनापल्ली के पूर्व। बर्दवान के बाद ऐसा उपजाऊ कोई दूसरा ज़िला नहीं है। नहरें जो कावेरी से काट काट कर हर तरफ़ ले गए हैं, उन से खूबही अन्न पैदा होता है, और आबादी में भी इस ज़िले को मानों बंगाले का एक टुकड़ा समझना चाहिये, सदर मुक़ाम तंजौर मंदराज से १८० मील दक्षिण नैर्ऋतकोन को झुकता कावेरी के दहने कनारे दक्षिण में संस्कृत विद्या के लिये बहुत प्रसिद्ध स्थान और पहिले दर्जे का शहर गिना जाता है। क़िला और शहरपनाह अच्छी मज़बूत, खाई गहरी पत्थर में से काटी हुई, मकान सुथरे रास्ते सीधे और चौड़े, मंदिर बहुतायत से, उन में एक मंदिर तो महादेव का क़िले के अंदर १९९ फुट ऊंचा पत्थर का ऐसा उमदा बना है कि शायद उस साथ का शिख-

रदार मंदिर इस मुल्क में दूसरा न निकलेगा, उस मंदिरके सभा-मंडप में एक नंदी काले पत्थर का आठ हाथ ऊंचा बहुत तुहफ़ा बना है। कम्बुकोनम् जिसे कोई कुंभाकोलम् भी कहता है तंजाउरू के पूर्ब्ब कावेरी के मुहानों में। सदर मुक़ाम नागौर अथवा नगर मंदराज से १६० मील दक्षिण समुद्र के तट पर बसा है, ब्यौपार की जगह है, माल के जहाज़ आते हैं। वहां एक चौखूंटा मीनार १५० फ़ुट ऊंचा है, पर मालूम नहीं कि किस काम के लिये बनाया गया था, और किस ने बनवाया। कोम्बुकोनम् अथवा कुंभघोन का पुराना शहर वहां से ३५ मील पश्चिम वायुकोन को झुकता कावेरीकी दो धारा के बीच चोलवंशी राजाओं की क़दीम राजधानी है। वहां चक्रेश्वर के मंदिर के आगे कुंड पर बारहवें बरस अथवा रामस्वामी के लिखने बमूजिब तीसवें बरस माघ के महीने में बड़ा भारी मेला हुआ करता है।-१६-मथुरा, जिसे अंगरेज़ मदुरा और बहुत लोग मीनाक्षी भी कहते हैं, तंजौर के नैर्ऋतकोन। ज़मीन ऊंची नीची दलदल और बहुधा जङ्गल और पर्वतस्थली है। दलदल के समीपस्थ बस्तियों की आब हवा खराब है। वहां एक क़ौम तोतियार है, वे लोग भाई भतीजे चचा इत्यादि सारे कुनबे के लोग मिलकर एकही स्त्री से विवाह कर लेते हैं। सदर मुक़ाम मथुरा मंदराज से २६५ मील दक्षिण नैर्ऋतकोन को झुकता कुमारी अंतरीप से १३० मील व्यागारू नदी के दहने कनारे शहरपनाह के अंदर बसा है। कचहरी के पास एक सुन्दर तालाब है, और उसके मध्य में एक देवालय है। शहर के रास्ते बहुत चौड़े, मंदिर अगले समय के कई बहुत बड़े और ऊंचे बने हैं। महल टूटगये केवल एक गुम्बज़ ३० गज़ चौड़ा बच रहाहै। मथुरा से अनुमान ७५ मील अग्निकोन को रामेश्वर का टापू, जहां

व्यागारू नदी समुद्र से मिली है। उस्से थोड़ी ही दूर पूर्व,तट से एक मील के तफ़ावत पर, ग्यारह मील लम्बा छ मील चौड़ा, हिन्दुओं का बड़ा तीर्थ है। धरती रेतल है, खेती बिलकुल नहीं होती, छोटे छोटे बबूल के जंगलों से घिरा हुआ मंदिर सेतबंध रामेश्वर महादेव का संगीन बहुत बड़ा प्राचीन समय का चमत्कारी बनाहै। मुसलमान बादशाहों की अमलदारी वहां तक न पहुंची इस कारन ढहने से बच गया, दर्वाज़ा इस मंदिर का सौ फ़ुट ऊंचा है और उस में चालीस फ़ुट ऊंचे एक एक पत्थर के दासे लगे हैं, बस इसी से उस मंदिरकी इमारत का हाल दर्याफ़्त करलो। महादेव को सिवाय गंगा के और किसी जगह का जल नहीं चढ़ता। मंदिर से ९ मील समुद्र के तट पर पामबन का बन्दर है, वहां यात्री लोगों की नौका आकर लगती हैं, सड़क वहां तक बिलकुल फ़र्श की हुई, गली बाज़ार चौड़े, धर्मशाला अच्छी अच्छी, वहां के पंडे ने अपनी हवेली के हाते में अंगरेज़ी चाल का एक बंगला तैयार किया है, उस पर से दूर दूर तक समुद्र, और लंका की तरफ़ वे पत्थर और पहाड़, जिसे हिंदू लोग रामचन्द्र का बनाया पुल कहते हैं, पानी में एक काली सी लकीर की तरह दिखलाई देता है। पहले वह सेत समूचा था, सन् १४८४ तक लोग उसके ऊपर से आते जाते थे, पर अब समुद्र की लहरों के धक्के से जा बजा टूट गया है। हिंदू लोग इस सेत को करामात समझते हैं, पर हम उस में कोई बात करामात की नहीं देखते, क्योंकि लंका और हिन्दुस्तान के बीच जो साठ मील चौड़ी खाड़ी पड़ी है, पानी उस में ऐसा छिछला है, कि जहाज नहीं निकल सकते, घूमकर अर्थात् लंका के पूर्व तरफ़ से जाते हैं। रामेश्वर के टापू और हिन्दुस्तान के बीच, और मन्नारू के टापू और लंका

के दर्मियान, जो सेत टूटने से छोटी मोटी नाव निकल जाने के रस्ते होगये, वहां भी पानी पांच फुट से अधिक गहरा नहीं रहता, और मन्नारु और रामेश्वर के बीच तो पानी इतना कम है, कि जब समुद्र की लहर हटती है, तो बिलकुल रेता दिखलाई देने लगता है। निदान इसी रेते के बीच में एक पहाड़ का करारा सा निकल आया है, और उस पर बड़े बड़े ढोके पत्थरों के पड़े हैं, उसी को वहांवाले रामचन्द्र का सेत कहते हैं, उसके अंत से लंका के तट से समीप मन्नारु का टापू १८ मील लंबा और अढ़ाई मील चौड़ा है, गढ़ भी उस में एक बना है, और वह समुद्र की खाड़ी जो लंका और हिन्दुस्तान के बीच में पड़ी है, उसी टापू के नाम से पुकारी जाती है।—१७—तिरुनेल्लुवलि मथुरा के दक्षिण नैर्ऋतकोन को झुकता। इस ज़िले में पर्बत कम हैं, पर जंगल उजाड़ बहुत, बिशेष करके पूर्ब भाग में। सदर मुक़ाम तिरुनेल्लुवलि मंदराज से ३५० मील दक्षिण नैर्ऋतकोन को झुकता कुमारी अंतरीप से ५९ मील है। तिरुनेल्लुवलि से पूर्ब समुद्र के तट पर तूतिकोरिन में ग़ोतेख़ोर लोग सीप से मोती निकालते हैं।—१८—कोयम्मुत्तूर मथुरा से वायुकोन। यह ज़िला प्राय ९०० फ़ुट समुद्र से ऊंचा होगा, पर सब जगह बराबर नहीं कहीं इस में न्यून और कहीं अधिक। जंगल उजाड़ बहुत है। लोहे और गोदन्त की खान हैं। यहां के लोग सांड़ की पूजा करते हैं, और जब सांड़ मरते हैं तो बड़ी धूम धाम से गाड़े जाते हैं। सदर मुक़ाम कोयम्मुत्तूर मंदराज से २७० मील नैर्ऋतकोन है। उतकमंद वहां से ४० मील वायुकोन नीलागिरि के पहाड़ पर समुद्र से कुछ ऊपर ७००० फ़ुट ऊंचा साहिब लोगों के हवा खाने की जगह है। बहुत सी कोठी और बंगले बन गये हैं, गर्मी वहां बिलकुल नहीं व्यापती। पास ही उन

पहाड़ों में एक झील भी सुंदर छ सात मील के घेरे में पानी से भरी है। ऊपर लिखे हुए ये सातों ज़िले अर्थात् शेलं से कोयम्मुत्तूर तक द्राविड़ देश में गिने जाते हैं, और इसी द्राविड़ का नाम शास्त्र में दण्डकारण्य भी लिखा है।—१९–मलीबार जिसे मलय और तिरिया राज और केरल भी कहते हैं, और कोयम्मुत्तूर के पश्चिम घाट उतर कर समुद्र तक चला गया है। इस ज़िले में बन और पर्वत बहुत हैं, और नदी नाले भी इफ़रात से मिट्टी लाल सुरखी की तरह, किसी किसी पहाड़ी नदीका बालू धोने से सोना भी हाथ लगताहै। यहां के ज़मींदार इकट्ठा होकर गांवमें नहीं बसते, बरन अपने अपने खेत के पास बहुधा अलग अलग मकान बनाकर रहते हैं, पर मकान इनके सुथरे और साफ़ होते हैं। बारबर्दारी यहां अकसर मज़दूर करते हैं, बैल लादने लाइक़ नहीं होते। ज़ात का बड़ा बचाव है, ब्राह्मण शूद्र का स्पर्श नहीं करते बरन उन्हें अपने समीप भी नहीं आने देते, पर नायर अर्थात् शूद्र जाति की स्त्रियों का रखना ऐब नहीं समझते। यहां नायर लोग दस बरस की उमर में शादी करते हैं, पर स्त्री को अपने घर नहीं बुलाते, खाने पहनने को दिया करते हैं, और वह अपने बाप के घर रहा करती और जिस मर्द को चाहती है अपने पास बुलाती है, और यही कारन है कि वहां के आदमी अपने बाप का नाम नहीं जानते, और बहन के पुत्र को वारिस बनाते हैं। मा घर की मालिक है, और माके पीछे बड़ी बहन। जब कोई मरता है तो उसकी बहनों के लड़का लड़की उसका माल असबाब बांट लेते हैं। हक़ीक़त में बेवक़ूफ़ हैं वहां वे मर्द, जो बिवाह करते हैं। औरतें सुंदर होती हैं, पर अफ़सोस कि इतनी बेवफ़ा। इस ज़िले के आदमी प्राय डेढ़ लाख क्रिस्तान हैं। यह भी याद रखना चाहिये कि केरल

देश, जिसका हमने वर्णन किया है। घाटों के नीचे नीचे उत्तर तरफ़ चंद्रगिरि नदी तक चला गया है, और कल्लीकोट और तेल्लिचेरी ये दोनों ज़िले भी जिन का आगे वर्णन होता है इसी देश में गिने जाते हैं, और यही सारी बातें उन में भी मौजूद हैं। सदर मुक़ाम इस जिले का कोच्ची मंदराज से ३५५ मील नैर्ऋतकोन समुद्र के तट पर बसा है।—२०—कल्लीकोट मलबार के उत्तर। सदर मुक़ाम कल्लीकोट मंदराज से ३३५ मील नैर्ऋतकोन पश्चिम को झुकता समुद्र के तट पर बसा है। यह वही जगह है जहां पहले ही पहल फ़रंगियों का जहाज़ आकर लगा था।—२१—तेल्लिचेरी कल्लीकोट के उत्तर। सदर मुक़ाम तेल्लिचेरी अथवा तालचेरी मंदराज से ३४० मील पश्चिम नैर्ऋतकोन को झुकता समुद्र के तट पर बसा है। —२२—मंगलूर अथवा कानड़ा, जिसे वहांवाले तुलव कहते हैं, तेल्लिचेरी के उत्तर। इस में मलबार से भी अधिक पहाड़ हैं। गाय बैल वहां के बड़ी बकरी से ज़ियादः बड़े नहीं होते। ज़मींदार इस ज़िले में भी मलबार की तरह अपने खेतों के पास घर बनाकर रहते हैं। वहां जैन लोग बहुत हैं और क्रिस्तान भी अधिक हैं। टीपू के बाप हैदर ने बहुतों को क़तल किया था। कहते हैं कि ६०००० क्रिस्तान पकड़ के मैसूर को ले गया था, उन में से केवल १५००० लौटे। सदर मुक़ाम मंगलूर, जिसे कोडिआल बंदर भी कहते हैं, मंदराज से ३७५ मील पश्चिम समुद्र के तट पर है।—२३—हौनोर मंगलूर के उत्तर गोवे तक, जो पुर्टगीज़ों (१) के दख़ल में है। यह भी ज़िला तुलव देश में गिना जाता है, और सारी बातें वैसी ही रखता है॥

(१) पुर्टगाल के रहनेवालों को पुर्टगीज़ कहते हैं॥

बम्बई हाता

अब बम्बई हाते के ज़िले लिखे जाते हैं —१—धारवार गोवे के पूर्ब । सदर मुक़ाम धारवार, जिसे मुसल्मान नसरावाद कहते हैं, बम्बई से २८५ मील दक्षिण अग्निकोन को झुकताहै । धारवार से पचास मील उत्तर गोकाक के पास गतपर्ब नदी एक जगह पहाड़ में १७४ फ़ुट ऊंचे पत्थर से चादर के तौर पर गिरती है, बरसात में इस चादर की चौड़ान १६९ गज़ से कम नहीं होती, महादेव का वहां एक मंदिर है, और जंगल भी आस पास में सुंदर है, वह स्थान उदासीन जनों के मन को बहुत लुभाता है ।–२– बेलगांव धारवार के वायुकोन । आब हवा अच्छी । सदर मुक़ाम बेलगांव बम्बई से २४५ मील दक्षिण अग्निकोन को झुकता । क़िला मज़बूत बनाहै । खंदक़ पहाड़ में से कटी है । सरकारी फ़ौज की छावनी है ।–३— कोकण, जिसे कोङ्कण, और कङ्कन भी कहते हैं, बेलगांव के वायुकोन। जंगल पहाड़ और नदी नालों से भरा है । सदर मुक़ाम रत्नागिरि बम्बई से १४० मील दक्षिण समुद्र के कनारे है ।–४–ठाणा कोकण के उत्तर । सदर मुक़ाम ठाणा साष्टी के टापू में, जिसे वहांवाले झालता और शास्तर और अंगरेज़ सालसिट कहते हैं, बम्बई से बीस मील ईशानकोन उत्तर को झुकता हुआ समुद्र के तट पर बसा है । क़िला भी बना है । २०० गज़ चौड़ी समुद्र की खाड़ी उस टापू को ज़मीन से जुदा करती है । ठाणा से कोस तीन एक पर किनेरी के दर्मियान इस टापू में किसी समय पहाड़ काटकर जो बौध मत वालों ने गुफ़ा और मंदिर बनाये थे, उन में दो मूर्त्ति बुध की बीस बीस फ़ुट ऊंची अब तक मौजूद हैं, और एक खंभे पर कुछ पुराने हर्फ़ भी खुदे हुए हैं ।—५—बम्बई का टापू साष्टी टापू के दक्षिण ।

थोड़े दिन हुए कि यह टापू पानी और जंगल झाड़ियों से ऐसा छा, रहा था, कि अगले लोग उसकी आब हवा की खराबी यहां तक लिख गये हैं कि इस टापू में आकर कोई मनुष्य तीन बरस से अधिक न जीयेगा, अब वही बम्बई सरकार के प्रताप से ऐसा आबाद और साफ़ हो गया कि आब हवा सफ़ाई दौलत और पार्सियों की चा-लाकी अक़ल और अच्छे स्वभाव के कारन बहुत लोग कलकत्ते से भी उसे श्रेष्ठ समझते हैं। कोई तो कहता है कि वहां जो बम्बादेवी है उसी के नाम पर इस टापू का नाम बम्बई रखा गया, और कोई इस का असल नाम बमूबहिया बतलाता है। बमूबहिया का अर्थ पुर्ट-गाली भाषा में अच्छी खाड़ी है। पहले यह टापू पुर्टगीज़ों के दख़लमें था, सन् १६६१ में जब उनके बादशाह ने अपनी लड़की इंगलिस्तान के बादशाह को ब्याही तो यह टापू यौतक में दिया। पहले ये दोनों टापू जुदा जुदा थे, और इन के बीच में चार सौ हाथ समुद्र की खाड़ी थी, दक्षिण तरफ़ का टापू ९ मील लंबा और अढ़ाई मील चौड़ा था, और उत्तर तरफ़ साष्टी का टापू १८ मील लम्बा और १३ मील चौड़ा था, पर अब उन दोनों के बीच में बंध बंधजाने से एक ही हो गए। धरती इन टापुओं की पथरीली है, इमारत में काठ बहुत लगाते हैं, अंगरेज़ों की कोठियों में भी बहुधा काठ के खंभे और तख्तों का फ़र्श रहता है। सिपाही पलटनों के यदि नाप में पांच फ़ुट तीन इंच से ऊंचे नहीं होते, पर लड़ाई में मिहनती हैं। बम्बई हाते के गवर्नर कमांडरिंचीफ़ बोर्ड आफ़ रेवन्यू सुप्रिम कोर्ट और सदर निज़ामत और दीवानी के जज इसी जगह में रहते हैं। किला मज़बूत और इस ढब का बना है कि समुद्र तीन तरफ़ से मानो उसकी खाई हो गया है। ज़ुबान यहां गुजराती बहुत बोलते हैं, और उस से उतर

कर मरहठी और कोकणी, और उन से उतर कर फिर और सब बोली जाती हैं। यहां पारसी लोग बहुत रहते हैं, और बड़े धनाढ्य हैं। औरतें उनकी अकसर पतिब्रता, कस्बी उस क़ौम में कोई नहीं। जब ईरान में मुसल्मानों का अमल हुआ तो इन के पुरखा वहां से भागकर यहां आ बसे। ये लोग अब तक उसी तौर से सूर्य्य और अग्नि को पूजते हैं, सबेरे नित्य सूर्योदय के समय सबके सब समुद्रके कनारे मैदानमें जाकर जो सूर्यको सिजदा करते हैं, वह कैफ़ियत देखने लाइक़है। इन लोगोंके दख़मे अर्थात् मुर्दे रखने के मकान वहां पांचसे ऊपर हैं, सब से बड़ा दख़मा चौफेर दीवार से घिरा अनुमान पचास गज़ के घेरे में एक खुला हुआ मकान है, और उसके बीच में एक कूआ है, जो पारसी मरता है उसे एक चादर में लपेट कर उस मकान के अंदर रख आते हैं, निदान मांस तो उसका कव्वे और गिध नोच ले जाते हैं, हड्डियां जो रह जाती हैं उन्हें उस कूए में डाल देते हैं। एक कुत्ता भी वहां बंधा रहता है, और उनका यह निश्चय है कि शैतान उस मुर्दे की जान पकड़ने को वहां आता है और वह कुत्ता भूंक कर उसे भगा देता है। यह भी उन का मत है कि जिस मुर्दे की दहनी आंख गिध पहले खावे वह अच्छा है, और जिस मुर्दे के मुंह में से रोटी जो मरने के बाद रख देते हैं कुत्ता खींच ले जावे उसको स्वर्ग प्राप्त होने में कुछ संदेह नहीं। कूए को हड्डियों से साफ़ करने के वास्ते उस मकान के नीचे से एक सुरंग लगी रहती है, कि जिस में वह कूआ भरने न पावे। अमीर लोग अपने कुनबे के लिये बहुधा ऐसा एक जुदा मकान बनवा रखते हैं। बम्बई कलकत्ते से ९५० मील पश्चिम ज़रा नैर्ऋतकोन को झुकता और सड़क की राह ११८५ मील पड़ता है। बम्बई के क़िले से सात मील और कोकण के क-

नारे से पांच मील गोरापुरी का टापू, जिसे अंगरेज एलिफंटा आइल कहते हैं, छ मील के घेरे में है। एलीफ़ंट अंगरेज़ी में हाथी को कहते हैं, और वहां उतरने की जगह पहाड़ पर एक पत्थर का हाथी इतना बड़ा कि सच्चे हाथी से तिगुना ऊंचा बना था, इसी कारन यह नाम रहा, अब वह हाथी टूट गया है। इस टापू में किसी समय पहाड़ कट कर अद्भुत मंदिर बने हैं। बड़ा मंदिर उस में मिले हुए मकानों के साथ २२० फुट लम्बा और १५० फुट चौड़ा है, और २६ उसमें खंभे हैं, बीच में एक बहुत बड़ी त्रिमूर्ति १५ फुट ऊंची रखी है, अर्थात् एकही मूर्तिमें ब्रह्मा विष्णु और शिव तीनों के चिहरे बनाये हैं, दहनी तरफ़ एक मकान में महादेव की अर्धंगी मूर्ति १६ फुट ऊंची बनी है, सिवाय इन के और भी बहुत मूर्तें इन त्रिदेव और इन्द्रानी इत्यादि की बनी हैं। जगह देखने लाइक़ है पर बहुत बेमरम्मत, कहीं कहीं टूट भी गई हैं। जहां किसी जमाने में ब्राह्मणों के सिवाय कोई पांव भी रखने न पाता होगा, वहां अब सांप बिच्छुओं की दहशत से कोई जाना भी नहीं चहता।—६-पूना ठाणा के पूर्व। पर्बत और नदी नाले उस में बहुत हैं। आब हवा अच्छी है। ज़मींदार क़द के नाटे होते हैं। सदर मुक़ाम पूना बम्बई से ७५ मील अग्नि कोन समुद्र से २००० फुट ऊंचा एक पटपर मैदान में मूता नदी के दहने कनारे बसा है। बाज़ार चौड़ा, मकानों में लकड़ी का काम बहुत, बस्ती लाख आदमी से ऊपर, साड़ी रेशमी वहां अच्छी बुनी जाती है। २५ मील वायुकोनको एक खड़े पहाड़पर लोहगढ़ का क़िला मज़बूत बना है, और पानी का उस में बहुत आराम है। पूना से ३० मील वायुकोन उत्तर को झुकता कारली गांव के पास पहाड़ काट कर बौध मत के मंदिर जो बने हैं, वे देखने लाइक़ हैं, बड़ा मंदिर

१२६ फुट लम्बा और ४६ फुट चौड़ा है, उसमें बुध की मूरतें और स्त्री पुरुष और हाथियों की सूरतें तरह बतरह की खोदी हैं। पूना के दक्षिण नैर्ऋतकोन को झुकता अनुमान ५० मील और समुद्र के तटसे २५ मील पश्चिम घाट में महाबलेश्वर का पहाड़ जो समुद्र से ४५०० फुट ऊंचा है, साहिब लोगों के हवा खाने की जगह है। बलंदी के बाइस सदा शीतल रहा करताहै, बहुत से बंगले बन गये हैं, गर्मी भर बम्बई हाते के बहुतेरे साहिब बरन गवर्नर बहादुर भी उसी जगह आकर निवास करते हैं, कृष्णा नदी उसी जगह से निकली है, इसलिये हिन्दू लोग उसे तीर्थस्थान मानते हैं।—७—सितारा पूना के दक्षिण। सदर मुक़ाम सितारा बम्बई से १३० मील अग्निकोन दक्षिण को झुकता प्राय आठ सौ फुट ऊंचे खड़े पहाड़ पर मज़बूत क़िला है, और पहाड़ के नीचे शहर बस्ता है, शहर से कोस एक पर छावनी है। सितारे से ३० मील दक्षिण नैर्ऋतकोन को झुकता पश्चिम घाट के २००० फुट ऊंचे एक खड़े पहाड़ पर वास्मोटाह नाम एक मज़बूत क़िला बना है। सितारे से १०० मील पूर्व अग्निकोन को झुकता भीमा नदी के दहने कनारे पंडरपुर हिंदुओं का तीर्थ है, वहां वैष्णवी मत का एक मंदिर बना है। सितारे से १४० मील अग्निकोन बीजापुर अथवा विजयपुर शहरपनाह के अंदर बसा है, वह किसी समय में दखन के बादशाहों की राजधानी था, और फिर दिल्ली के तहत में एक सूबा रहा। उस वक़्त उस में ९८४००० घर और १६०० मसजिद बतलाते हैं, यद्यपि यह केवल बढ़ावे की बात है, और कदापि बुद्धिमानों के मानने योग्य नहीं, तथापि उसके आस पास दूर दूर तक खंड़हर और मकानों के निशान जो अब तक मौजूद हैं देखने से यह बात साबित है कि वह शहर

किसी ज़माने में बहुत बड़ा बस्ता था । इस शहर का गिर्दनवाह दिल्ली के गिर्दनवाह से बहुत मिलताहै, जैसे वहां शहर के बाहर कुतब साहिब तक हर तरफ़ खंड़हर और मक़बरे दिखलाई देते हैं, उसी तरह विजयपुर के गिर्द भी टूटे फूटे मकान और मक़बरे नज़र पड़ते हैं । दूर से उसके गुम्बज़ और मीनारों के नज़र आने पर यही मालूम होता है कि किसी बहुत बड़े शहर में पहुंचे पर दर्वाज़े के अंदर क़दम रखो तो हर तरफ़ खंड़हर दिखलाई देने लगते हैं, क़िला टूटा, महल फूटा, मस्जिद मक़बरे ढहे, दूकान मकान गिरेहुए, दीवार बेमरम्मत, फाटक सड़े गले, शहरपनाह का घेरा आठ मील का, दर्वाज़े सात, मुहम्मदशाह का मक़बरा जिसका गुम्बज़ १५० फ़ुट बुलंद, और जिसमें आवाज़ ऐसी गूंजती है कि मानो दूसरा आदमी बोलता है, नौबाग़ की बावली, जामे मस्जिद, इबाराहीम आदिलशाह की मस्जिद जो सत्तर लाख रुपया लगकर बनी थी, और मक़बरा जिस के गिर्द सारी क़ुरान इस खूब सूरती से खुदी है और उस पर सोने का काम और रंगामेज़ी ऐसी की है कि शायद अच्छी अच्छी किताबों का लोहपर भी वह काम न मिलेगा, देखने लाइक़ है । बाज़ार अब भी, जो कुछ कि बाक़ी रह गया है, तीन मील लम्बा पचास फ़ुट चौड़ा और बिलकुल फ़र्श किया हुआ है । एक जगह में, जिसे हलालखोर की बनाई हुई बतलाते हैं, पत्थर की ज़ंजीरें लटकती हैं, लोहे की सांकल के तौर पर बनी हुई, और जोड़ उसमें कहीं नहीं । क़िले पर मलिकुलमैदान नाम एक पीतल की तोप रखी है कि जिस में तैंतीस मन तीन सेर का गोला समाता है, हम जानते हैं कि इतनी बड़ी तोप सारी दुनिया में दूसरी न निकलेगी ।—८—शोलापुर सितारा के पूर्ब । धरती उपजाऊ । सदर मुक़ाम शोलापुर बम्बई

से २३० मील अग्निकोन शहरपनाह के अंदर है। क़िला मज़बूत और छावनी बड़ी है।—९—अहमदनगर पूना के ईशानकोन। धरती ऊंची और पहाड़ी मौसिम मोतदल। सदर मुक़ाम अहमद नगर, जो बादशाही अमल्दारी में उसी नाम के सूबे की राजधानी था, बम्बई से १२५ मील पूर्व शहरपनाह के अंदर बसा है। क़िला पाव कोस के तफ़ावत पर संगीन बना है।—१०—नासिक अहमदनगर के वायुकोन। सदर मुक़ाम नासिक बम्बई से ९५ मील ईशानकोन को गोदावरी के बांएं कनारे उसके उद्गम के पास बसा है। हिंदुओं का तीर्थ है। ब्राह्मण बहुत बसते हैं। कहते हैं कि रामचन्द्र ने इस जगह शूर्पनखा की नाक काटी थी इसी कारन इसका नाम नासिक रहा। शहर से पांच मील पर एक पहाड़ में पत्थर काटकर गुफ़ा की तरह पुराने समय के बौधमती मंदिर बने हैं, उन में कुछ अक्षर भी प्राचीन खुद रहे हैं। नासिक से २० मील नैर्ऋतकोन को त्रिम्बक का क़िला पहाड़ के ऊपर मज़बूत बना है, और नीचे शहर बस्ता है। गोदावरी इसी पहाड़ से निकली है, हिंदुओं का तीर्थस्थान है।—११—खानदेश नासिक के उत्तर और सातपुड़ा पहाड़ के दक्षिण जो भीलों के रहने की जगह है। वे नाटे काले प्राय नंगे भागलपुर के पहाड़ियों से मिलते हुए धनुषबान लिये रहते हैं, और सब कुछ खाते पीते हैं, मुर्दों को ज़मीन में गाड़ते हैं, और ज़ात पूछो तो अपने तईं हिंदू असल रजपूतबचा बतलाते हैं। यद्यपि इस जिले में जंगल पहाड़ और मैदान तीनों हैं, परंतु निर्मल जल के सोते जो पहाड़ों से निकलकर तापी नदी में गिरते हैं बहुत शोभायमान हैं। बादशाही वक़्त में यह एक सूबा गिना जाता था। सदर मुक़ाम धूलिया बम्बई से २०० मील ईशानकोन को पौंजरा नदी के कनारे

बसा है। धूलिया से १०० मील पूर्व ईशानकोन को झुकता असीरगढ़ अथवा आसेरगढ़ का क़िला ७५० फ़ुट ऊंचे पहाड़ पर, जिस में १०० फ़ुट तो ऊपर का निरा दीवार की तरह खड़ा है, ११०० गज़ लंबा ६० गज़ चौड़ा निहायत मज़बूत बना है, पानी भी उसके अंदर बहुत है। इन ऊपर लिखे हुए ज़िलों में, जो बम्बई के गवर्नर के ताबे हैं, एक तो वह मुल्क ही दुर्गम है, और तिस में मरहठों के वक्त़ में पहाड़ों के शिखर पर क़िले इतने बनाये थे, कि एक आदमी ने एक जगह खड़े होकर एक दिन के रस्ते के अन्दर बीस किले गिने, पर सरकार ने बे काम और लुटेरों की पनाह समझ कर बहुत से तुड़वा दिये, और बाक़ी वे मरम्मत पड़े हैं।—१२—सूरत खानदेश के पश्चिम। पूर्व और दक्षिण पहाड़ बाक़ी मैदान, शहर सूरत का बम्बई से १७५ मील उत्तर तापी के बांए कनारे पर छ मील के घेरे में शहरपनाह के अंदर बसा है। तीन तरफ़ शहरपनाह और चौथी तरफ़ तापी से घिरा है। नदी के कनारे एक छोटा सा क़िला भी है। वहां जैनियों ने जानवरों के लिये एक अस्पताल बनायाहै, जिस में जूं और खटमलों को जो उस में छोड़े जाते हैं खून पिलाने के लिये फ़क़ीरों को कुछ देकर इस बात पर राज़ी कर लेते हैं कि वे वहां रात भर चारपाई से बंधे हुए पड़े रहें और जूं खटमल उन्हें काटा करें। किसी वक्त़ में यह शहर जब सूबे खानदेश की राजधानी था बड़ी रौनक़ पर था, बम्बई के बसने से उसकी रौनक़ घट गई, अब भी डेढ़ लाख से ऊपर आदमी बसते हैं। छावनी बहुत बड़ी है। यहां तक अर्थात् नर्मदा के दक्षिण जो ज़िले बम्बई हातेके ताबे हैं शास्त्र में प्राय इन सब को महाराष्ट्र देश कहते हैं।—१३—भडौंच सूरत के उत्तर। बम्बई हाते में यह ज़िला बहुत आबाद और उपजाऊ

गिना जाताहै। सदर मुकाम भड़ौंच जिसका असली नाम भृगुगोश था बम्बई से २१५ मील उत्तर और समुद्र से २५ मील नर्मदा के दहने तट एक ऊंचे से स्थानमें बसाहै, पर अब कुछ वीरान और बेरौनक़सा है। यहांभी जैनियोंने जानवरों के लिये अस्पताल बनाया है, और उसका नाम पिंजरापौल रखाहै, जो जानवर मांदा और शक्तिहीन होता है उसे वहां रखते और पालते हैं।—१४-खेड़ा भड़ौंच के उत्तर गाइकवाड़की अमल्दारी से बहुत बेडौल मिलचुल रहा है, अकसर इसके हिस्से चारों तरफ़ ग़ैर अमल्दारियों से घिर गएहैं। सदर मुक़ाम खेड़ा बम्बई से २८० मील उत्तर दो छोटी छोटी नदियों के संगम पर शहरपनाह के अंदर बसा है। शहर के अंदर जैनियों का एक बड़ा मन्दिर है, लकड़ी का काम उस में अच्छा किया है। कोस एक के तफ़ावत पर नदी पार छावनी है।—१५-अहमदाबाद खेड़े के उत्तर। शास्त्र में सौराष्ट्र इसी देश को लिखा है लोग अब सोरठ कहते हैं। सदर मुक़ाम अहमदाबाद बम्बई से ३०० मील उत्तर सांभरमती के बाएं कनारे शहर पनाह के अंदर बसा है। किसी जमाने में यह शहर इसी नाम के सूबे की बहुत आबाद राजधानी था, तीस मील के घेरे में अब तक भी पुरानी इमारतों के निशान मौजूद हैं, मरहठों ने तबाह कर दिया था, अब फिर सरकार के साये में आबाद होता चला है। लाख आदमी से ऊपर बसते हैं। वहां की जामेमसजिद में यह एक अजीब बात है कि जो उसकी मिहराब पर धक्का लगाओ तो मीनार थरथरा उठे और एक मसजिद निरे संगमर्मर की बनी है, उस में सीप चांदी हाथीदांत और क़ीमती पत्थरों का काम किया है। किसी जमाने में कमख़ाब वहां का मशहूर था, पर अब वैसा और उतना नहीं बनता।—१६-सिंध समुद्र से सिंधु नदी के दोनों

कनारे बहावलपुर की अमल्दारी तक चला गया है। मुंज-अंतरीप इस इलाक़े की समुद्र के तटमें पश्चिम सीमा है। इसको जिला न कह कर एक कमिश्नरी कहना चाहिये, क्योंकि उसके लिये एक कमिश्नर मुक़र्रर है, और कमिश्नरके नीचे तीन असिस्टंट बतौर कलेक्टर मजिस्ट्रेट के तीन जिलों में, अर्थात् हैदराबाद कराची और सिकारपुर में; काम करते हैं। इस इलाक़े में उजाड़ और रेगिस्तान बहुत है, और कहीं कहीं छोटे छोटे पहाड़भी हैं, परन्तु सिंधु नदी की तटस्थ धरती खूब उपजाऊ है। लोहे की खान है। मुसल्मान जट और बलूची बहुत बस्ते हैं। बलूची वहां के बड़े बदज़ात हैं। किसी समय यह मुल्क बहुत आबाद था, निशान मकान और क़बरों के अकसर जगह मिलते हैं, पर अब तो मुद्दतों की बद अमली से यह हालहो गया है कि बहुधा मंज़िलों तक गांव भी नहीं मिलते। ये लोग सिक्खों की तरह बाल बढ़ाते हैं, और पगड़ी इतनी बड़ी शायद दुनिया में कोई नहीं बांधता, कितनों ही की पगड़ी अस्सी गज़ से भी अधिक लंबी होती है, औरतें सुन्दर, फ़क़ीर बहुत। सदर मुक़ाम हैदराबाद सिन्धु की उस धाराके जिसका नाम फुलाली है दहने कनारे पर बसा है। क़िला एक पहाड़ी पर पक्का बना है। सिन्धु की बड़ी धारा वहां से तीन मील पश्चिम हैं छ मील उत्तर मियानी के पास सन् १८४३ में जेनरल नेपियर साहिब ने २८०० सिपाहियों से बाईस हज़ार बलूचियों को शिकस्त दी थी। हैदराबाद से अनुमान पचास मील दक्षिण ज़रा नैर्ऋतकोन को झुकता सिंधु के दहने कनारे पर ठट्ठे का पुराना शहर है, किसी समयमें निहायत आबाद और बड़े व्यौपार की जगह था, पर अब उसमें बीसहज़ार आदमीभी नहीं निकलेंगे, हर तरफ़ मुसल्मानों के मक़बरे और खंडहरों के ढेर नजर पड़ते हैं। अब

उस शहर की आबादी के बदल पचास मील पश्चिम हटकर करांची बंदर ने रौनक पाई है, और दिन पर दिन बढ़ता जाता है, माल के सब जहाज़ अब उसी में आकर लगते हैं। करांची से ९ मील ईशानकोन को गर्म पानी के सोते हैं। हैदराबाद से २१० मील दक्षिण शिकारपुर भी बड़े व्यापार की जगह है। हैदराबाद से दो सौ मील उत्तर ईशानकोन को भुकता सिंधु के एक टापू में छोटी सी पहाड़ी पर बकर अथवा भक्खर का क़िला है, दीवार उस में कच्ची पक्की ईंटों की दुहरी बनी हैं, क़िले के दोनों तरफ़ अर्थात् सिंधु के दोनों कनारों पर रोड़ी और सक्कर दो शहर बस्ते हैं, रोड़ी बांएं कनारे प्राय आठ हज़ार आदमियों की बस्ती बे रौनक और टूटा फूटा सा है, और सक्कर उस से भी घटकर है। हैदराबाद के अग्निकोन को जहां लोनी नदी रन में गिरती है उसी के पास दक्षिण रन और उत्तर रेगिस्तान के जंगल से घिरा हुआ पार्कर के परगने में मगर नाम पांच सौ झोपड़ों की बस्ती है, किसी समय में वहां १०००० आदमी बस्ते थे, निदान यह जगह जैनियों के तीर्थ की है, बहुतेरे यात्री उस रेगिस्तान के सफ़र की तकलीफ़ें उठा कर वहां गौड़ी पार्श्वनाथ की मूर्ति के दर्शन को आते हैं, मूर्ति वह सफ़ेद पत्थर की हाथ भर से कुछ अधिक ऊंची है, माथे और आंखों में जवाहिर जड़ा है, गौड़ी इस वास्ते नाम रहा कि पहले वह बंगाले में गौड़ के दर्मियान थी। यह मूर्ति वहां के ज़मीदारों के इख़्तियार में है, जमीन में गाड़कर अथवा बालू में छुपा रखते हैं, जब यात्रियों से अच्छी तरह पुजा लेते हैं तब दर्शन कराते हैं, पर रास्ते की तकलीफ़ से अब वहां यात्री लोगों का जाना कम हो गया, इसलिये उन्होंने यह क़ाइदा बांधा है कि जब यात्रियों के आने की ख़बर सुनते हैं तो अकसर मूर्तिही को वहां से तीन

मंजिल परे मेंड़वाड़े गांव में जो रन के तट पर बसा है उठा लाते हैं ॥

हिन्दुस्तानी अमल्दारी

निदान जितने मुल्क में सरकार अंगरेज की अमल्दारी है, अर्थात् जिसका पैसा सरकारी खजाने में आता है, और जहां दीवानी फौजदारी की कचहरियां सरकार की तरफ़से मुक़र्रर हैं, उसने का तो वर्णन हो चुका, अब जो शेष रहा वह हिन्दुस्तानियों के क़ब्जे में है। यद्यपि उन में से बहुतेरे राजा और नव्वाब पुराने अहदनामों के अनुसार नाम के लिये स्वाधीन कहलाते हैं, परन्तु वस्तुतःसब के सब सरकार की दी हुई जागीरें खाते हैं, क्योंकि राज्य की जड़ सेना है, सो किसी के पास नहीं, एक नयपालवाले ने पंद्रह हजार जंगी सिपाही रख छोड़े हैं, इसी कारन हम अब भी उसको स्वाधीन राजा पुकारते हैं। बहुत ग्रंथकारों ने इन रजवाड़ों को पुराने अहदनामों के बमूजिब स्वाधीन और पराधीन मानकर उन्हीं अहदनामों के लिखे हुए दर्जों के अनुसार वर्णन किया, पर जो कि अहदनामे बहुधा बदलते रहते हैं और शर्तें उनकी समय के फेरफार से बढ़ा घटा बढ़ा करती हैं, हम उस नियम को छोड़कर पहले उत्तराखण्ड और फिर मध्यदेश और उस्से पीछे दक्षिण के रजवाड़ों को लिखते हैं, पर जिन सब रजवाड़ों का अहवाल आगे लिखा जाता है, उनके सिवाय यदि किसी जगह का कोई राजा नव्वाब या रईस सुझे में आवे, तो समझना चाहिये कि वह जमींदार या मुआफ़ीदार है, अर्थात् या तो सरकार अथवा किसी और राजा को कर देता है, या उनकी दी हुई मुआफ़ी खाता है, दीवानी फ़ौजदारी का इख्तियार कुछ नहीं रखता, और उनके इलाक़ों का जिकर नहीं ऊपर लिखे

हुए जिलों में आगया, या नीचे लिखे हुए रजवाड़ों में आ जावेगा। निदान उत्तराखण्ड में—१—राज नयपाल है। उसे पश्चिम में काली नदी जो मानसरोवर के दक्षिण हिमालय से निकल सरयू में गिरती है कमाऊं के सरकारी इलाक़े से, और पूर्व में कंकई नदी जो हिमालय से निकल दूसरी नदियों से मिलती मिलाती गंगा में जा गिरती है शिकम के राज से जुदा करती है, उत्तर में उस के हिमालय पार तिब्बत का मुल्क है, और दक्षिण में पहाड़ों से नीचे कुछ दूर तो अवध का इलाक़ा और फिर सूबै बिहार और बंगाले के सरकारी ज़िले हैं। ४६० मील लंबा और ११५ मील चौड़ा है, बिस्तार उसका ५४५०० मील मुरब्बा होवेगा। दक्षिण तरफ़ पहाड़ोंके नीचे दस बारह कोस जो मैदान का मुल्क है, उसे तराई कहते हैं। तराई के ऊपर अर्थात् उत्तर को, दस दस बारह बारह कोस तक पहाड़ हैं, उन पहाड़ों को चढ़कर बड़ी बड़ी लंबी चौड़ी दूनें मिलती हैं, ऐसी कि जिन में कोसों तक सिवाय मिट्टी के पत्थर देखने को भी नहीं, फिर उनके उत्तर हिमालय के बर्फ़ी पहाड़ हैं। जबर्जद सोनामखी लोहा सीसा तांबा रांगा गंधक हरिताल और सिन्दूर की खान है। नदियों का बालू धोने से कुछ सोन भी मिल जाताहै। दूध वहां गाय का बहुत मीठा और चिकना होता है। रहनेवाले असली वहां के सूरत में चीनियों से मिलते हैं राजा और ठाकुर लोग अपने तईं उदयपुर के राना की औलाद में समझते हैं। मकान और गलियां बस्तियों की निहायत ग़लीज़ रहती हैं, मानों जगह साफ़ रखना जानते ही नहीं। मांस खाने की इतनी चाह रखते हैं कि बलिदान के समय लहू तक पी जाते। चांवल और लहसन बहुत खाते हैं। लड़ाई में दिलेर और खूब मज़बूत हैं। आमदनी बत्तीस

लाख रुपया साल है। पचास बरस भी नहीं बीते कि इन लोगों ने कांगड़े तक पहाड़ों में अमल कर लिया था, और उस किले को जा घेरा था, परंतु सन् १८१५ ईसवी में जेनरल अक्टरलोनी साहिब ने उनकी फ़ौज को सतलज इस पार मलौन के क़िले में ऐसी शिकस्त दी कि वे लोग फिर अपनी असली हद में आ गये, तब से पैर बाहर नहीं निकाला। वहां के राजा के निशान पर हनूमान का चिह्न है। लौंडी गुलाम वहां अब तक बिकते हैं। वहां के राजा का वज़ीर जरनैल जंगबहादुर कुछ दिन हुए इंगलिस्तान को गया था, इस कारन उसने बड़ा नाम पाया, और यह वज़ीर बहुत होश्यार और अक़्लमंद है, इंगलिस्तान में जो जो अच्छे बंदोबस्त बालकों की शिक्षा और राज्य के शासन इत्यादि को देख आया है, उनमें से बहुत सी बातें धीरे धीरे नयपाल में भी यथाशक्ति जारी करना चाहता है। क्याही अच्छी बात हो कि हमारे राजा और रईस भी इंगलिस्तान की सैर का चाव करें और अपनी प्रजा का भला चाहें। राजधानी नयपाल की काठ मांडू, जिसका शुद्ध नाम काष्ठ मंदिर है, २७ अंश ४२ कला उत्तर अक्षांश और ८५ अंश पूर्व देशांतरमें एक दून के दरमियान, जो प्राय २२ मील लंबी और बीस मील चौड़ी होवेगी, और जिसका किसी समय में झील होना पत्थरों के निशान और वहांवालों की पोथियों से साफ़ साबित है, बंगाले के मैदान से प्राय ४८०० फ़ुट ऊंचा विशनमती नदी के पूर्व तट पर जहां वह बाघमती से मिली है बसा है। पुरानी पोथियों में उसका नाम गुंगुलपट्टन लिखा है। घर ईंट लकड़ी और खपरैल के, पर सब के सब खराब और नाकारे, राजा के रहने का मकान भी कुछ देखने लाइक़ नहीं है। पास ही उसके तुलसी भवानी का मंदिर है,

मूर्त्ति के बदल उस में यंत्र लिखा है, राजा रानी राजगुरु और पुजारी के सिवाय गैर आदमी अंदर नहीं जाने पाता। रजीडंट भी नयपाल के इसी काठमांडूमें रहते हैं। मसिद्ध बर्फी पहाड़ जो वहां से दिखलाई देता है, उसका नाम धैवन, समुद्र से कुछ ऊपर २४६०० फुट ऊंचा है। चंद्रगिरि जो काठमांडू के पास है, कुछ कम ८५०० फुट ऊंचाहोवेगा। काठमांडू से दो मील दक्षिण पूर्वको झुकता बाघमती नदी के पार ललितपट्टन अनुमान २५००० आदमियों की बस्ती है, और काठमांडू की अपेक्षा इसकी इमारत फिरभी कुछ दुरुस्त है काठमांडूसे आठमील पूर्व अग्निकोन को झुकताहुआ भातगांव अनुमान १२००० आदमी की बस्ती है, पुराना नाम उसका धर्मपत्तन था; ब्राह्मण उस में बहुत हैं और महाराज के महल भी बने हैं। काठमांडू से ४१ मील पश्चिम वायुकोन को झुकती पहाड़ पर एक बस्ती गोरखानाम २०० घरों की नयपाल के वर्त्तमान राजाओं की क़दीम जन्मभूमि है, और इसी कारन बहुधा नयपालियों को विशेष करके साहिब लोग गोरखिये और गोरखाली भी कहते हैं, गोरखनाथ का वहां एक मंदिर बनाहै। हिमालय के पहाड़ों में गंडक नदी के बाएं तटसे अति निकट मुक्तिनाथ हिंदुओं का बड़ा तीर्थ है, वहां सात गर्म सोते हैं कि जिनसे पानी निकलकर नारायणी नदी के नाम से गंडक में गिरता है, उन में से अग्निकुंड का सोता बहुत अद्भुत है, वह एक मंदिर के अंदर पहाड़ से निकलता है, और उसके पानी पर अग्नि की ज्वाला दिखलाई देती है, कारन इसका वही समझना चाहिये जो ज्वालामुखी में गोरखडिब्बी के लिये लिख आये हैं। काठमांडूसे आठ मंज़िल उत्तर दिशा के बर्फ़िस्तान में नीलकंठ महादेव का एक तीर्थ स्थान है, वहां भी गर्म

पानी का कुंड है।–२–कश्मीर वा जम्बू। रावी और सिंधु नदी के बीच प्राय सारा कोहिस्तान इसी इलाक़े में गिनना चाहिये, बरन हिमालय पार लद्दाख का मुल्क भी, जो हिंदुस्तान की हद से बाहर और तिब्बत का एक भाग है, अब इस इलाक़े के साथ महाराज गुलाबसिंहके बेटे रनबीरसिंहके पासहै, और इस हिसाबसे यह राज वायुकोन से अग्निकोन की तरफ़ अनुमान साढ़ेतीनसौ मील लंबा और ईशान से नैर्ऋतकोन को अढ़ाई सौ मील चौड़ा होवेगा। बिस्तार पचीस हज़ार मील मुरब्बा है। हद उस की उत्तर और पूर्व को चीन की अमल्दारी, और पश्चिम को अफ़ग़ानिस्तान और दक्षिण को पंजाबके सरकारी ज़िले और चंबा और बिसहर के छोटे छोटे पहाड़ी रजवाड़ों से मिली है। इन में कश्मीर की दून पोथी और किताबों में बहुत प्रसिद्ध है, और सच है कि उसका जहां तक तारीफ़ कीजिये सब बजा है, और दुनियां में जितनी प्रशंसा है कश्मीर के लिये सब रवा है जहान के पर्दे पर कदाचित् इस साथ का दूसरा स्थान हो तो हो सक्ता है, पर इस बात का हम मुचलका लिख देते हैं कि उससे बिहतर कोई दूसरी जगह नहीं है, क्योंकि होही नहीं सकती। मानो बिधाता ने सृष्टि की सारी सुन्दर बस्तुओं का वहां नमूना इकट्ठा किया है। यह कश्मीर हिमालय के बीच में पड़ा है, जैसे कोई बादामी थाली हो इस तरह पर यह स्थान चौफेर हिमाच्छादित पर्वतों से घिर रहा है, और बीच में ७५ मील लंबा ४० मील चौड़ा सीधा मैदान बट्टाढाल है। पहाड़ों समेत यह मैदान अनुमान ११० मील लंबा और ६० मील चौड़ा है। पुरानी पुस्तकों में लिखा है कि किसी समय में यह सारा इलाक़ा पानी के अंदर डूबा हुआ था, और उस झील को सतीसर कहते थे। लोहे तांबे

और सुरमे की इस इलाके में खान है। दरख़्त सायादार और मेवों के इस इफ़रात से हैं, कि सारे इलाके को क्या पहाड़ और क्या मैदान एक बाग़ हमेशा बहार कहना चाहिये। कोई ऐसी जगह नहीं जो सब्ज़े और फूलों से खाली हो, सब्ज़ा कैसा मानों अभी इसपर मेह बरस गया है, पर ज़मीन ऐसी सूखी कि उस पर बेशक बैठिये सोइये मजाल क्या जो कपड़े में कहीं दाग़ लग जावे, न कांटा है न कीड़ा मकोड़ा, न सांप बिच्छू का वहां डर है, न शेर हाथी के से मूज़ी जानवरों का घर। जहां बनफ़शा गाय भैंसों के चरने में आता है, भला वहां के सब्ज़: ज़ारों का क्या कहना है, मानों पथिकजनों के आराम के लिये किसी ने सब्ज़ मख़मल का बिछौना बिछा रखा है, और उन के बीच लाल पीले सफ़ेद सैकड़ों क़िस्म के फूल इस रंग रूप से खिले रहते हैं कि जी नहीं चाहता जो उन पर से निगाह उठाकर किसी दूसरी तरफ़ डालें। कहीं नर्गिस है और कहीं सोसन, कहीं लाला है और कहीं नस्तरन, गुलाब का जंगल, चंबेली का बन। मकान की छतें वहां तमाम मिट्टी की बनी हैं, बहार के मौसिम में उन पर फूलों के बीज छिड़क देते हैं, जब जंगल में हर तरफ़ फूल खिलते हैं, और मेवों के दरख़्त कलियों से लद जाते हैं, शहर और गांव भी चमन के नमूने दिखलाते हैं। लोग दरख़्तों के नीचे सब्ज़ों पर जा बैठते हैं, चाय और कबाब खाते हैं, नाचते गाते हैं, एक आदमी दरख़्त पर चढ़कर धीरे धीरे उन्हें हिलाता है, तो फूलों की बरखा होती रहती है, इसी को वहां गुलरेज़ी का मेला कहते हैं। पानी भी वहां फूलों से ख़ाली नहीं कमल और कमोदनी इतने खिले हैं, कि उनके रंगों की आभा से हर लहर इन्द्रधनुष का समा दिखलाती है। भादों के महीने में जब मेवा पकता है तो

सेव नाशपाती के लिये केवल तोड़ने की मेहनत दरकार है, दाम उन का कोई नहीं मांगता, जंगल का जंगल पड़ा है, और जो बाग़ों में हिफ़ाज़त के साथ पैदा होती हैं, वह भी रुपये की तीन चार सौ से कम नहीं बिकतीं। नाशपाती कई क़िस्म की होती है बटंक सब से बिहतरहै। इसी तरह सेव भी बहुत प्रकारके होते हैं। बरसात बिलकुल नहीं होती। पहाड़ इसके गिरद इतने ऊंचे हैं, कि बादल जो समुद्र से आते हैं, उन के अधो भागही में लटकते रह जाते हैं, पार होकर कश्मीर के अंदर नहीं जा सकते। जाड़ों में दो तीन महीने बर्फ़ खूब पड़ती है, और सर्दी भी शिद्दत से होती है यहांतक कि झीलों पर पाले के तख़्ते जम जाते हैं, और वहां के लोग कांगडियों में, जो जालीदार डब्बे की तरह मिट्टी की अंगेठियां होती हैं, आग सुलगा-कर गले लटकाये रहते हैं जिस में छाती गर्म रहे, बाक़ी नौ दस महीने बहार है न गर्मी न जाड़ा, और धूल गर्द और लू और आंधी का तो क्या होना था वहां गुज़रा मई और जून में दो चार छींटे मेह के भी पड़ जाते हैं। झेलम अथवा वितस्ता इस इलाक़े के पूर्व से निकलकर पश्चिम को इस मज़े से बहती चली गई है, कि मानो ईश्वर ने जैसी वह भूमि थी वैसी ही उसके लिये यह नदी रची, न बहुत चौड़ी न सकड़ी, जल गहरा मीठा ठंढा और निर्मल, न उस में ऐसा तोड़ कि नाव को ख़तरा हो न ऐसा बंधा हुआ कि जिस में गंदा हो जावे, न यह दरया कभी बहुत बढ़ता है न घटता, कनारे भी न ऊंचे हैं न बहुत नीचे, कहीं हाथ कहीं दो हाथ, परंतु बालू का नाम नहीं, पानी के लबतक फूल खिले हुए हैं, और दरख़्त सायादार और मेवादार दुतरफ़ा इतने खड़े हैं, और उनकी टहनियां इतनी दूर तक पानी पर झुकी हैं कि नाव में बैठकर आरामसे छाया ही

छाया में चले जाओ और बैठेही बैठे मेवे तोड़ो और खाओ। कहीं बेदमजनू पानी में झुके हैं कहीं चनार जो बहुत बड़े दरख़्त और जिनकी छांव बहुत घनी और ठंढी होती है पत्ते का चतर सा बांधे खड़े हैं। कहीं सफ़ेदे के दरख़्त जो सरव की तरह सीधे और उस में भी अधिक ऊंचे और सुंदर होते हैं क़तार की क़तार जमे हैं, और कहीं उनके बीच में गांव और क़स्बे बसते हैं। दर्या के बाढ़ की दहशत न रहने से वहां वाले अपने मकानों की दीवारें ठीक पानी के कनारे से उठाते हैं, जिस में नाव उनके दर्वाजों पर जा लगे। नाव की सवारी यहां बहुत है, और उसी से सारे काम निकलते हैं। सब मिलाकर इस इलाक़े में अनुमान दो हज़ार नाव चलती होंगी, पर नाव भी कैसी, सुबुक हलकी साफ़ खूबसूरत हवादार, नाम उनका परंदा, यथानामस्तथागुणः। वैरीनाग अर्थात् जिस जगह से यह नदी निकली है, वह भी दर्शनीय है एक पहाड़ की जड़से मेवों के जंगल के दर्मियान एक अष्टकोन पचीस फ़ुट गहरा कुंड है, घेरा उसका अनुमान अढ़ाई सौ हाथ होगा, पानी ठंढा और निर्मल, मछलियां बहुत, गिर्द इमारत बादशाही बनी हुई, निदान इस कुंड में पानी उबलता है, और उस से जो नहर बहती है, वही आगे जाकर और दूसरे सोतों से मिल के वितस्ता हो गई है। दो चार ब्राह्मण उस जगह पर रहा करते हैं, क्योंकि हिंदुओं का तीर्थ है, स्थान बहुत एकांत रम्य और मनोहर है। सिवाय इन के उस इलाक़े में और भी बहुतेरे कुंड और सोते हैं, जिन से नदी और नहरें इस इफ़रात से बहती हैं, कि सारी खेतियां जो बहुधा धान की होती हैं उन्हीं के पानी से सींचते हैं। छोटे कुंड को वहां नाग और बड़ों को डल कहते हैं। तीर्थ भी हिंदुओं के वहां कई एक हैं, पर सब में प्रसिद्ध श्रीनगर से

आठ मंज़िल उत्तर दिशा को बर्फ़ के पहाड़ों में ज्योतिर्लिंग अमरनाथ महादेव के दर्शन हैं। बरस भर में एक दिन श्रावण की पूर्णिमा को उनका दर्शन होता है, बड़ा मेला लगता है,। रस्ता बहुत विकट है, अंत में सात आठ कोस बर्फ़ पर चलना पड़ता है, कपड़ा पहन कर वहां कोई नहीं जाने पाता, एक मंज़िल पहले से नंगे हो जाते हैं, अथवा भोजपत्र की लंगोटी बांध लेते हैं। मंदिर मूर्त्ति वहां कुछ नहीं है एक गुफ़ा सी है, उस में पहाड़ की बर्फ़ ढलकर पिंडी सी बन जाती है, उसी को महादेव का लिंग मानकर पूजा करते हैं। उस गुफ़ा के अंदर कबूतर भी रहते हैं, जब यात्रियों का शोर गुल सुनते हैं, तो घबरा कर बाहर निकल जाते हैं। वहां वालों का यह निश्चय है, कि साक्षात् महादेव पार्वती कबूतर बनकर उनको दर्शन देते हैं। श्रीनगर के अग्निकोन को एक दिन की राह पर मटन साहिब नाम एक कुंड हिंदुओं का तीर्थ है, उसके गिर्द इमारतें बनी हैं, तवारीखों से मालूम हुआ कि किसी समय में वहां सूर्य का एक बहुत बड़ा मंदिर था, और असली नाम उस स्थान का मार्तंड है, खंड़हर उस मंदिर का अब तक भी खड़ा है, वहां वाले उस को कौरव पाण्डव कहते हैं, स्थान देखने योग्य है। पास ही एक बहुत पुराना गहरा कूआ है, मुसल्मान उस को हारूत और मारूत का क़ैदख़ाना समझते हैं, और चाह बाबिल के नाम से पुकारते हैं। कश्मीरियों के निश्चय अनुसार मटन साहिब में श्राद्ध करने से गया बराबर पुण्य होताहै। इस इलाक़े के दर्मियान अकसर जगह पुराने समय की इमारतें मुसल्मानों की तोड़ीहुई दिखलाई देती हैं, वहांवाले उन्हें पांडवों की बनाई बतलाते हैं, पर बहुधा उन में से बौध राजाओं की है। श्रीनगर के वायुकोन अनु-

मान तीन दिन की राह पर रुसलू के गांव में एक कुण्ड है, जब पहाड़ों पर बर्फ़ गलती है, तो ज़मीन के नीचे ही नीचे उस कुंड में इस ज़ोर से पानी की बाढ़ आती है, कि भंवर सा पड़ जाता है, और जो कुछ लकड़ी घास उसकी थाह में रहताहै सब पानी पर तिरने और घूमने लगता है, नादान ख़याल करते हैं, कि पानी में देवता उतरा। श्रीनगर से चालीस मील वायुकोन पश्चिम को झुकता निच्छीहमा गांवके पास एक ज़मीन का टुकड़ा है, वह सदा गर्म और जलता रहता है, वहांवाले उस ज़मीन को सुहोयम पुकारते हैं, मालूम होता है कि उस ज़मीन के नीचे गंधक हरिताल इत्यादि से किसी चीज़ की खान है। लोग यहां के परम सुंदर लेकिन दग़ाबाज़ और झूठे परले सिरे के, लड़ाक भी बड़े होते हैं, विशेष करके स्त्रियें भटियारियों से भी अधिक लड़ती हैं, पैर में सूप बांध बांधकर और हाथ में मूसल ले लेकर झगड़ती हैं। बस्ती वहां मुसल्मानों की है, हिंदू जितने हैं सब के सब भ्रष्ट, मुसल्मानों की छुई रोटी खाने में कुछ भी दोष नहीं समझते। ये कश्मीरी दूसरे मुल्कों में आकर पंडित और ब्राह्मण बनजाते हैं, और वहां मुसल्मान का पकाया खाना खाते हैं। कारीगर यहां के प्रसिद्ध हैं, और शालबाफ़ तो यहां के से कहीं नहीं होते। शाल पर यहां की आब हवा का भी बड़ा असर है, क्योंकि यही कारीगर यदि इस इलाक़े से बाहर जाकर बुनें, कदापि वैसी शाल उन से नहीं बुनी जावेगी, पर इन शालबाफ़ों को वहां दो चार आने रोज़ से अधिक हाथ नहीं लगता, महसूल बड़ा है, जितने रुपये का माल तैयार होता है, उतना ही उस पर शालबाफ़ों से महसूल लिया जाता है। अब वहां सब मिलाकर चार पांच हज़ार दूकानें शालबाफ़ों की

होवेंगी, हमिल्टन साहिब के लिखने बमूजिब एक ज़माने में सोलह हज़ार गिनी जाती थीं। पश्मीना जिस से ये शाल बुने जाते हैं कश्मीर में नहीं होता, तिब्बत से आता है। वे छोटी छोटी लंबे बालों वाली बकरियां जिनके बदन पर पश्मीना होता है सिवाय तिब्बत के दूसरी जगह नहीं जीतीं। केसर वहां साल भर में सत्तर अस्सी मन पैदा होता है। श्रीनगर कश्मीर की राजधानी है। यह शहर ३३ अंश २३ कला उत्तर अक्षांस और ७४ अंश ४७ कला पूर्व देशांतर में समुद्र से ५५०० फुट ऊंचा बितस्ता के दोनों किनारों पर चार मील लंबा बसा है, और शहर के बीच में से यह नदी इस तरह पर निकली है, कि लोग अपने मकान की खिड़की और बरामदों में बैठे हुए उससे पानी खींच लेते हैं। यहां इस नदी का पाट डेढ़सौ गज़ से अधिक है। एक कनारे से दूसरे कनारे जाने के लिये सात पुल काठ के बने हैं। जब किसी को किसी के यहां जाना होता है, बेतकल्लुफ़ किश्ती पर बैठकर चला जाता है, दूसरी सवारी की इहतियाज नहीं पड़ती। गलियां तंग और ग़लीज़, हम्माम बहुत। नहाने के लियें दर्या कनारे पानी पर काठ के संदूक़ से बने हैं, कि जब चाहो एक जगह से खोल कर दूसरी जगह ले जाओ, जिस को दर्या में नहाना होता है, वह उन्हीं के अन्दर पर्दे के साथ नहा लेता है। इमारत ईंट और काठ की, खिड़कियों में जालियां चोबी बहुत अच्छी बनीहुई, और उनके अंदर बर्फ़ के दिनों में ठंढी हवा रोकने के लिये बारीक क़ाग़ज़ लगा देते हैं, शीशा नहीं मिलता। शहर के उत्तर कनारे पर अढ़ाई सौ फ़ुट ऊंचा हरीपर्वत नाम एक छोटा सा पहाड़ है, उस पर एक छोटा सा क़िला बना है, ऊपर चढ़ने से शहर और डल दोनों की सैर बख़ूबी दिखलाई देती है। हाकिम के

रहने के मकान शहर के दक्षिण तरफ़ वितस्ता के कनारे क़िले के तौरपर बुर्ज देकर बने हैं, उसे शेरगढ़ी कहते हैं। बादशाही मकानों का अब कहीं पता भी नहीं लगता, जहां दौलतसरा अर्थात् जहांगीर के महलों का निशान देते हैं, वहां अब धान की खेतियां होती हैं, एक दर्वाज़े के पत्थर पर जो बाक़ी रहगया है, फ़ारसी शैर खुदे हैं, उनके पढ़ने से मालूम होताहै, कि किसी समय में वहां नागर नगर नाम क़िला बनाया गयाथा, और उसके खर्च के लिये, सिवाय कश्मीर की आमदनी के जो बिलकुल उसी में बन चुकने तक लगा की, एक करोड़ दस लाख रूपया बादशाह ने अपने खज़ाने से भेजा। नसीम नशात और शालामार यह तीनों बाग़ उस वक़्तके जो अब तक डल के कनारे मौजूद हैं, उन में से नसीम में तो जहां बादशाह घोड़ा फेरते थे केवल हज़ार अथवा बारह सौ दरख़्त बड़े बड़े चनारों के खड़े हैं, और नशात और शालामार ये दोनों बाग़ ऊजड़ पड़े हैं। फ़व्वारे टूटे हुए, मकान गिरे हुए, हौज़ों में पानीकी जगह सूखी काई जमी हुई, क्यारियों में फूल के बदल खेती बोई हुई यह हालहै उन बाग़ों का, जिनमें जहांगीर नूरजहां के गले में हाथ डालकर दोनों जहान से बेख़बर फिरा करता था, और जिनको पृथ्वी पर स्वर्ग का नमूना बतलाते थे। सारे जहान की ख़ूबियों का खुलासा कश्मीर, और कश्मीर की ख़ूबियों का खुलासा डल है। यह झील निर्मल जल की जो निहायत गहरी है प्राय दस मील के घेरे में होवेगी। दो तरफ़ उसके पहाड़ है लेकिन पांच पांच सात सात कोस के तफ़ावत से, और दो तरफ़ श्रीनगर का शहर बसा है। नालों के वसीले से वह वितस्ता से मिली हुई है, कनारों पर बाग़ हैं, बीच बीच में टापू, उन में अंगूर बेदमजनू इत्यादि सुंदर पेड़ों के

अंदर लोगों के मकान, तख़्तों पर खीरे ख़रबूज़े की खेतियां, (१) मुर्ग़ाबियां कलोलें करती हुईं कहीं नाव कमलों के बीच से होकर निकलती हैं, और कहीं अंगूर और बेदमजनू की कुंजों के नीचे ही नीचे चली जाती है। जुमे के रोज़ क्या ग़रीब और क्या अमीर नाव में बैठ कर सैर के लिये डल में जाते हैं, इन्हीं टापुओं में चाय रोटी खाते हैं, नाच गाने का भी शग़ल रखते हैं, यह कैफ़ियत देखने की है, लिखने की कदापि लेखनी को सामर्थ्य नहीं। अगले लोग जो कश्मीर की तारीफ़ में यह बात लिख गये हैं, कि बूढ़ा भी वहां जाने से जवान हो जाता है, सो इतना तो वहां अवश्य देखने में आया कि मन उसका जवानों का सा हो जाता है, जैसे रेगिस्तान में जेठ बैसाख के झुलसे हुए मनुष्य को यदि कहीं बसंत ऋतु की हवा लगजावे तो देखो उसका मन कैसा बदल जावेगा, और तिस में कश्मीर की हवा के आगे तो और जगह का बसंत ऋतु भी नर्क ऋतु है। जो लोग निर्जन एकांत रम्य और सुहावने स्थान चाहते हैं, उनके लिये कश्मीर से बढ़कर दूसरी जगह कोई भी नहीं है॥

---

(१) डल के कनारे जहां पानी छिछला रहता है, घास पत्ते बहुत जमते हैं। वहां के आदमी उन सब घास पत्तों को जड़से काट देते हैं। और जब वे पानी पर इकट्ठा होकर तिरने लगते हैं, तो उनको आपस में बांधकर ऐसा मज़बूत कर देते हैं कि जिस में फिर बिखरने न पावें, और ऊपर थोड़ी थोड़ी सी मिट्टी रखकर खीरे ख़रबूज़े तरबूज़ इत्यादि के बीज बो देते हैं, सिवाय बीज बोने के और कुछ भी मिहनत नहीं करनी पड़ती, जब फल लगता है तो जाकर तोड़ लाते हैं। चौड़ान उस तख़्ते की दो गज़ रहती है, और लंबान का कुछ ठिकाना नहीं, पानी पर नाव की तरह फिरा करते हैं॥

दोहा ॥

स्वर्गलोक यदि भूमि पर तौहै याही ठौर।
जो नाहीं या भूमि पर याते सरस न और॥ १॥

कश्मीर स्वर्ग है परंतु बिलफैल राक्षसों के क़ब्ज़े में, क्योंकि वहां के लोग महाराज के जुल्म से बहुत तंग हैं। अदना सा जुल्म उसका यह है कि जमादारों से आधा अन्न तो बटाई करके लेता है, और आधा उन से मोल ले लेता है। जो बाज़ार में मन भर का भाव है तो वह दो मन के हिसाब से लेवेगा, परंतु इस पर भी ज़मीदार का गला नहीं छुटता, उसका मक़दूर नहीं कि बोने को बीज दूसरी जगह से ख़रीद सके, जो बाज़ार में मन का भाव है तो उसे बीस सेर के भाव राजा की दुकान से लेना पड़ेगा! और फिर तमाशा यह कि उन लोगों से बेगार में नौकरी ली जाती है, कितने ज़मीदार राजा की बतक पालकर और उनके अंडे छावनी में बेच के रुपया राजा के ख़ज़ाने में दाख़िल करते हैं, और कितने ही उसके फ़ाइदे के लिये जंगल से घास लकड़ी काटकर बाज़ार में बेचते हैं। जितने वहां पेशेवाले हैं सब पर महसूल मुक़र्रर है, ठीकेदार बसूल करता है। यदि धोबी को धुलाई का टका हवाले करो, तो उस में से एक पैसा राजा का हो चुका, रंडी अगर कसब करके एक रुपया कमावे आठ आना महाराज का हक़ है। महाराज ने घाटियों पर पहरे बैठा दिये हैं, कि कोई आदमी उसके जुल्म से भागकर बाहर न जाने पावे। रुपया उसकी टकसाल से जो निकलता है, आधा उस में चांदी और आधा तांबा रहता है। इन कश्मीरियों ने तो अब तक उसका गला काट डाला होता, पर उसने उन्हें झांसा दे रखा है, कि जो कोई उसकी गुनाह करेगा वह सरकार अंगरेज़ी

से सज़ा पावेगा। महाराज नरबीर सिंह को हम स्वाधीन नहीं कह सकते, क्योंकि वह हर साल कुछ दुशाले और घोड़े इत्यादि सरकार में नज़राना दाख़िल करता है। आमदनी उसकी सब मिला कर अनुमान प्राय करोड़ रुपया की होवेगी, पच्चीस लाख तो केवल कश्मीर से आता है, कि जिस में आठ लाख शाल का महसूल और लाख से ऊपर पेशेदारों का कर है, निदान इस पच्चीस लाख में केवल बारह लाख धरती की जमा, और बाक़ी बिलकुल महसूल और नज़राना है। जम्बू श्रीनगर से १०० मील दक्षिण, जहां से कोहिस्तान शुरू होता है, एक छोटी सी पहाड़ी पर बसा है। न वहां पीने को पानी अच्छा मिलता है, और न कोई अच्छा छायादार दरख़्त है, थूहर और कांटों से हर तरफ़ घिरा है, वहांवाले इन झाड़ झंखाड़ों को मज़बूती का बाइस समझते हैं, पर सन् १८४५ में सिखों की फ़ौज ने वह जगह सहज में जा घेरी थी। जम्बू से तेइस कोस के फ़ासिले पर पुरमंडल में गुलाबसिंह ने महादेव का एक मंदिर अच्छा बनाया है, शिखर पर उसके तमाम सुनहरी मुलम्मा है। श्रीनगर से ९० मील दक्षिण चनाब के बांएं कनारे एक खड़े पहाड़ पर रिहासी का मज़बूत क़िला बना है, गुलाबसिंह का ख़ज़ाना उसी में रहता है।–३–शिकम पश्चिम तरफ़ कंकई नदी उसे नयपाल से, और पूर्व तरफ़ तिष्टा भुटान से, जुदा करती है, दक्षिण को कुछ दूर तक नयपाल और कुछ दूर तक सरकारी इलाक़ा है, और उत्तर को हिमालय पार चीन की अमल्दारी है। अनुमान ६० मील लंबा और ४० मील चौड़ा है। बिस्तार १६०० मील मुरब्बा है। नयपाल के मुल्क से बहुत मिलता है, लोग वहां के जिन्हें लपचा कहते हैं सब कुछ खाते पीते हैं, यहां तक कि गोमांस से

भी पर्हेज़ नहीं करते। तीरों को जहर में बुझाते हैं। बौध मतवाले बहुत हैं। राजधानी शिकम, जिसे दमूजंग भी कहते हैं, २७ अंश १६ कला उत्तर अक्षांस और ८८ अंश ३ कला पूर्व देशांतर में झमीकूमा नदी के कनारे पर बसा है। दार्जिलिंग का पहाड़ जो समुद्र से ७००० फ़ुट ऊंचा है इस राज के अग्निकोन में पड़ा है, सरकार ने उसे साहिब लोगों के हवा खाने के वास्ते राजा से ले लिया, और अब उस पर बहुत से बंगले बन गए हैं, दानापुर की छावनी से दार्जिलिंग सीधा ८४ और सड़क की राह १०५ मील है।-४-भुटान। यद्यपि हम लोग हिमालय पार पर्वतस्थली में लहासे से लेकर लदाख़ पर्यन्त तिब्बत के सारे मुल्क को भुटान अथवा भोट कहते हैं परंतु अंगरेज़ बहुधा इसी इलाक़े को भोट के नाम से लिखते हैं, जिसका यहां वर्णन होता है। जानना चाहिये कि यह इलाक़ा शिकम के पूर्व हिंदुस्तान के ईशानकोन में हिमालय के दर्मियान सौ कोस से अधिक लंबा और प्राय पचास कोस चौड़ा चीन के ताबे है। हमिल्टन साहिब मद्र देश इसी का नाम बतलाते हैं। बरसात बहुत नहीं होती। टांगन वहां के मशहूर हैं, जिन पहाड़ों में वे होते हैं, उनका नाम टांगस्थान है। आदमी बड़े मज़बूत, छ फ़ुट तक लंबे, रंग सांवला, बदन गठीला आंखें छोटी पर नोकें निकली हुई, भौं बरौनी और दाढ़ी मूंछे बहुत कम और हलकी, घेघे की बीमारी में बस्ती का छठा हिस्सा फसा हुआ, तीर उनके ज़हर में बुझे हुए, खाना आटा गोश्त चाय नमक और मक्खन इकट्ठा पानी में उबला हुआ, मज़हब बौध, राजा धर्मराजा साक्षात् भगवान बुधका अवतार कहलाता है, और जो आदमी उसके नीचे मुल्क का कारोबार करता है उसे देवराजा पुकारते हैं। राजधानी उसकी

तसीसूदन २७ अंश ५ कला उत्तर अक्षांस और ८९ अंश ४० कला पूर्व देशांतर में पहाड़ों के बीच बसा है। राजा के रहने का गढ़ सात मरातिब का चौखूंटा संगीन बना है, उसका हर एक मरातिब पंद्रह फ़ुट से कम ऊंचा नहीं है, और उसके ऊपर सुनहरी मुलम्मे का बड़ा सा तांबे का एक छत्र चढ़ा है। बैद हकीमों की वहां बड़ी कम्बख्ती है, जो दवा राजा को देते हैं चाहे वह जुल्लाब हो और चाहे कुछ और बला पहले उस में से बैदको पिलाते हैं, यदि हम वहां के हकीम होते तो राजा के लिये सदा अच्छी अच्छी मीठी माजून याकूत और नोशदारूओं ही का नुसख़ा लिखा करते चाहे उसे हैज़ा होता चाहे सरसाम और चाहे वह चंगा होता चाहे मरजाता उसी शाम। क़ाग़ज़ वहां का मज़बूत होता है, अक्सर सुनहरी रंग कर क़ैंची से कतर के कलाबतून की जगह कपड़े के साथ बुनकर पहनते हैं। तसीसूदन से चालीस मील दक्षिण चूका के क़िले के पास तेहिंच्यू नदी पर लोहे की ज़ंजीर का पुल बना है वहां वाले उसे देवताओं का बनाया समझते हैं।—५—चंबा सुकेत और मंडी ये तीनों पहाड़ी राज कश्मीरके अग्निकोन चनाव और सतलजके बीच में हैं। चंबे का इलाक़ा रावी के दोनों तरफ़ महाराज रनबीरसिंह की अमल्दारी से कांगड़े के सरकारी ज़िले तक चला गया है। आमदनी उस की लाख रुपया साल से कम है। राजधानी चम्बा ३२ अंश १७ कला उत्तर अक्षांस और ७६ अंश ५ कला पूर्व देशांतर में रावी के दहने कनारे बहुत रम्य और सुहावने स्थान में बसा है। सुकेत सतलज से १२ मील दहने कनारे पर ३१ अंश २७ कला उत्तर अक्षांस और ७६ अंश ५८ कला पूर्व देशांतर में बसा है। सतलज के कनारे गर्म पानी का

एक सोता है, वहां वाले उसे तत्तापानी कहते हैं, पानी के साथ गंधक भी जमीन से निकलती है। इसकी आमदनी अस्सी हजार रुपये साल अनुमान करते हैं, और मंडी जो इन तीनों में सब से बड़ा है, अर्थात् साढ़े तीन लाख रुपये साल की आमदनी का मुल्क गिना जाता है, सुकेत और सरकारी जिले कांगड़े के बीच में पड़ा है। लोहे और नमक की खान है, पर नमक अच्छा नहीं होता। राजधानी मंडी ३१ अंश ४० कला उत्तर अक्षांस और ७६ अंश ५३ कला पूर्व देशांतर में व्यासा नदी के बांएं कनारे बसा है। वहां से २५ मील वायुकोन व्यासा के बांएं कनारे १५०० फुट ऊंचे एक पहाड़ पर कमलागढ़ का क़िला बहुत मजबूत बना है। मंडी से १० मील मैदान की तरफ़ रैवालसर हिंदुओं का तीर्थ है, बरन वहां की यात्रा के लिये बौधमती भोटिये भी आते हैं। हाल उसका यह है कि पहाड़ों के बीच में प्राय पाव कोस के घेरे में निर्मल जल से भरी हुई एक झील है, नहाने के लिये पश्चिम कनारे पर एक छोटा सा पक्का घाट बना है, उस झील के अंदर सात बेड़े तिरते हैं, देखने में वे हूबहू छोटे २ टापू मालूम होते हैं, पर वहां वाले उन को बेड़ा ही पुकारते हैं, घास पत्ते बरन बेलबूटे नरकट भँगरैया इत्यादि भी उन पर जम गए हैं, लेकिन सब से बड़ा दस हाथ से अधिक लंबा नहीं है, जब वे कनारे पर आकर लगते हैं, तब यदि कोई पानी में ग़ोता लगाकर उन बेड़ों के पेंदों को जांचे और ऊपर नीचे अच्छी तरह से निगाह करे तो बखूबी मालूम हो जायगा कि उन सब बेलबूटों की जड़ आपस में इस तरह मजबूत गुथी हुई हैं, और आंधी पानी से उन पर कंकर मिट्टी भी इतनी पड़ गई है, कि देखने में तो वे पत्थर की शिला से मालूम होते हैं, और तिरने में स्वभाव

काठका रखते हैं। जानना चाहिये कि बहुतेरे ऐसे पेड़ होते हैं जिन की जड़ें आपस में गुथी रहती हैं, और अक्सर मिट्टी भी इस प्रकार की होती है कि जब गर्मी में सूखकर पपड़ा जाती है और फिर बरसात में पानी की बाढ़ आती है तो उन पेड़ों की जड़ आपस में गुथी रहने के कारन वह तख़्ते का तख़्ता ज़मीन से जुदा होकर पानी में तिरने लगता है। देखो अमरीका में मक्सीको शहर के पास ऐसे बड़े बड़े बेड़े पानी पर तिरते हैं, कि उन पर खेतियां होती हैं और बाग़ और छप्पर बनाते हैं। फ़रासीस में सेंटउमर के पास जो बेड़े तिरते हैं उन पर गाय बैल चरते हैं। कश्मीर में भी झीलों के दरमियान बेड़ों पर खेतियां बोते हैं। निदान जो कोई वहां कुछ दिन रहे तो बखूबी देख सकता है कि वे बेड़े हवा और पानी के ज़ोर से वहां तिरा करते हैं, और कभी कभी जब कनारे पर जा लगते हैं तो यात्रियों की निगाह बचाकर पंडे लोग भी उन्हें धक्का दे देते हैं। लोगों का यह कहना सरासर झूठ है कि रैवालसर में पत्थर के पहाड़ तिरते हैं, और पंडों के बुलाने से यात्रियों की पूजा लेने को कनारे चले आते हैं।

—६—सतलज और जमना के बीच पहाड़ी राजा राना और ठाकुरों के इलाक़े। इन में कहलूर सिरमौर और बिसहर ये तीन तो अनुमान लाख लाख रुपये साल की आमदनी के रजवाड़े हैं, और बाक़ी बारह ठकुराइयों के राना तीस हज़ार से लेकर तीन सौ रुपये साल तक की आमदनी रखते हैं। कहलूर की राजधानी बिलासपुर ३१ अंश १९ कला उत्तर अक्षांस और ७६ अंश ४५ कला पूर्ब देशांतर में सतलज के बांएं कनारे सुन्दर मनोहर जगह में समुद्र से १५०० फुट ऊंचा बसा है। बिलासपुर के पश्चिम दो दिन की राह पर सतलज के कनारे प्राय तीन हज़ार फुट ऊंचे एक पहाड़ के

ऊपर नयनादेवी का मंदिर है, मैदान से पहाड़ पर चढ़ने को अनुमान चार हज़ार के लग भग सीढ़ियां कहीं पहाड़ काट कर और कहीं पत्थर जोड़ कर बनाई हैं, मंदिर से अजब कैफ़ियत नज़र पड़ती है, एक तरफ़ अम्बाले और सरहिंद का मैदान और दूसरी तरफ़ हिमालय के बर्फ़ी पहाड़ और नीचे दूर तक सतलज का बहना। सिरमौर की राजधानी नाहन ३० अंश ३० कला उत्तर अक्षांस और ७७ अंश ४५ कला पूर्व देशांतर में समुद्र से ३००० फ़ुट ऊंचा जमना से बीस मील बांएं कनारे है। बिसहर का इलाक़ा सतलज के कनारे कनारे हिमालय पार चीन की हद से जा मिला है। राजधानी उसकी रामपुर ३१ अंश २७ कला उत्तर अक्षांस और ७७ अंश ३८ कला पूर्व देशांतर में समुद्र से ३३०० फ़ुट ऊंचा सतलज के ठीक बांएं कनारे पर बहुत तंग और बुरी जगह में बसा है। पहाड़ वहां ऐसे ऊंचे नीचे और दरख़्तों से ख़ाली कि वह कदापि आदमी के बसने की जगह न थी ज़बर्दस्ती जा बसे हैं। रामपुर में अलवान के तौर पर पशमीने की सफ़ेद चादरें बीस बीस रुपये को बहुत अच्छी बनती हैं, तारीफ़ उसके नर्म और गर्म होने की है, साहिब लोग बहुत पसंद करते हैं, और विलायत को ले जाते हैं। कनावर का पर्गना इस राज में बहुत अच्छा है, साहिब लोग बरसात में शिमला से हवा खाने को उसी तरफ़ जाते हैं, बरफ़ के ऊंचे पहाड़ आड़े आ जाने के कारन कश्मीर की तरह वहां भी बरसात नहीं होती, आब हवा निहायत अच्छी, यहां अबतक भी पांडवों की तरह बहुत से भाई एक ही औरत से शादी कर लेते हैं, और इन पहाड़ों में औरत के वास्ते एक ख़ाविंद को छोड़ कर दूसरे के पास चले जाना ऐब नहीं समझते, ऐसी कम मिलेंगी जिन्हों ने दो तीन बार अपने ख़ाविंद

नहीं बदले। शिमला से नीचे पहाड़ियोंका यह भी एक अजब दस्तूर है कि जहां उनका लड़की लड़का छ सात महीने का हुआ तो उसे सुबह होते ही गांव के पास पेड़ों की छाया में पानी के झरनों के नीचे ऐसी जगह में लेजाकर सुला देते हैं, कि उस झरने का पानी झारी की धार की तरह ठीक उस की चांदी पर गिरा करता है, निदान एक दो औरतों की निगहबानी में गांव के सारे लड़के वहां पानी के तले दिन भर सोए रहते हैं यदि इस प्रकार पानी का नालुआ नित उन के सिर पर न दिया जाय कदापि न सोवें, और सिर खुजलाते खुजलाते मरजावें।—७—गढ़वाल बिसहर की हद से मिला हुआ जमना और गंगा के बीच ४५०० मील मुरब्बा के विस्तार में अनुमान लाख रुपये साल की आमदनी का मुल्क है। राजा टीहरी में रहता है, वह ३० अंश २३ कला उत्तर अक्षांस और ७८ अंश २८ कला पूर्व देशांतर में समुद्र से २२०० फुट ऊंचा गंगा के बांए कनारे बसा है॥

निदान उत्तराखंड के रजवाड़े तो हो चुके अब मध्य देश के रजवाड़े लिखे जाते हैं—१—बघेलखंड इलाहाबाद और मिरज़ापुर के दक्षिण शोणनद के दोनों तरफ़ विंध्य की पर्वतस्थली में बसा है। उत्तर दक्षिण और पूर्व सूबै इलाहाबाद और बिहार के सरकारी जिले हैं और पश्चिम में उसके बुंदेलखंड का इलाक़ा है। बिस्तार उसका दस हज़ार मील मुरब्बा, और आमदनी बीस लाख रुपया साल। इस राज में नदियों का पानी कई जगह ऐसे ऊंचे ऊंचे पहाड़ों से गिरता है कि वह देखने योग्य है, उन जंगल और पहाड़ों में इस पानी के गिरने का शब्द और जलकणों का हवा में उड़ना विरक्त जनों के मनको बहुत सुख देता है।

बीहर का झरना प्राय सवा सौ गज़की ऊंचान से जल की एक धारा होकर गिरता है, इस में कोस एक के तफ़ावत पर टौंस का पानी गिरता है, यद्यपि ऊंचान में तो वह सत्तर गज़ से अधिक नहीं है पर धार उस के जल की जब फूलर्टन साहिब ने सिप्तम्बर महीने में देखी थी बीस गज़ चौड़ी और तीन गज़ मोटी थी। राजधानी रेवा जिसे रीवां कहते हैं बिछिया नदी के दहने कनारे २४ अंश ३४ कला उत्तर अक्षांस और ८१ अंश १९ कला पूर्व देशांतर में बसा है। राजा के रहने का क़िला संगीन ठीक नदी के तट पर बना है।—२—बुंदेलखंड, पूर्व उस के रेवा है, और पश्चिम ग्वालियर की अमल्दारी और झांसी की कमिश्नरी, उत्तर और दक्षिण को सूबै इलाहाबाद के सरकारी जिलों से घिरा हुआ है। यह इलाक़ा सारा विंध्य की पर्वतस्थली में बसा है, आकाश से कोई बुंदेलखंड को देखे तो उसके पहाड़ों का उतार चढ़ाव ठीक समुद्र की लहरों की तरह नजर पड़ेगा, पर दो हजार फ़ुट से अधिक ऊंचा उन में कोई नहीं है। लोहे की खान है। इस इलाक़े में दतिया उरछा चारखाड़ी छतरपुर अजयगढ़ पन्ना समथर और बिजावर ये आठ तो छ हजार मील मुरब्बा के विस्तार में रजवाड़े हैं, और बाक़ी चौबीस के क़रीब बहुत छोटे छोटे जागीरदार हैं। २५ अंश ४३ कला उत्तर अक्षांस और ७८ अंश २५ कला पूर्व देशांतर में दतिया पक्की शहरपनाह के अंदर बसा है, बीचमें राजा के महल हैं, आमदनी इलाक़े की दस लाख रुपया साल। दतिया से ७५ मील दक्षिण अग्निकोन को झुकता टीहरी उरछा के राजा की राजधानी है, आमदनी इस इलाक़े की सात लाख रुपया साल राजा के टीहरी में आ रहने से उरछा जो दतिया और टीहरी

के बीच में बेत्वा के बांएं कनारे पुरानी राजधानी था वीरान हो गया। दतिया से ७५ मील पूर्व अग्निकोन को झुकता चारखाड़ी एक पहाड़ी के नीचे बसा है, क़िला उस पहाड़ी पर अधबना रह गया है, शहर के बीच राजा के रहने के मकान हैं, और बाहर चौगिर्द जंगल खड़ा है, आमदनी चार लाख रुपया साल। दतिया से ८० मील अग्निकोन छतरपुर तीन लाख रुपये साल की आमदनी का इलाक़ा है। दतिया से १२० मील अग्निकोन पूर्व को झुकता अजयगढ़ सवातीन लाख रुपये साल की आमदनी का इलाक़ा है। दतिया से ११० मील अग्निकोन पन्ना एक पथरीले मैदान में बसा है, हीरे की खान है, अकबर के वक़्त में उसकी पैदा आठ लाख रुपये साल अनुमान की गई थी, पर अब बहुत कम है, सारे इलाक़े की आमदनी मिलकर चार लाख रुपया होता है। दतिया से ३० मील ईशानकोन समथर साढ़े चार लाख रुपये साल की आमदनी का इलाक़ा है, और दतिया से १०० मील अग्निकोन दक्षिण को झुकता हिजावर सवादो लाख रुपये साल की आमदनी रखता है।—३—ग्वालियर अथवा सेंधिया की अमल्दारी। उत्तर को वह सूबे अकबराबाद के सरकारी जिले और धौलपुर और करौली के इलाक़ों से मिला है, और पूर्व को उसके बुंदेलखंड भूपाल और सागर नर्मदा के सरकारी जिले हैं। पश्चिम सीमा पर जयपुर कोटा उदयपुर परतापगढ़ बांसबाड़ा और बड़ोदे के इलाक़े हैं, और दक्षिण की तरफ़ हैदराबाद और इंदौर की अमल्दारी से मिल गया है। दक्षिण को यह राज नर्मदा पार बरन तापी पार तक चला गया है, पर राजधानी इसकी नर्मदा वार मध्यदेश में पड़ी है, इस कारन इसे मध्यदेश ही के रजवाड़ों में लिख दिया। बिस्तार उसका तैंतीस

हज़ार मील मुरब्बा है, और आमदनी अठत्तर लाख रुपये साल। दक्षिण भाग विंध्य के पर्बतों से आच्छादित है, और उन में, बहुधा नर्मदा के तट पर, भील लोग बस्ते हैं। अंगरेजी अमल्दारी से पहले नित की लूटमार और आपस में लड़ाई रहने के कारन उजाड़ बहुत हो गया है, जंगल झाड़ी हर तरफ़ दिखलाई देते हैं। खान से लोहा निकलता है। धरती मालवे की प्रसिद्ध उपजाऊ है, कहावत मशहूर है। धरती मालव गहर गंभीर। मग मग रोटी पग पग नीर। मिट्टी काली बरसात के बाद पानी सूखने पर जगह जगह से फट जाती है, इस कारन घोड़ों को सड़क से बाहर चलने में पैर टूट जाने का बड़ा ख़तरा रहता है। राजधानी ग्वालियर २६ अंश १४ कला उत्तर अक्षांस और ७८ अंश १ कला पूर्व देशांतर में एक पहाड़ी के नीचे बसा है। उस पहाड़ी पर जो ३४२ फ़ुट वहां से ऊंची है एक बहुत मज़बूत क़िला प्राय पौन कोस लंबा बना है, जल के टांके उस में बहुत बड़े बड़े हैं। सन् १७८० में जब मेजर पोफ़म् साहिब ने सरकार के हुक्म बमूजिब इस क़िले को घेरा था तो उन को उस पर किसी तरफ़ से भी चढ़ने की राह न मिली, लेकिन एक चोर जो उस क़िले में चोरी को जाया करता था उन से मिल गया, और अपना रास्ता बतलाया, यद्यपि वह आदमी के जाने का न था केवल बंदर लंगूर जाते थे, पर पोफ़म् साहिब अपनी सारी फ़ौज को रातही रात में उस राह चढ़ा ले गये, और क़िला फ़तह किया। इस शहर को लश्कर भी कहते हैं, कारन यह कि पहले सेंधिया की राजधानी उज्जैन थी, और उसका लश्कर सदा चढ़ाई और लड़ाई पर रहता था, पर जब से उसके लश्कर का डेरा ग्वालियरमें पड़ा, फिर वहां से न हिला, और वही मुक़ाम छावनी और राजधानी हो गया। पास ही

सुवर्णरेखा नदी के पार मुहम्मदग़ौस के मक़बरे में मीयांतानसैन, जो अकबर का बड़ा मशहूर कलावंत था गड़ा है और उसकी क़बर पर एक इमली का दरख़्त है। बेवक़ूफ़ों का यह निश्चय है कि जो उस इमली की पत्ती चबावे आवाज़ उसकी बहुत मीठी हो जावे। उज्जैन बहुत पुराना शहर है, शास्त्र में इसका नाम उज्जयनी और अवन्ती लिखा है, वह समुद्र से १७०० फ़ुट ऊंचा १३ अंश ११ कला उत्तर अक्षांश और ७५ अंश ३५ कला पूर्ब देशांतर में सिप्रा नदी के दहने कनारे ग्वालियर से २६० मील नैर्ऋतकोन दक्षिण को झुकता बसा है, इमारतों में लकड़ी का काम बहुत है, पर घाट पक्के नदी के दोनों तरफ़ सुहावने बने हैं, ज़मीन खोदने से दूर दूर तक पुरानी आबादी के निशान मिलते हैं। यह शहर महाराज बिक्रमादित्य के समय में बड़ी रौनक़ पर था, और बादशाही ज़माने में सूबै मालवा की, जिसे संस्कृत में मालव देश कहते हैं, राजधानी रहा। पंडित ज्योतिषी शास्त्र की रीति से अपने देशांतर का हिसाब इसी शहर से करते हैं, शहर के बाहर राजा जयसिंह के बनवाए ज्योतिष सम्बन्धि बेधशाला और यंत्र अब तक भी टूटे फूटे पड़े हैं। जिस मकान को भर्तृहरि की गुफ़ा बतलाते हैं, किसी पुरानी हवेली का एक हिस्सा जो मिट्टी के तले दब गई है मालूम होता है। महाकाल—महादेव का मंदिर इस जगह में बहुत प्रसिद्ध है, पर जो मंदिर बिक्रमादित्य के समय का बना था वह शमशुद्दीन इलतमिश ने जो सन् १२१० में तख़्त पर बैठा था तुड़वा डाला। शहर से चार मील उत्तर कालियादह गांव के पास सिप्रा के टापू में बादशाही वक़्त का एक पुराना मकान बना हुआ है, गर्मियों में रहने की बहुत अच्छी जगह है, नदी का पानी उसके हौज़ फ़व्वारों में

होता हुआ बहता है उज्जैन से प्राय अस्सी मील नैर्ऋतकोन बाग नाम एक छोटी सी बस्ती है, उस में कोस दो एक पर किसी ज़माने में पहाड़ के पत्थर काटकर गुफ़ा के तौर पर चार मंदिर बौधमत के बने हैं, देखने योग्य हैं, एक का चौक उन में से ८४ फ़ुट मुरब्बा नापा गया है। ग्वालियर के दक्षिण बेत्वा अथवा बेत्वंती नदी के दहने कनारे भिलसा, जिसका असली नाम विल्वेश और भद्रावत भी बतलाते हैं, शहरपनाह के अंदर अनुमान ५००० घर की बस्ती है। वहां दो देहगोप अर्थात् गुम्बज् बौध लोगों के बनाए उसी तरह के मौजूद हैं, जैसा बनारस के ज़िले में सारनाथ के पास लिखा गया है। भिलसावाले उन्हें सास बहू की भीत और सुमेर का नमूना कहते हैं। बाड़ा ४२ फ़ुट ऊंचा है, और १२० फ़ुट का व्यास रखता है। छोटे का व्यास कुल ४८ फ़ुट है। महाराज चन्द्रगुप्त ने उनकी पूजा के लिये कुछ धरती दान दी थी, यह बात पुराने पाली अक्षरों में उन के पत्थरों के ऊपर खुदी है। ग्वालियर से चार सौ मील दक्षिण नैर्ऋतकोन को झुकता बुर्हानपुर तापी के दहने कनारे एक सुंदर मैदान में शहरपनाह के अंदर जिसका घेरा अनुमान बारह मील का होगा बसा है, इमारत में लकड़ी का काम बहुत, चौक सुथरा, राज बाज़ार चौड़ा, नहर गली गली घुमी हुई, धनाढ्य बहुतेरे मुसल्मान, अरबों की सूरत और वही पोशाक, नदी के कनारे पर बादशाही महल और क़िले के निशान अब तक नमूदार हैं। किसी समय में यह खानदेश के सूबे की राजधानी था। ग्वालियर से चालीस मील दक्षिण नैर्ऋतकोन को झुकता काली सिंध के दहने कनारे पहाड़ के नीचे नरवर का पुराना शहर बसा है, और पहाड़ के ऊपर क़िला है,

किसी समय में वह निषध देश के राजा नल की राजधानी था। ग्वालियर से २६० मील नैर्ऋतकोन नीमच की छावनी है और उसी तरफ़ ३८५ मील पर चम्पानेर अथवा पवनगढ़ का क़िला एक खड़े पहाड़ पर जो २५०० फ़ुट से कम ऊंचा नहीं है बहुत मजबूत बना है, पहाड़ के नीचे किसी समय में कई कोस तक चम्पानेर का शहर बस्ता था, पर अब उजाड़ और जंगल है, खंड़हरों में शेर और भील रहते हैं। बड़ोदा वहां से कुल बाईस मील नैर्ऋतकोन को रहजाता है।—४—भूपाल पूर्व को सागर नर्मदा के सरकारी जिले और बाक़ी तीन तरफ़ ग्वालियर के राज से घिरा है। यह हिस्सा मालवे का पठानों के दख़ल में है। जंगल पहाड़ इस में भी ग्वालियर के दक्षिण भाग से हैं। बिस्तार सात हज़ार मील मुरब्बा, और आमदनी बाइस लाख रुपया साल है। सन् १८२० में इस इलाक़े के दर्मियान ३४१६ गांव आबाद और ७१४ ऊजड़ गिनेगये थे। शहर भूपाल का जहां नव्वाब रहता है २३ अंश १७ कला उत्तर अक्षांस और ७७ अंश ३० कला पूर्व देशांतर में पक्की शहरपनाह के अंदर बसा है। यह शहर सूबै मालवा और गोंदवाने की हद पर राजा भोजके मंत्री ने अपने नाम पर बसाया था। शहर के नैर्ऋतकोन एक पहाड़ी पर पक्की गढ़ी बनी है, और उस गढ़ी के नैर्ऋतकोन पर साढ़े चार मील लंबा और डेढ़ मील चौड़ा एक तालाब है। मकान शहर के अक्सर टूटे फूटे रौनक़ कहीं नहीं। भूपाल से २० मील पश्चिम नैर्ऋतकोन को झुकती सिहोर में सरकारी फ़ौज की छावनी है, साहिब अजंट उसी जगह रहते हैं।—५—इंदौर अथवा हुलकर की अमल्दारी। यह भी इलाक़ा कुछ दूर तक नर्मदा के पार चला गया है। पूर्व उस के

ग्वालियर की अमल्दारी, उत्तर को ग्वालियर और धार और देवास के दो छोटे छोटे रजवाड़े, पश्चिम में बड़ोदा और दक्षिण में खानदेश के सरकारी जिले। लंबान चौड़ान इस इलाक़े की नापना कठिन है, क्योंकि बीच बीचमें दूसरे इलाक़ों से बहुत बे तरह मिल गया है, बिशेष करके ग्वालियर से। कहते हैं कि जब हुलकर और सेंधिया के बीच मुल्क बंटा, तो उन्हों ने उसे चुंदरी बांट बांटा, अर्थात् चुंदरी की तरह एक पर्गना सेंधिया ने लिया तो दूसरा हुलकर ने और दूसरा हुलकर ने लिया तो तीसरा फिर सेंधिया ने, निदान इसी कारन एक अमल्दारी के गांव दूसरी के बीच में आ गये हैं। बिस्तार उसका आठ हज़ार मील मुरब्बा से कम नहीं है, और आमदनी बाइस लाख रुपया साल। झाड़ पहाड़ इस अमल्दारी में बहुत हैं। क्योंकि विंध्य का तटस्थ है, और भीलोंका विंध्य मानो घर है। राजधानी इंदौर २२ अंश ४२ कला उत्तर अक्षांस और ७५ अंश ५० कला पूर्ब देशांतर में समुद्र से २००० फ़ुट ऊंचा एक ढालुवे मैदान में पेड़ों के बीच बसा है, थोड़ी थोड़ी सी दूर पर पहाड़ दिखलाई देते हैं, उचानके सबब गर्मी बहुत नहीं होती, बाज़ार चौड़ा है, पर इमारत चोबी, और देखने लाइक़ उन में कोई भी नहीं। साहिब रज़ीडण्ट इन्दौर में रहते हैं। सरकारी फ़ौज की छावनी इन्दौर से दस मील दक्षिण मऊ में पड़ी है। इन्दौर से अनुमान चालीस मील दक्षिण नैर्ऋतकोन को झुकता नर्म्मदा के दहने कनारे महेश्वर बसा है, वहांवाले उसे महेशवती और सहस्रबाहु की बस्ती भी कहते हैं, क़िले के अंदर अहिल्याबाई के रहने के महल, और नदी कनारे नहाने को सुंदर पक्के घाट बने हैं। महेश्वर से पांच मील पूर्ब नर्मदा के उसी कनारे पर कच्ची शहरपनाह के अंदर मंडले-

शर एक बड़े ब्यौपार की जगह है, क़िला भी छोटा सा पक्का बना है। मंडलेशर से थोड़ी ही दूर पूर्व नर्मदा के किनारे पर ओंकारनाथ महादेव का मंदिर हिन्दुओं का बड़ा तीर्थ घाट भी स्नान के लिये पक्के बहुत अच्छे बने हैं, मंदिर के पास एक पहाड़ी पर दो बीरान क़िले हैं, जिन्हें वहांवाले मानधाता और मुचकुंद के बनाये बतलाते हैं, उनके अंदर बाहर बहुत से खंभे चौखट देवताओं की मूरतें और तरह बतरह की सूरतें सब पत्थर की टूटी फूटी इतनी पड़ी हैं, कि उनके देखने से साबित होता है, कि वह जगह बहुत पुरानी है, और किसी समय में खूब आबाद थी, मुसल्मानों की बदौलत इस नौबत को पहुंची।—६—धार और देवास यह दोनों छोटे छोटे रजवाड़े हुलकर और सेंधिया की अमल्दारी के बीच में पड़े हैं। धार तो एक हज़ार मील मुरब्बा के बिस्तार में १७९ गांव पौने पांच लाख रुपये साल की आमदनी का इलाक़ा है, और देवास कुछ न्यूनाधिक चार लाख साल का होगा। धारकी राजधानी धारानगर, जो किसी समय में महाराज भोज के रहने की जगह थी, २२ अंश ३५ कला उत्तर अक्षांस और ७५ अंश २४ कला पूर्व देशांतर में समुद्र से १९०० फ़ुट ऊंचा एक कच्ची शहरपनाह के अंदर बसा है, और क़िला शहर से अलग एक ऊंची सी ज़मीन पर बना है, भोज सम्बत् ५४१ में एक बहुत बड़ा राजा हो गया है, संस्कृत का ऐसा क़दर्दान विक्रम के पीछे कोई नहीं हुआ, एक २ श्लोक पर उसने लाख लाख तक रुपये दिये हैं, और बहुतेरे ग्रंथ उसके समय के बने अबतक मौजूद हैं, वह आप भी बड़ा पंडित था, और कहते हैं कि उसकी राजधानी में बहुत कम ऐसे लोग थे जो संस्कृत न जानते, मार्शमेन साहिब अपने भारतवर्षीय इतिहास में लिखते हैं कि इस

राजा को कुल्ल सात सौ बरस हुए। देवास के इलाक़े की राजधानी देवास छ हज़ार आदमियों की बस्ती २२ अंश ५९ कला उत्तर अक्षांस और ७६ अंश १० कला पूर्व देशांतर में बसा है। धार से अनुमान १५ मील दक्षिण ज़रा अग्निकोन को झुकता प्राय २००० फ़ुट समुद्र से ऊंचा एक पहाड़ पर मांडू का क़िला और शहर उजड़ा हुआ पड़ा है अकबर के वक़्त में यह शहर बहुत लंबा चौड़ा बस्ता था, अब भी नापने से उसकी शहरपनाह जो बाक़ी है २८ मील होती है, पर बिलकुल जंगल, शेर और भीलों के रहने की जगह है, बाज़ बहादुर का मकान, दो तालावों के बीच जहाज़ का महल, जामे मस्जिद, हुसैनशाह का संगमर्मर का मक़बरा इस क़िले में यह सारे मकान देखने लाइक़ हैं। —७—बड़ोदा अथवा गाइकवाड़ का राज हुलकर और सेंधिया की अमल्दारी के पश्चिम समुद्र पर्यंत, और उदयपुर और सिरोही के दक्षिण नर्मदा तक, पर इसके बीच में बहुत जगह सरकारी ज़िले भी आ गए हैं। यह इलाक़ा सूबे गुजरात में है, जिसे संस्कृत में गुर्जर देश कहते हैं। बिस्तार उसका चौबीस हज़ार मील मुरब्बा से कम नहीं है। यद्यपि जंगल पहाड़ भीलों से भरे हैं, पर तौ भी मुल्क आबाद और धन की बहुतायत है, बिशेष करके राजधानी के आस पास। काठियावाड़ अर्थात् काठियों का देश जो गुजरात के प्रायद्वीप का मध्य भाग है बिलकुल जंगल पहाड़ों से भर रहा है, पर पहाड़ अक्सर नीचे और दरख़्तों से ख़ाली, धरती रेतल, वहांवाले अपना नाम काठी होने का यह कारन बताते हैं, कि जब पांडव लोग दुर्योधन से दाव हारकर बारह बरस के लिये वहां आकर छुपे, और पता लगने पर दुर्योधन ने उनको वहां से ज़ाहिर करने के लिये यह तदबीर ठहराई, कि उस देश की गौ हर

ले जावे, जो क्षत्री होगा अवश्य गौ बचाने को साम्हने आवेगा, पर ऐसा बुरा काम अर्थात् गौ का चुराना उसके आदमियों से किसी ने स्वीकार नहीं किया, तब कर्ण ने अपनी छड़ी ज़मीन पर मारी, और उस्से एक आदमी पैदा हुआ, काठ की छड़ी से पैदा हुआ इसलिये उसका नाम काठी रहा, और कर्ण ने उसे बर दिया जा तुझको और तेरी औलादको भगवान के घर से चोरी मुआफ़ है, चोरी का पाप और कलंक नहीं लगेगा। निदान ये काठी सूर्य को, जिसे कर्ण का बाप समझते हैं, बहुत मानते हैं, अपने सब काग़ज़ों की पेशानी पर उसकी तसवीर लिखते हैं, और चोरी डकैती को बुरा नहीं समझते, बदमाशों ने क्या कहानी रची है ! औरतें सुंदर होती हैं। बैल गुजरात के प्रसिद्ध हैं। आमदनी अनुमान सत्तर लाख रुपया साल की होवेगी। अक़ीक़ की उस में खान है। राजधानी बड़ोदा २२ अंश २१ कला उत्तर अक्षांस और ७३ अंश २३ कला पूर्व देशांतर में शहर-पनाह के अंदर बिश्वमित्र नदी के बांएं कनारे बसा है। उस नदी पर पक्का पत्थर का पुल बना हुआ है। बस्ती उसकी लाख आद-मियों से अधिक है। बाज़ार चौड़ा और चौपड़ के डौल का, इमा-रतों में काम अक्सर काठ का। साहिब रज़ीडंट के रहने की जगह है। इस गुजरात में और भी बहुत से नव्वाब और राजा हैं, पर उन के इलाके निहायत छोटे, यहां तक कि बहुतेरे उनमें से एक ही गांव के मालिक हैं, और सिवाने उनके आपस में मिले जुले, इसलिये हमने उन सब को इसी अमलदारी के साथ रखना मुनासिब समझा, बहुतेरे तो उन में से अब तक महाराज गाइकवाड़ को कर देते हैं, पर कोई सरकार की हिमायत में भी आ गया है। गुजरात की प-श्चिम सीमा पर द्वारका का टापू है, हिन्दुओं का बड़ा तीर्थ है, द्वारका

के मंदिर को जो एक सौ चालीस फुट ऊंचा है जगत खूंट भी कहते हैं, मूर्ति रणछोड़जी की जो आदि थी उसको कोई छ सौ बरस गुजरता है मुसलमानों की दहशत से पंडे लोग गुजरात में डाकौर के दर्मियान जो गुजरात की पूर्व अलंग में भड़ौंच के साम्हने खंभात की खाड़ी पर घोघेबंदर के पास है ले आए, और वहां नई स्थापन की, उसे भी वहां न रख सके और पास ही एक छोटे से टापू में जिसे शंकुद्वार कहते हैं और जहां पहले शंकुनारायण की पूजा होती थी उठा ले गए, निदान अब प्राय डेढ़ सौ बरस से एक और नई मूर्ति बनाई है। यात्री लोग गोमती नदी में स्नान करके मूर्ति के दर्शन करते हैं, फिर १८ मील पर रामडा अथवा आरामराय में जाकर लोहे के तप्तमुद्रा से शंख चक्र गदा पद्म के चिन्ह अपने बाजू पर लेते हैं गोपी चन्दन, जिस से वैष्णव लोग तिलक देते हैं, इसी जगह एक तालाब से निकलता है। असली द्वारकापुर बंदर से जिसे सुदामापुर भी कहते हैं तीस मील बतलाते हैं, और कहते हैं, कि समुद्र में डूबी है। बड़ोदे से १७० मील वायुकोन उत्तर को झुकती हुई बन्नास नदी के बांए कनारे देसा में सरकारी छावनी है। गुजरात के प्रायद्वीप की दक्षिण सीमा के ऊपर समुद्र के कनारे हरिना कपिला और सरस्वती इन तीन नदियों के संगम पर जूनागढ़वाले नव्वाब की जागीर में पट्टन सोमनाथ बसा है। किसी जमाने में वह बहुत बड़ा शहर था, और ज्योतिर्लिंग सोमनाथ महादेव का वहां मंदिर था, उसके ५६ खंभों में जवाहिर जड़े थे, और सोने की दीवटों में दीये जलते थे, और कई मन सोने की जंजीरों में घंटे लटकते थे, दो हजार पुजारी पांच सौ कंचनी और तीन सौ गवैये इस मंदिर की सेवा करते थे। सन् १०२५ में मह-

मूदगज़नवी ने वहां से प्राय दस करोड़ रुपये का माल लूटा, और मूर्त्ति को भी तोड़ा, एक टुकड़ा ग़जनी की मस्जिद के जीने में जड़ दिया, और दूसरा बग़दाद में खलीफ़ा को तुहफ़ा भेजा। अब वह पुराना मंदिर तो खंड़हर पड़ा है, परंतु पास ही अहिल्याबाई ने एक नया मंदिर बनाकर फिर महादेव स्थापन किया है। सन् १८४२ में सरकारी फ़ौज ग़ज़नी से महमूदशाह के मक़बरे का जो संदली किवाड़ उतार लाई, और अब आगरे के क़िले में रखा है, वह किवाड़ इसी सोमनाथ के मंदिर के फ़ाटक से महमूद ले गया था। पट्टन सोमनाथ के पास ही वह मैदान हैं, जहां यादव लोग आपस में लड़कर कट मरे थे, और सरस्वती के तीर उस पीपल का पता देते हैं, जहां कृष्णचंद्र के पैर में व्याधे ने तीर मारा था। पट्टन सोमनाथ से उत्तर अनुमान चालीस मील की राह पर जूनागढ़ के पास, जो नव्वाब की जागीर है, समुद्र से २५०० फ़ुट ऊंचे रेवताचल पर्वत पर, जिसे गिरनार और गिरनगर भी कहते हैं, जैनियों का बड़ा भारी मंदिर और तीर्थ है। चढ़ने के लिये पहाड़ पर सीढ़ियां बनी हैं। दूर दूर से वहां उस मत के यात्री आते हैं। गिरनार पर्वत की जड़ से ४ मील और जूनागढ़ से कोस आध एक पूर्व पहाड़ के एक टुकड़े पर मगध देश के राजा महाराज अशोक का उसी पाली भाषा और अक्षर में जो प्रयाग के शिलास्तंभ पर है यह हुक्म खुदा हुआ है, कि उसके सारे राज्य में और यवन राजा अन्तिओकस और तलमि के राज्य में भी सब जगह मनुष्य और पशु पक्षियों के वास्ते दवाई खाने अर्थात् अस्पताल बनाये जावें, और उनके सुख के लिये थोड़ी थोड़ी दूर पर कूए खोदकर सड़क के दोनों तरफ़ दरख़्त लगाये जावें। इस लिप से ऐसा मालूम होता है कि यवन

राजा अन्तिओकस और मिसर देश के राजा तलमिफ़िलदेलफ़ सदा योनिसस के साथ, जैसा कि यूनानी किताबों में लिखा है, महाराज अशोक की बड़ी दोस्ती थी। कटक के जिले में भवानेश्वर के पास धवली गांव में भी पहाड़ के एक टुकड़े पर यही हुक्म खुदा है। खंभात नव्वाब की जागीर बड़ोदे से ३५ मील पश्चिम समुद्र की खाड़ी के कनारे मही नदी के मुहाने पर बसा है। आगे समुद्र उसकी दीवार से टकराता था, अब डेढ़ मील पीछे हट गया है। जब अहमदाबाद गुजरात की राजधानी था, तो खंभात उसका बंदर था, माल के जहाज़ उसी जगह लगते थे। अहमदाबाद की रौनक़ घटने से अब वह भी बिगड़ गया, नव्वाब को इस जागीर से साल में तीन लाख रुपया वसूल होताहै।—८—कच्छ बड़ोदेके पश्चिम वायुकोन को झुकता हुआ। यह इलाक़ा टापू की तरह सबसे निराला बसा है। दक्षिण को उसे समुद्र की खाड़ी गुजरात से जुदा करती है, पश्चिम को सिंधु की एक धारा उसे सिंध से जुदा करती है, और बाक़ी दोनों तरफ़ वह रनसे घिराहै, कि जो उसे उत्तरको सिंधुके सरकारी जिलों से, और पूर्व को गुजरात से जुदा करता है। कच्छ से पहिले अब कुछ हाल इस रन का सुन लेना चाहिये, असल इसकी संस्कृत का शब्द अरण्य मालूम होताहै, जिसका अर्थ जंगल उजाड़ है, पर यह तो जंगल नहीं बरन खारे पानी का एक दलदलहै, बिस्तार उसका आठ हज़ार मील मुरब्बासे कम नहीं, बरसात में तो वह सारा जल मग्न हो जाता है, पर दूसरी ऋतों किसी जगह छिछली झीलें होती हैं, और किसी जगह अगम्यनमक के दलदल, किसी मुक़ाम पर बालू के टीले नमकसे ढके हुए, और किसी स्थान पर घास भी जमी हुई जिसमें गाय भैंस इत्यादि पशु चरते हैं। मालूम होता है कि यह किसी समय में समुद्र था, पानी

हट गया इस कारन रन होगया। यहां जो नमक पैदा होताहै उसके महसूल में सरकार भी हिस्सेदार है। नमक के जमे हुए तख्ते बर्फि-स्तान की तरह कोसों तक नज़र पड़ते हैं, और उन पर जब सूरज च-मकता है तो महा अद्भुत और चमत्कारी तमाशे दिखलाई देते हैं, अर्थात् छोटी छोटी घास और झाड़ियां जो उस पर जमी रहती हैं बड़े बड़े भारी ऊंचे पेड़ों के जंगल दिखलाई देती हैं, कभी वह जंगल हिलते और झकोरे खाते हैं, कभी अलग अलग हो जाते हैं, और कभी फिर इकट्ठा, कभी ऐसा देख पड़ता है कि लश्कर और फ़ौजें मैदान में चली जाती हैं, और कभी गढ़ और क़िले उठते बनते और बिगड़ते नज़र आने लगते हैं, कारन दृष्टि के ऐसा धोखा खाने का इन जगहों में बिना उस विद्या की पुस्तकें पढ़े समझ में आना कठिन है इस लिये यहां नहीं लिखा, इन्हीं तमाशों को संस्कृत में गन्धर्व नगर और वहां के रजपूत सीकोट कहते हैं। रन के कनारों पर गोरखर अर्थात् जंगली गधे अक्सर मिलते हैं, घरेलू गधों से मज़बूत होते हैं, साठ साठ सत्तर सत्तर का झुण्ड इकट्ठा फिरा करता है, और वहां की नमकीन घास को बड़ी चाह से खाता है। निदान कच्छ का इ-लाक़ा पहाड़ी धरती में बसा है। पूर्व से पश्चिम को १६० मील लंबा और रन समेत उत्तर से दक्षिण को ९५ मील चौड़ा है। इस इलाक़े के पहाड़ किसी समय में ज्वालामुखी थे, अर्थात् उन में से आग नि-कलती थी, क्योंकि अब तक भी उन के पास वे सब धातें पड़ी हैं, जो आग के साथ पहाड़ों से निकलती हैं। धरती रेतल पथरीली और बहुधा ऊसर, पानी कम और अक्सर खारा, वृक्ष बहुत थोड़े कहीं कहीं बस्ती के पास नीम पीपल बबूल और खजूर देख पड़ते हैं, बड़ इमली और आम बहुत थोड़े, लोहे कोयले और फिटकिरी की खान

है। आदमी वहां के बड़े दग़ाबाज़, बरन कहावत हो गई है कि जो ऋषी मुनी भी कच्छ का पानी पायें शैतान बन जायें। आमदनी उस की आठ लाख रुपये साल से अधिक नहीं। पालकी और रथ पर वहां सिवाय राजा के और कोई नहीं चढ़ने पाता है। धरती रेतल, और सड़क अच्छी न होने के कारन गाड़ियां कम चलती हैं सवारी ऊंट और घोड़े की बहुत है। राजधानी भुज २३ अंश १५ कला उत्तर अक्षांस और ६९ अंश ५२ कला पूर्ब देशांतर में एक पहाड़ की बग़ल में जिस पर गढ़ बने हैं बसा है। उत्तर दिशा से दूर पर यह शहर बहुत बड़ा मालूम देता है, और सफ़ेद सफ़ेद मकान मसजिद और मन्दिर खजूर के पेड़ों में बड़ी शान से चमकते हैं, पर नज़दीक आने से वह रौनक़ और बात बाक़ी नहीं रहती। राजा के महल क़िले के अन्दर हैं, और उनकी गुम्ज़ियों पर ऐसा रोगन चढ़ाया है, कि वह चीनी सा मालूम होता है। बीस हज़ार आदमियों से ऊपर उस में बस्ते हैं, और कारीगर वहां के सोने चांदी की चीज़ें अच्छी बनाते हैं। भुज से ३५ मील दक्षिण नैर्ऋतकोन को झुकता समुद्र के तट पर मंडवी बंदर बड़े ब्यौपार की जगह है।—९--सिरोहा बड़ोदे की अमलदारी के उत्तर। पूर्ब उसके उदयपुर, और पश्चिम और उत्तर। को जोधपुर। बिस्तार तीन हज़ार मील मुरब्बा, और आमदनी अनुमान एक लाख रुपया साल है। राजधानी इस छोटे से इलाक़े की सिरोही २४ अंश ५२ कला उत्तर अक्षांस और ७३ अंश १५ कला पूर्ब देशांतर में है। सिरोही से १८ मील नैर्ऋतकोन को आबू का पहाड़ जिसे अर्बुदाचल भी कहते हैं समुद्र से पांच हज़ार फ़ुट ऊंचा है। जल की बहुतायत, झील सुन्दर, जंगल और हरियाली हर तरफ़, हवा ठंढी, मानों हिमालय का नमूना दिखलाता

है। गर्मी में आस पास की छावनियों के बहुत साहिब लोग वहां हवा खाने आते हैं, विशेष करके रोगी, कोठी बंगले उस पर कितने ही बनगए हैं, और बनते जाते हैं। अचलेश्वर महादेव की पूजा होती है, और जैनियों के दो मंदिर वहां संगमर्मर के बहुत उमदा बने हैं, नक़्क़ाशी का काम उन पत्थरों पर निहायत बारीकी के साथ किया है, पत्थर को मानों शीशा और हाथीदांत बना दिया है, सवा सवा लाख रुपये की लागत के तो उन मन्दिरों में एक एक ताक़ बने हैं, जगह क़ाबिल देखने के है, नक़्क़ाशी के काम का ऐसा मन्दिर हिन्दुस्तान में दूसरा नहीं निकलेगा। टाड साहिब अपनी किताब में लिखते हैं, कि ताजगंज का रौज़ा छोड़कर सारी दुनिया में कोई ऐसी इमारत नहीं है कि जो आबूके मंदिरों की बराबरी कर सके। जो फूल पत्ते इन मंदिरों में पत्थर काटकर निकाले हैं अंगरेज़ लोग भी इंगलिस्तान में इससे बिहतर नहीं बना सकते। ये करोड़ों रुपये लागत के मंदिर कुछ न्यूनाधिक हज़ार बरस गुज़रते हैं एक साहूकार ने बनाये थे।—१०—उदयपुर अथवा मेवाड़। पश्चिम उसे अर्बली पहाड़ सिरोही और जोधपुर से जुदा करता है, अजमेर का सरकारी ज़िला उत्तर को है, दक्षिण की तरफ़ बड़ोदा डूंगरपुर बांसवाड़ा और परतापगढ़ पड़ा है, और पूर्व सीमा उसकी बूंदी और संधिया की अमल्दारी से मिली है। यद्यपि इलाक़ा कुछ बहुत बड़ा नहीं है, पर कुल और दर्जे में उदयपुर का राना हिन्दुस्तान के सब राजाओं से बड़ा गिना जाता है, मुसल्मानों की सलतनत के पहले जिन दिनों में उनका इख़्तियार था, सारे राजा उन्हीं से गद्दी नशीनी का तिलक लेते थे, और वे उनके माथे पर अपने पैर के अंगूठे से तिलक करते थे। मार्शमेन साहिब अपनी किताब में उदयपुर के

रानाओं को ननिहाल के संबंध से क्रिस्तानके जने लिखते हैं, क्योंकि नौशेरवां ने रूम के क्रिस्तान बादशाह मारिस की बेटी ब्याही थी, और फिर उसकी बेटी उदयपुर के राना को आई। इस इलाक़े का बिस्तार ११६०० मील मुरब्बा है, और आमदनी अनुमान १२५०००० । धरती पहाड़ी, रास्तों में बहुधा घाटे और झाड़ियां। लोहे तांबे जस्ते और गंधक की खानहैं। राजधानी उदयपुर २४ अंश ३५ कला उत्तर अक्षांस और ७३ अंश ४४ कला पूर्ब देशांतर में पहाड़ों के घेरे के अंदर समुद्र से २००० फ़ुट ऊंचा बसा है। शहर के पश्चिम तरफ़ एक झील है, और उसके बीचमें रानाका महल जग मंदिर संगमर्मर का और बाग़ बहुत उमदा बनाहै। सिवाय इसके एक और झील राज समुद्र नाम पहाड़ों के बीच बारह मील के घेरे में शहर से पच्चीस मील उत्तरको है, उस में ३ मील लंबा संगमर्मर का बंध वांधा है, झील में उतरने के लिये बराबर ज़ीने लगे हुएहैं, और ज़ीनों पर ज़ीनत के लिये बड़े बड़े हाथी उसी पत्थर के तराश कर लगा दिये हैं, पूर्ब तरफ़ एक पहाड़ पर महल बना है। उदयपुर से २२ मील उत्तर ईशानकोन को झुकता बनास नदी के दहने कनारे श्रीनाथजी का प्रसिद्ध मंदिर, जिसे लोग नाथद्वारा भी कहते हैं, हिन्दुओं का बड़ा तीर्थ है। चित्तौड़ अथवा चीतौड़ का क़िला ७० मील उदयपुर के पूर्ब ईशानकोन को झुकता हुआ पुरानी तवारीखों में बहुत मशहूर है। आगे वही राजधानी था। यह क़िला एक पहाड़ पर जो दीवार की तरह खड़ा है और जहां खड़ा न था वहां संगतराशों ने सौ सौ फ़ुट तक ऊंचा छील कर दीवार की तरह खड़ा कर दिया है बारहमील के घेरे में बना है, उस पर जाने के लिये आध कोस की चढ़ाई का एक ही रास्ता है, और उस रास्ते में छ दर्वाजे पड़ते हैं,

दर्वाज़ा क़िले का बहुत ऊंचा और पुराने हिन्दुस्तानी डौल का बना है, मुसल्मानों की इमारतों से कुछ भी नहीं मिलता, उसके अन्दर कई शिवाले और छोटे छोटे महल बहुत उमदा बने हैं, नक़ाशी उन के पत्थरों पर देखने लाइक़ है, औरंगजेब के पोते अज़ीमुश्शान ने उसमें एक मकान मुसल्मानों की वज़ा का बनाकर उसका नाम फ़तेह महल रखा है, पानी के कुंड उस क़िले में बहुत इफ़रात से हैं, गिनती में चौरासी हैं, पर बारह उन में से बारहों महीने भरे रहते हैं, सब से अधिक देखने लाइक़ बस्तु वहां दो कीर्तिस्तंभ अर्थात् मीनार हैं, छोटा तो टूट गया पर बड़ा चौखुंटा नौ मरातिब का १२२ फ़ुट ऊंचा मीरांबाई के पति राना कुंभका बनाया संगमर्मर का अभी तक खड़ा है, उसके अंदर हर जगह महादेव पार्वती की मूर्ति बनाई है, और बहुत उमदा नक़ाशी का काम किया है, चढ़ने को उस में सीढ़ियां हैं, ऊपर चढ़ने से दूर दूर तक नज़र जाती है, क़िले का आदमियों से ख़ाली और सुनसान होना हर तरफ़ टूटी हुई इमारतों का नज़र पड़ना, क़िले के अंदर और पहाड़ के तले दस दस बारह बारह कोस तक जंगल उजाड़ का दिखलाई देना, और किताबों के लिखे हुए इस क़िले के पुराने हाल का याद आना, दिल को अजब एक इबरत लाता है। इसी क़िले के अंदर राजा भीम की पद्मिनी रानी सारे रनवास के साथ सन् १३०३ में अलाउद्दीन बादशाह के ज़ुल्म से अपना सत बचाने के लिये सती हुई थी, और इसी क़िले के अंदर रानी किरणवती सन् १५३३ में बहादुरशाह गुजरातवाले की दहशत से तेरह हज़ार स्त्रियों के साथ आग में जली थी, और बत्तीस हज़ार रजपूत केसरिये बागे पहिन कर लड़ाई में कटे थे, और इसी क़िले के अंदर सन् १५६७ में जब अकबरने आकर घेरा था उसके

क़िलेदार जयमल के मरने पर क़िलेवालों ने जौहर किया था, कि जिस में तीस हज़ार आदमी मारे गये। अब यह क़िला बिलकुल बेमरम्मत वीरान पड़ा है, इसकी आबादी के लिये लाखों ही आदमियों की फ़ौज चाहिये। क़िले के नीचे चीतौड़ का शहर जो अब केवल एक क़सबा रह गया है बस्ता है।—११—डूंगरपुर बांसवाड़ा और परतापगढ़ यह तीनों छोटे छोटे प्राय दो दो लाख रुपये साल की आमदनी के उदयपुर के दक्षिण सेंधिया और गाइकवाड़ की अमलदारी के बीच में पड़े हैं। डूंगरपुर का विस्तार एक हज़ार मील मुरब्बा, उस से पूर्व परतापगढ़ का विस्तार १५०० मील मुरब्बा, उन दोनों के दक्षिण बांसवाड़े का विस्तार भी १५०० मील मुरब्बा अनुमान करते हैं। डूंगरपुर के इलाक़े की राजधानी डूंगरपुर २३ अंश ५४ कला उत्तर अक्षांस और ७३ अंश ५० कला पूर्व देशांतर में बसा है, उसकी झील का बंध संगमर्मर के ढोकों से बांधा है। परतापगढ़ के इलाक़े की राजधानी परतापगढ़ २४ अंश २ कला उत्तर अक्षांस और ७४ अंश ५१ कला पूर्व देशांतर में समुद्र से १७०० फ़ुट ऊंचा शहरपनाह के अंदर बसा है, उसके चौगिर्द नाले खोले और जंगल उजाड़ बहुत हैं, चार कोस के फ़ासिले पर देवला नाम एक क़िला है। बांसवाड़े के इलाक़े की राजधानी बांसवाड़ा २३ अंश ३१ कला उत्तर अक्षांस और ७४ अंश ३२ कला पूर्व देशांतर में शहरपनाह के अंदर बसा है, शहर के बाहर एक पक्का तालाब है गिर्द उसके पीपल और इमली की घनी २ छांव, उस से आगे एक पहाड़ पर क़िले के बुर्ज हैं जो किसी समय वहां के राजा के रहने की जगह थी।—१२—बूंदी उदयपुर के पूर्व कोटे के पश्चिम और जयपुर के दक्षिण, निदान इन तीनों [illegible]-

मल्दारियों से यह इलाक़ा घिरा हुआ है। बिस्तार उसका २२०० मील मुरब्बा, आमदनी अनुमान दस लाख रुपये साल। राजधानी बूंदी २५ अंश २८ कला उत्तर अक्षांस और ७५ अंश ३० कला पूर्व देशांतर में बसी है। एक हिस्सा उसका नया और दूसरा पुराना कहलाता है। नई बूंदी शहरपनाह के अन्दर है, और वह शहरपनाह पहाड़ों पर जाकर जो प्राय ४०० फुट ऊंचे होवेंगे क़िले और महलों से मिल गई है। शहर का पुराना डौल, मंदिरों की बहुतायत, चौक की फ़राखी, होजों में फ़व्वारों का छुटना, शहर के पास ही एक सुंदर झील का होना आंखों को बहुत भला मालूम होता है, विशेष करके बाज़ार जो महलों के साम्हने है। पुरानी बूंदी नई बूंदी के पश्चिम है। शहर से उत्तर पहाड़ के घाटे में बहुत सुंदर सुंदर तालाब और राजा के महल और बाग़ और छतरियां बनी हैं, विशेष करके सुखमहल जो ऐन झील के बंध पर बनाया है, और जहां से बरसात के दिनों में पानी की चद्दर गिरा करती है।—१३—कोटा उसकी सरहद उत्तर में बूंदी के सिवाय कुछ थोड़ी जयपुर से भी मिली है, बाक़ी सब तरफ़ सेंधिया की अमल्दारी है। बिस्तार उसका साढ़े छ हज़ार मील मुरब्बा। आमदनी अनुमान पैंतालीस लाख रुपये साल, पर इस में से तिहाई मुल्क सरकार ने वहां के दीवान राजराना ज़ालिमसिंह की औलाद को दिलवा दिया, क्योंकि उस ने लड़ाइयों के वक़्त जब राजा महज़ नाबालिग़ था बड़ी बड़ी ख़ैरख़ाहियां की थीं। वे लोग अब झालरापाटन में जो कोटे के दक्षिण अग्निकोन को झुकता कुछ न्यूनाधिक ५० मील होगा रहते हैं। यह भी शहर अब बहुत ख़ासा आबाद हो गया है, जयपुर की तरह चौपड़ का बाज़ार और गलियां निकली हैं, शहरपनाह भी

मज़बूत है। राजधानी कोटा २५ अंश १२ कला उत्तर अक्षांस और ७५ अंश ४५ कला पूर्व देशांतर में चम्बल के दहिने कनारे शहर पनाह के अन्दर बसा है। खाई शहरपनाह के गिर्द पहाड़ काटकर खोदी है। शहर आबाद है, पर नामी जगह राजा के महलों के सिवाय और कोई नहीं। ये ऊपर लिखे हुए दोनों रजवाड़े अर्थात् बूंदी और कोटा हाड़ौती में गिने जाते हैं।—१४—टोंक बूंदी के उत्तर जयपुर की अमल्दारी से घिरा हुआ। आमदनी उसकी अनुमान दस लाख रुपया साल होवेगी। यह इलाक़ा नव्वाब मीरखां की औलाद के क़ब्ज़े में है। राजधानी टोंक २६ अंश १२ कला उत्तर अक्षांस और ७५ अंश ३८ कला पूर्व देशान्तर में बसा है। दो तरफ़ उसके पहाड़ हैं, और तीसरी तरफ़ पत्थर की दीवार कि जिस को पहाड़ों पर ले जाकर उन से मिला दिया है, पास ही एक छोटी सी झील है। नव्वाब के मकान बन्नास नदी पर जो शहर के उत्तर बहती है बने हैं। कुछ थोड़ी सी ज़मीन नव्वाब की सिरौंज के साथ जिसका असली नाम शेरगंज है कोटे और ग्वालियर की अमल्दारी के बीच में, और नीम बहेड़ा मेवाड़ के दर्मियान है। सब मिलाकर उस इलाक़े का बिस्तार अठारह सौ मील मुरब्बा होता है।–१५–जयपूर अथवा ढूंढार, टोंक बूंदी कोटा और करौली के उत्तर, और बीकानेर और अलवर के दक्षिण, पूर्व को उसके भरथपुर है, और पश्चिम को सरकारी ज़िला अजमेर का और किशनगढ़ और जोधपुर की अमल्दारियां। यह इलाक़ा १७५ मील लम्बा और १०० मील चौड़ा है। बिस्तार पंदरह हज़ार मील मुरब्बा धरती रेतल और बहुधा लोनी। उत्तर भाग में शेखावाटी के दर्मियान पहाड़ भी छोटे छोटे बहुत हैं, पर आब हवा अच्छी। तांबे और फिटकिरी

की खान है। आमदनी अनुमान पचासी लाख रुपया साल है, पर इस में चालीस लाख रुपया जागीर और कृष्णार्पण में जाता है। रुपया अशरफ़ी राजा की टकसाल से निहायत चोखा निकलता है। राजा यहां का अपने तईं रामचन्द्र की औलाद और उन्हीं का जानशीन बतलाता है। राजधानी जयपुर अथवा जयनगर कुछ ऊपर लाख आदमी की बस्ती है। राजा जयसिंह सवाई का बसाया २६ अंश ५५ कला उत्तर अक्षांस और ७५ अंश ३७ कला पूर्व देशांतर में पक्की शहरपनाह के अन्दर बसा है। यह शहर अपनी क़िता और वज़ा में सब से निराला है। दक्षिण के सिवाय तीनों तरफ़ पहाड़ों से घिरा है, और उन पहाड़ों पर क़िले बने हैं, दक्षिण तरफ़ भी जिधर मैदान पड़ता है शहर से कुछ फ़ासिले पर मोती डूंगरीका क़िला बहुत मजबूत बना है। यह शहर तीन मील लम्बा डेढ़ मील चौड़ा बालू के मैदान में बसा है। बाज़ार चौपड़ का बहुत चौड़ा और तीर की तरह सीधा, बरन गलियां भी चौपड़ के खानों की मिसाल सब सीधी आपस में मुक़ाबिल और ऐसी कोई नहीं जिस में गाड़ी न जा सके, दूकानें ऊंची खूबसूरत और एक सी, मकान जाली झरोखों से आरास्ता, गुम्ज़ियों पर सुनहरी कलसियां चढ़ी हुई, चूना उनका ऐसा सफ़ेद साफ़ और चमकदार कि संगमर्मर भी उसके आगे पानी भरे, सब के सब बराबर एक क़तार में लैन डोरी डालकर और दाग़बैल लगाकर बनाये हैं, अब मक़दूर नहीं कि कोई अपना मकान उस लैन से बाहर बढ़ा सके, यदि बढ़ावे या घटावे तो उसी दम राज का गुनहगार ठहरे, मन्दिर सरावगियों के लाखों रुपये की लागत के बने हैं, ठाकुरद्वारे भी अच्छे अच्छे इफ़रात से, कहते हैं कि यह शहर जयसिंह ने एक फ़रंगी कारीगर

इटाली के रहनेवाले से बनवाया था। महल महाराज के चौथाई शहर रोके खड़े हैं, और निहायत उमदा बने हैं, बाग़ हौज़ फव्वारे मकान तसवीरें सब देखने लाइक़ हैं, गोविंददेवजी का मंदिर महलों के अन्दर है, दर्बार का क़रीना अब तक भी पुरानी हिन्दुस्तानी चाल पर चला जाता है, मशालची और कहार भी बिना खूंटेदार पगड़ी और जामा पहने हुए महलों के दर्वाजे पर नहीं जाने पाता, और यदि कोई आदमी दुशाला और रूमाल दोनों साथ ओढ़कर वहां जावे तो दर्बान उन में से उसी दम एक चीज़ उतार कर ज़ब्त कर लेता है, ऐसा ही उन्हें राजा का हुक्म है। बारह बरस की उमर तक वहां के राजा को कोई मर्द नहीं देखने पाता, रनवास में रहा करता है। औरतें यहां की बहुत शौक़ीन बज़ादार और मर्दों के शिकार में होशयार होती हैं। आदमी झूठे। बर्तन वहां बालू से मलकर कपड़े से पोंछ डालते हैं, पानी से कदापि नहीं धोते। कबूतर दूकान्दारों से दाना पाने के कारन बाज़ार में इतने इकट्ठा रहते हैं, कि पांव तले दब जाने की दहशत हुआ करती है। बरसात में तो बड़े आराम की जगह है, नंगे पांव सारे बाज़ार फिरकर घर में चले आओ, फ़र्श पर कीचड़ का दाग़ न लगेगा, क्योंकि ज्योंही मेंह पड़ता है बालू सोख लेता है, पहाड़ों पर भी सबज़ी जम जाती है और झरने हर तरफ़ जारी होते हैं, पर गरमी में निहायत तकलीफ़ है, जब धूप से बालू तप जाता है तो भाड़ में चनों की तरह पैर भुनने लगते हैं, और बालू भी कैसा कि जिस में पिंडली तक धस जावे। तीन मील पूर्व अग्निकोन को झुकता पहाड़ के बीच गलता में सुन्दर मन्दिर और पानी के कुण्ड बने हैं, बरसात में सैर की जगह है। शहर से चार मील पर पहाड़ों में आमेर उस राज की

पुरानी राजधानी है, वहां भी महाराज के महल निहायत उमदा बने हैं, विशेष करके शीशमहल जिसके झरोखों में रंगीन शीशे अत्यन्त खूबसूरती से लगाए हैं। क़िला आमेर का पहाड़ के ऊपर बहुत बड़ा और मज़बूत है, उसके अन्दर कुए की तरह कई खचे हैं, जिसे वहां वाले ख़ाश कहते हैं, जिस आदमी से राजा नाराज़ होता है उस में डाला जाता है, और जव की रोटी और खारा पानी खाने पीने को पाता है, ख़ाश के अन्दर से जीता बिरला ही निकलता है, ग़ैर आदमी उस क़िले के अन्दर नहीं जाने पाता, साहिब लोगोंने भी अब तक उसे नहीं देखा। क़िले इस अमल्दारी में बहुत हैं पर रणथंभौर का क़िला जयपुर से ७५ मील अग्निकोन सब में मज़बूत है, उसके अन्दर भी ग़ैर आदमी अथवा साहिब लोग नहीं जाने पाते। यह वही क़िला है जिसके अन्दर सन् १२९८ में हमीर चौहान अलाउद्दीन ख़िलजी में लड़कर बड़ी बीरता के साथ मारा गया, और उसके रनवास की सारी रानियां, मुसल्मानों की ज़ियादती से बचने के लिये चिता में आग लगाकर जलीं, जयपुर से साठ मील उत्तर ईशानकोन को झुकता विराट के पास एक पहाड़ पर महाराज अशोक की आज्ञानुसार वही धर्म लिपि खुदी है, जो इलाहाबाद के शिलास्तंभ पर है, केवल इतना अधिक है, कि वेद मुनियों ने बनाये। राजा जयसिंह विद्या की बड़ी क़द्र करता था, ब्रजभाषा ने उसी के समय में रौनक़ पाई, बिहारी को सतसई के दोहरों के लिये वह एक एक अशरफ़ी देता था, बनारस दिल्ली मथुरा उज्जैन और जयपुर उसी ने पांचों जगह में ज्योतिष संबंधि बेधशाला और यंत्र बनवाये हैं।—१६—करौली उत्तर और पश्चिम जयपुर की अमल्दारी से घिरा हुआ, और दक्षिण को ग्वालियर, और पूर्व को धौलपुर

से मिला हुआ। बिस्तार उसका उन्नीस सौ मील मुरब्बा आमदनी पांच लाख रुपया साल। राजधानी करौली २६ अंश ३२ कला उत्तर अक्षांस और ७६ अंश ५५ कला पूर्व देशांतर में पुश्पेरी नदी के तट पर बसा है। क़िला राजा के रहने का शहर के बीच में है।—१७—धौलपुर पश्चिम करौली, दक्षिण ग्वालियर, उत्तर भरथपुर, पूर्व्व सरकारी जिला आगरे का। बिस्तार सवा सोलह सौ मील मुरब्बा। आमदनी सात लाख रुपया साल। राजधानी धौलपुर २६ अंश ४२ कला उत्तर अक्षांस और ७७ अंश ४४ कला पूर्व देशांतर में चंबल के बाएं कनारे कोस आध एक के तफ़ावत पर बसा है।—१८—भरथपुर दक्षिण धौलपुर, उत्तर अलवर, पश्चिम जयपुर, पूर्व आगरा और मथुरा के सरकारी ज़िले। बिस्तार दो हज़ार मील मुरब्बा। आमदनी बीस लाख रुपया साल। रूपबास के परगने में लाल पत्थर की खान है, इमारत के वास्ते दिल्ली आगरे इत्यादि आस पास के शहरों में बहुत जाता है। राजधानी भरथपुर २७ अंश १७ कला उत्तर अक्षांस और ७७ अंश २३ कला पूर्व देशांतर में कच्ची शहरपनाह के अन्दर प्राय आठ मील के घेरे में बसा है। शहरपनाह बहुत चौड़ी और ऊंची है, यदि मरम्मत अच्छी तरह रहे तो तोप के गोलों से हर्गिज़ उसको सदमा नहीं पहुंच सकता, जो गोला आवेगा उसी में रहजावेगा, पत्थर की दीवार से कच्ची दीवार का ढाहना बहुत मुशकिल है, बहुतेरी ऐसी जगह हैं जहां सख़्ती से नर्मी ज़ियादः काम आती है। शहरपनाह के गिर्द खाई भी खुदी है, और झीलें इस तरह की हैं कि यदि उनके बंध काट देवे तो शहर से बारह कोसों तक पानी ही पानी हो जावे, दुश्मन की फ़ौज को कभी खड़े रहने की भी जगह न मिले। शहर के

बीच में पक्का क़िला है, उस में राजा रहता है। क़िले के गिर्द ऐसी चौड़ी खाई है, कि अच्छी ख़ासी एक छोटी सी नदी मालूम होती है। भरथपुर से कोस आठ एक पर डीग में महाराज का बाग़ बहुत उमदा और लाइक़ देखने के है, मकान भी उस में अच्छे अच्छे बने हैं, और नहर फ़व्वारे और चादरें इफ़रात से हैं एक बारहदरी में जिसे मच्छी भवन कहते हैं, इतने फ़व्वारे लगे हैं, कि दर दीवार खंभे हर जगह से पानी निकलता है, और उनकी फुहार ऐसी उड़ती है कि जब सूरज उनके साम्हने रहता है तो उसकी किरणों से उस मकान के अंदर उन फुहारों में दो इन्द्र धनुष बहुत रंगीन और चटकीले बन जाते हैं। राजा वहां का अभी बालक है इस कारन मुल्क का इन्तिज़ाम साहिब अजंट करते हैं। क़िला बयाने का भरथपुर के दक्षिण नैर्ऋतकोन को झुकता हुआ एक दिन के रस्ते पर प्रसिद्ध है, किसी समय में बहुत बड़ा शहर था, और आगरा आबाद होने के पहिले यही शहर उस सूबे की राजधानी था, बरन सिकन्दरलोदी ने उसे अपना पायतख़्त किया। क़िला पहाड़ पर मज़बूत बना है, कुंड पानी के ऐसे गहरे हैं कि उन में घड़ियाल तैरते हैं, बीच से एक लाट पत्थर की खड़ी है उस पर कुछ पुराने हर्फ़ भी खुदे हुए हैं, और महलों के खंभे पर दो थापे पंजों के लगे हैं, वहां वाले बतलाते हैं कि जब बादशाही फ़ौज का चढ़ाव हुआ तो रानियों ने जौहर किया, और यह एक रानी ने उस समय आप अपने लहू से थापे लगाए थे।–१९–अलवर अथवा माचेड़ी दक्षिण भरथपुर, और जयपुर और पश्चिम केवल जयपुर, बाक़ी दोनों तरफ़ मथुरा और गुड़गांवे के सरकारी ज़िलों से घिरा है। बिस्तार इसका ३५०० मील मुरब्बा। जंगल पहाड़ बहुत हैं। वह इलाक़ा जिसे तवारीख़ों में मेवात

के नाम से लिखा है इसी अमल्दारी में आगया, केवल थोड़ा सा भरथपुर के राज में है। आमदनी अठारह लाख रुपया साल। कुछ न्यूनाधिक पैंतालीस बरस का अर्सा गुज़रता है कि वहां के राजा को यह जुनून सूझा कि जैसे मुसल्मानों ने किसी ज़माने में हिन्दुओं को सताया था उसी तरह वह उनको सताने लगा, बहुत से मुसल्मान मुल्लाओं के नाक कान काटकर फ़ीरोज़पुर के नव्वाब के पास भेज दिये, क़बरें सारी खुदवाडालीं और हड्डियां गधों पर लदवाकर अपने इलाक़े से बाहर फिकवा दीं, और मस्जिदें ढहाकर उनके पत्थरों पर तेल सेंदुर चढ़ा भैरव बना दिया। राजधानी अलवर २० अंश ४४ कला उत्तर अक्षांस और ७६ अंश ३२ कला पूर्व देशांतर में एक पहाड़ के तले बसा है, और उस पहाड़ पर जो वहां से प्राय १२०० फ़ुट ऊंचा होवेगा एक क़िला बना है।—२०—किशनगढ़ पूर्व और दक्षिण जयपुर, और उत्तर और पश्चिम जोधपुर और अजमेर के सरकारी ज़िले से घिरा हुआ है। बिस्तार ७०० मील मुरब्बा। आमदनी तीन लाख रुपया साल। राजधानी किशनगढ़ २६ अंश ३७ कला उत्तर अक्षांस और ७४ अंश ४३ कला पूर्व देशांतर में शहरपनाह के अन्दर बसा है।—२१—जोधपुर अथवा माड़वाड़ पूर्व जयपुर सरकारी ज़िला अजमेर का और उदयपुर से, दक्षिण उदयपुर सिरोही और बड़ोदे से, पश्चिम सिंध और जैसलमेर से, और उत्तर जैसलमेर और बीकानेरसे घिरा हुआहै। अनुमान अढ़ाई सौ मील लंबा और डेढ़ सौ मील चौड़ा और बिस्तार में पैंतीस हज़ार मील मुरब्बा होवेगा। ज़मीन बिलकुल रेगिस्तान है, कूए बहुत गहरे खोदने पड़ते हैं, तिसमें भी पानी खारा निकलता है। संस्कृत में रेगिस्तान को जहां पानी न हो मरु-भूमि कहते हैं, इसी

कारन इस इलाके का नाम माड़वाड़ रहा। सीसे और संगमर्मर की खान है। आमदनी सत्तरह लाख रुपया साल। ऊंट और बैल अच्छे होते हैं, दो दो सौ रुपए तक की बैल की जोड़ी बिकती है, और ऊंटों को वहां अकसर हल में भी जोत देते हैं। आदमी वहां के अफ़यून बहुत खाते हैं, यहां तक कि पान इलायची की तरह अपने मुलाक़ातियों की तवाज़ो अफ़यून की गोलियों से करते हैं। राजधानी जोधपुर अनुमान ८०००० आदमी की बस्ती २६ अंश १८ कला उत्तर अक्षांस और ७३ अंश पूर्व देशांतर में छ मील के घेरे में बसा है, क़िला बहुत मज़बूत है।—२२—बीकानेर दक्षिण जोधपुर, और जयपुर उत्तर बहावलपुर और पटियाला, पश्चिम जैसलमेर, और पूर्व सरकारी ज़िला हरियाने का। बीकानेर और जैसलमेर और बहावलपुर की अमल्दारीयों के बीचमें बड़ाभारी रेगिस्तान का मैदान पड़ा है, कि जिसके दर्मियान सैकड़ों कोसके घेरों में नाम को भी बस्ती नहीं मिलती, पानी के बदले मृगतृष्णा का जल, अथवा कहीं कहीं बड़े बड़े जंगली तरबूज़ होते हैं, उन्हीं से मुसाफ़िर लोग अपनी प्यास बुझा लेते हैं। क्या महिमा है सर्व शक्तिमान जगदीश्वर की जहां देखने को भी बूंद भर पानी नहीं मिलता, वहां बालू में आप से आप ऐसे रसीले फल पैदाकर दिये हैं। धरती इन दोनों इलाक़ों की अर्थात् बीकानेर और जैसलमेर की रेतल है, सौ सौ दो दो सौ हाथ गहरे कूए खोदने पड़ते हैं। खेती ज्वार बाजरे के सिवाय और चीज़ों की बहुत कम, दरख़्तों का नाम नहीं, बाग़ कौन जानता है, करील फोक झड़बेरी और आक तो अलबत्ता दिखलाई देते हैं, नदी नाले क़सम खाने को भी इन इलाक़ों में नहीं हैं। लंबान इसकी डेढ़ सौ मील से ऊपर और चौड़ान प्राय सवा सौ मील

बिस्तार सत्तर हज़ार मील मुरब्बा, और आमदनी साढ़े छ लाख रुपया साल । राजधानी बीकानेर २७ अंश ५७ कला उत्तर अ- क्षांस और ७३ अंश २ कला पूर्ब देशांतर में शहरपनाह के अन्दर बसा है, बग़ल में क़िला भी ऊंचा और दीदारु बना है ।—२३— जैसलमेर पूर्ब बीकानेर, पश्चिम सिंध, उत्तर बहावलपुर, दक्षिण जोधपुर । बिस्तार बारह हज़ार मील मुरब्बा । इस में बीकानेर से भी बढ़कर रेगिस्तान और उजाड़ है । बस्ती फ़ी मील मुरब्बा सात आदमी की भी नहीं पड़ती । आमदनी अनुमान एक लाख रुपया साल । राजधानी जैसलमेर २६ अंश ४३ कला उत्तर अक्षांस और ७० अंश ५४ कला पूर्ब देशान्तर में बसा है । जोधपुर के रस्ते में गर्मियों के दर्मियान यहां से तीन मंजिल तक बिलकुल पानी नहीं मिलता, मुसाफ़िर लोग मशकें भरकर ऊंटों पर अपने साथ रख लेते हैं । ये ऊपर लिखे हुए पंदरहों इलाक़े अर्थात् सिरोही से जै- सलमेर तक राजपुताने में गिने जाते हैं, और सब के सब अजमेर की अजण्टी के ताबे हैं ।—२४—बहावलपुर दक्षिण जैसलमेर और बीकानेर, उत्तर पंजाब के सरकारी ज़िले, पश्चिम सिंध, और पूर्ब बीकानेर और पटियाला । यह इलाक़ा सतलज और सिन्धु के क- नारे कनारे तीन सौ दस मील तक लम्बा चला गया है, और चौ- ड़ान में एक सौ दस मील है, बिस्तार प्राय बीस हज़ार मील मुरब्बा होवेगा । नदियों के तटस्थ तो भूमि उपजाऊ है, पर दक्षिण की तरफ़ निरा बालू का मैदान उजाड़ पड़ा है । आमदनी अनुमान पंदरह लाख रुपया साल । नव्वाब के रहने की जगह बहावलपुर २९ अंश १९ कला उत्तर अक्षांस और ७१ अंश २९ कला पूर्ब दे- शांतर में सतलज के बांएं कनारे पर कच्ची शहरपनाह के अन्दर

माय बीस हज़ार आदमियों की बस्ती है । यहां सतलज को गर्रा पुकास्ते हैं । मकान इस शहर में कच्ची ईंटों के बहुत हैं, लुंगी और रेशमी खेस वहां अच्छे बनते हैं, ऊंट भी वहां के चालाक होते हैं । बहावलपुर से ५० मील दक्षिण रेगिस्तान में देवरावल अथवा देरावल का मज़बूत क़िला है, नव्वाब का ख़ज़ाना उसी में रहता है । बहावलपुर से पश्चिम नैर्ऋतकोन को झुकता अनुमान तीस मील के तफ़ावत पर पंजनद के बांए कनारे जो सतलज का चनाब के साथ मिलने पर वहां नाम पुकारते हैं ऊच का पुराना शहर बसा है।–२५–अम्बाले की अजएटी के ताबे रजवाड़े बहावलपुर के पूर्व । यह इलाक़े पश्चिम और दक्षिण तरफ़ कुछ दूर तक बीकानेर की अमल्दारी से मिले हैं, बाक़ी सब तरफ़ सरकारी ज़िलों से घिरे हैं। इन में सब से बड़ा इलाक़ा महाराजै पटियाले का जो सिखों की क़ौम में हैं बहावलपुर की हद से लेकर पहाड़ों में शिमला की छावनी तक चला गया है, उसके बीच बीच में दूसरे इलाक़े इस ढब से आगए हैं लम्बान और चौड़ान अनुमान करना बहुत कठिन है, यदि बटिंडे से शिमला तक इस अमल्दारी को नापो तो १७५ मील होती है, परन्तु बिस्तार उसका साढ़े चार हज़ार मील मुरब्बा से अधिक नहीं है । आमदनी बीस लाख रुपये साल की होवेगी । राजधानी पटियाला ३० अंश १६ कला उत्तर अक्षांस और ७६ अंश २२ कला पूर्व देशांतर में कच्ची शहरपनाह के अन्दर बसा है, बीच में क़िला है, उसके अन्दर महाराज के रहने के महल अच्छे अच्छे बने हैं । शहर से पांच छ कोस के तफ़ावत पर बहादुर गढ़ का क़िला और उसमें महल जो महाराज ने अब बनवाए हैं देखने लायक़ हैं । बहावलपुर की हद की तरफ़ लुधियाने से ७५ मील नैर्ऋतकोन को

बर्टिंडे का क़िला रेगिस्तान के मैदान में बहुत मज़बूत बना है, खज़ाना महाराज का उसी में रहता है, इस के गिर्दनवाह को लखी—जंगल कहते हैं, घोड़ों की चराई के लिये वहां कोई चालीस कोस के घेरे में बहुत अच्छी जगह है। पटियाले से ३५ मील उत्तर सरहिंद जो बादशाही ज़माने में एक बहुत बड़ा आबाद शहर था अब वीरान पड़ा है, खंडहर पुरानी इमारतों के दूर दूर तक दिखलाई देते हैं, पर बस्ती अच्छे क़सबे के बराबर भी नहीं है। इस अमल्दारी के दर्मियान शिमला की राह में पहाड़ों के नीचे कालका से दो कोस इधर पिंजौर के बीच औरंगज़ेब बादशाह के कोकाफ़िदाईखां का बाग़ बहुत नादिर बना है, वहां पहाड़ से जो पानी का सोता आता है उसी को उस बाग़ के फ़व्वारों का खज़ाना बना दिया है, निदान इस पहाड़ के पानी की बदौलत उस बाग़ में सैकड़ों फ़व्वारे चादरें और नहरें आप से आप रात दिन जारी रहती हैं, कहीं हौज़ों के बीच में बारहदरियां बनी हैं, और कहीं बारहदरियों के बीच में हौज़ बने हैं। पिंजौर जगह बहुत रम्य और सुहावनी है, पर बर्सात में वहां की हवा बिगड़ जाती है। बाक़ी रजवाड़े जिन के रईसों को अपने इलाक़े में दीवानी फ़ौजदारी का इख़्तियार हासिल है, इस अजंटी में नाभा जींद मालैरकोटला फ़रीदकोट ममदौत बूढ़िया छिछरौली और रायकोट हैं। बिस्तार इन सब का तेईस सौ मील मुरब्बा से अधिक नहीं है। इन में नाभा जींद और मालैरकोटला यह तीनों तो तीन तीन लाख रुपए साल की आमदनी के हैं और बाक़ी सब इलाक़े बहुत छोटे छोटे हैं। मालैरकोटला फ़रीदकोट और ममदौत में मुसल्मानों की अमल्दारी है, यह तीनों रईस नव्वाब कहलाते हैं। नाभा पटियाले से पंद्रह मील पश्चिम वायुकोन

को झुकता, जींद पटियाले से सत्तर मील दक्षिण, मालैरकोटला पटियाले से पैंतीस मील वायुकोन, फ़रीदकोट पटियाले से १०५ मील पश्चिम नैर्ऋतकोन को झुकता, ममदौत पटियाले से १३० मील पश्चिम वायुकोन को झुकता, बूढ़िया पटियाले से ६० मील पूर्व अग्निकोन को झुकता, छिछरौली पटियाले से ६० मील पूर्व और रायकोट पटियाले से ४० मील ईशानकोन को बसा है।—२६—कपूरथला अथवा सिखराजा आलूवालिये का इलाका सतलज और व्यासा के बीच चारों तरफ़ पंजाबके सरकारी ज़िलों से घिरा हुआ, आमदनी दो लाख रुपया साल, राजधानी कपूरथला ३१ अंश २४ कला उत्तर अक्षांस और ७५ अंश २१ कला पूर्व देशांतर में व्यासा नदी के बांएं कनारे दस मील हटकर बसा है।—२७—रुहेलों का रामपुर मुरादाबाद और बरेली के सरकारी ज़िलों से घिरा हुआ। बिस्तार सात सौ मील मुरब्बा। आमदनी दस लाख रुपया साल। रामपुर नव्वाब के रहने की जगह २८ अंश ४९ कला उत्तर अक्षांस और ७८ अंश ५२ कला पूर्व देशांतर में कौशिल्या नदी के बांएं कनारे बसाहै।—२८—मनीपुर ब्रह्मपुत्र के पार हिन्दुस्तान की पूर्वहद पर है। पश्चिम और उत्तर सिलहट और आशाम के सरकारी ज़िलों से, और पूर्व और दक्षिण बर्म्हा की अमलदारी से मिला हुआ है। बिस्तार साढ़े सात हज़ार मील मुरब्बा। आमदनी लाख रुपए साल से कम है। मुल्क जंगल पहाड़ों से भरा हुआ है, और पहाड़ चार हज़ार फ़ुट तक ऊंचे हैं। लोहे की खान है। आदमी वहां के खसिये जिनकी सूरत और बोली भोटियों से मिलती है प्राय जंगली से हैं। नागे वहां बहुत बसते हैं, देवी के उपासक हैं, और आदमी का बल देते हैं। राजधानी मनीपुर २४ अंश ३० कला उत्तर अक्षांस और ९४

अंश ३० कला पूर्व देशांतर में उसी नाम की नदी के दहने कनारे बसा है। इसे अंगरेज कसाइयों का मुल्क कहते हैं क्योंकि बर्म्हावाले उन्हें काशी पुकारते हैं और बंगाली उन्हें मघालु कहते हैं, पर वे अपना नाम मोइते बतलाते हैं ॥

अब इस से आगे नर्मदा पार दक्षिण के इलाके लिखे जाते हैं—१-हैदराबाद, यह बड़ा इलाका तापी नदी से लेकर जहां वह सेंधिया की अमलदारी से मिलता है दक्षिण में तुङ्गभद्रा और कृष्णा नदी तक चला गया है। ईशानकोन की तरफ़ बरदा नदी प्राणहत्या में और प्राणहत्या गोदावरी में मिलकर इस इलाके को नागपुर के इलाके से जुदा करती है, और बाक़ी सब तरफ़ वह बंगाल बम्बई और मंदराज हाते के सरकारी ज़िलों से घिरा हुआ है। जिस ज़मीन का नाम संस्कृत में तैलंग देश है वह बहुत सी इस इलाके के अन्दर आ गई है। यह इलाका २८० मील लंबा और ११० मील चौड़ा और प्राय लाख मील मुरब्बा बिस्तार रखता है। बादशाही अमलदारी में यह एक सूबा गिना जाता था, पर अब उसकी हदों में बड़ा फ़र्क़ पड़ गया क्योंकि बिदर और औरंगाबाद के सूबों के हिस्से भी दाखिल हो गये हैं। ज़मीन बलंद उपजाऊ और पहाड़ी है, पर पहाड़ ऊंचा कोई नहीं, हवा मोतदिल, बेइंतिज़ामी के सबब ज़मींदार कंगले, और ज़मीन बहुधा परती, जहां किसी समय में सुंदर नगर बस्ते थे वहां अब गीदड़ रोते हैं। मुल्क डेढ़ करोड़ रुपये से ऊपर का है, पर इंतिज़ाम अच्छा न होने के सबब नव्वाब के खज़ाने में अब इसका आधा रुपया भी नहीं आता। वहां के नव्वाब के पास एक पलटन औरतों की है, नाम उसका ज़फ़रपलटन, बरदी और क़वाइद अंगरेज़ी पलटन के सिपाहियों की सी, तन-

ख़ाह पांच पांच रुपया महीना। ये औरतें जो सिपाहियों का काम करती हैं, गारद्नी कहलाती हैं। सन् १७९५ में जब वहां के नव्वाब ने दौलतराव सेंधिया से लड़कर शिकस्त खाई थी, तो उस लड़ाई में करदला के मैदान के दरमियान दो पलटनें इन गारदनियों की मामा वर्णन और मामा चंबेली के ज़ेर हुक्म उसके साथ थीं, और बहरसूरत वह नव्वाब के सिपाहियों से कुछ बुरा नहीं लड़ीं। राजधानी हैदराबाद अथवा भागनगर १७ अंश १५ कला उत्तर अक्षांस और ७८ अंश ३५ कला पूर्व देशांतर में मूसा नदी के दहिने कनारे जिस पर पक्का पुल बना हुआ है पक्की शहर पनाह के अन्दर चार मील लंबा तीन मील चौड़ा बसा है। रस्ते तंग और फ़र्श भी उन में बुरा, बस्ती उस में अनुमान दो लाख आदमियों की है। नव्वाब के महल और कई एक मस्जिदें देखने लायक़ हैं। छ मील पश्चिम एक पहाड़ पर गोल कुंडे का प्रसिद्ध मज़बूत क़िला है, वहां नव्वाब का ख़ज़ाना रहता है। तीन मील उत्तर सिकन्दराबाद में सरकारी फ़ौज की बहुत बड़ी छावनी है, कि जो नव्वाब की हिफ़ाज़त के वास्ते बमूजिब अहदनामों के वहां रहती है, ख़र्च उस का नव्वाब देता है और उस के सहज में वसूल हो जाने के वास्ते बराड़ का इलाक़ा अपनी अमल्दारी के वायुकोन में सरकार के सिपुर्द कर दिया है। सरकार की तरफ़ से एक साहिब रज़ीडंट उस दरबार के वास्ते मुक़र्रर है। हैदराबाद के वायुकोन की तरफ़ प्राय तीन सौ मील के फ़ासिले पर औरंगाबाद का शहर, जो मुसल्मानों की बादशाहत में उस नाम के सूबै का राजधानी था, और फिर बहुत दिन तक हैदराबाद के नव्वाब का भी राजधानी रहा, अब वीरान सा होगया, अब और बेरौनक़ पड़ा है। साठ हज़ार आ-

दमी से अधिक नहीं बसते पुराना नाम उस का गर्क है, पहाड़ से काटकर शहर में पानी की नहर लाये हैं, हर तरफ़ साफ़ पानी से भरे हुए हौज़ और उन में फ़व्वारे छुट रहे हैं, बाजार लम्बा चौड़ा, औरंगज़ेब के महल खंड़हर, एक तरफ़ को उसकी बेटी का मक़बरा संगमर्मर के गुम्बज़ का और एक फ़क़ीर की क़बर है, उसमें बहुत से हौज़ चादरें और फ़व्वारे बने हुए हैं। औरंगाबाद से सात मील वायुकोन को दौलताबाद का मशहूर क़िला है, यह क़िला महादेव की पिंडी की तरह एक खड़े पहाड़ पर बना है, प्रायः ५०० फ़ुट वहां से ऊंचा और चारों तरफ़ से बेलाग है, उस पहाड़ का अधोभाग प्राय एक तिहाई तक छील छील कर दीवार की तरह सीधा कर दिया है, राह चढ़ने की उस पर किसी तरफ़ भी नहीं, पहाड़ के गिर्द खाई है, और फिर खाई के गिर्द तिहरी दीवार, उन तीनों दीवारों के बाहर शहर बसता है, और शहर के बाहर फिर शहरपनाह है, क़िले के अन्दर जाने के लिये सुरंग की तरह पहाड़ के अन्दर ही अन्दर पत्थर काटकर सीढ़ियां बनाई हैं, जैसे किसी मीनार पर चढ़ते हैं उसी तरह उसमें भी मशाल बालकर जाना होता है, पहले तो वह रास्ता ऐसा तंग है कि आदमी को झुककर दुहरा हो जाना पड़ता है, पर फिर तीन गज़ चौड़ा और तीन गज़ ऊंचा है, बीच बीच में एक आदमी के जाने लाइक़ जीने काटकर पानी लाने के लिये खाई तक रस्ते बना दिये हैं, ज़खीरे रखने के वास्ते बड़े बड़े तहखाने बने हैं, और फिर जहां वह रास्ता पूरा उसके मुंह पर एक बड़ा भारी लोहे का तवा रखा है, कि यदि शत्रु इस रास्ते में भी आ घुसे तो उस तवे को उसके मुंह पर डालकर आग फूंक दें, जिस में मारे गर्मी के वह उसी रास्ते में भुनकर कबाब हो जावे, क़िले के

अन्दर एक मीनार १६० फ़ुट ऊंचा बना है, पहाड़ की चोटी पर जहां नव्वाब का निशान खड़ा है एक तोप पीतल की १८ फ़ुट लंबी बारह सेर के गोलेवाली रखी है, क़िले के अन्दर कई एक पानी के कुण्ड हैं, मालूम नहीं कि यह क़िला किस जमाने में और किस ने बनाया, पर जब पहाड़ छीलने और सुरंग काटने की मिहनत पर ख़याल करते हैं, तो अक़्ल भी हैरान सी रह जाती है, लड़कर इस क़िले को फ़तह करना कठिन है, केवल क़िलेवालों की रसद बन्द करने से हाथ आ सकता है। पहले इस जगह का नाम देवगढ़ था, चौदहवीं सदी के शुरू में मुहम्मद तुग़लक़शाह दिल्ली उजाड़कर वहां वालों को देवगढ़ में बसाने के लिये ले गया था, और उसका नाम दौलताबाद रखकर अपनी राजधानी मुक़र्रर किया, पर फिर अन्त में उसे दिल्ली ही को आना पड़ा। दौलताबाद से सात मील वायु-कोन को इल्लूरू गांव के पास, जिसे अंगरेज़ लोग इलोरा कहते हैं, और किसी समय में संगीन शहरपनाह के अन्दर अच्छा ख़ासा शहर बसता था, कोई एक मील लम्बे अर्धचन्द्राकार पहाड़ को काटकर महा अद्भुत मन्दिर बनाए हैं। पहाड़ में काटे हुए जिन सब मंदिरों का बर्णन इस पुस्तक में हुआ है ये इल्लूरूवाले मन्दिर उन सब से अधिक उत्तम हैं, उनकी ख़ूबी देखने ही से समझ में आ सकती है, इस जगह केवल कैलास जिस्में निहायत उमदा काम किया है, और बड़े मंदिर का बिस्तार मात्र लिख देते हैं.................फ़ुट

कैलास का दर्वाज़ा ऊंचा..१४

रास्ता दर्वाज़े के अन्दर जिस्में दुतरफ़ा मकान बने हैं लम्बा.....४२

भीतर का चौक.........लम्बा......................................२४७

चौड़ा..१५०

बड़ा मंदिर दर्वाज़े से पिछली दीवार तक लम्बा..................१०३
चौड़ा..६१
ऊंचा...१८

आदिनाथसभा जगन्नाथसभा परशुरामसभा इन्द्रसभा लंका तीनलोक नीलकण्ठ दुखघर जनवासा रावन की खाई इत्यादि और सब मन्दिरों में भी इन दोनों के सिवाय निहायत बारीकी और कारीगरी के साथ तरह तरह की मूर्तें और सुन्दर सुन्दर सूरतें बनाई हैं, और तमाशा यह कि ये सारे मन्दिर एक उसी पत्थर के पहाड़ को काटकर निकाले हैं बड़ा आश्चर्य्य वहां इस बात से आता है कि उत्तर तरफ़ के मंदिर तो जैन और दक्षिण के बौध और बीचवाले शैनमत के बने हैं। विश्वकर्मा की सभा में एक बहुत बड़ी बुध की मूर्ति रखी है, वहांवाले उसे विश्वकर्मा बतलाते हैं, कैलास में मध्य महादेव का लिंग है, बाक़ी चारों तरफ़ और सब देवता हैं, जैन मंदिर में नंगी मूर्त्ति दिगम्बरी आमनाय वालों की बनी हैं। बरसात में जब पहाड़ों से झरने झरते हैं, और कुण्ड सब भर जाते हैं, तो यह जगह बड़ी बहार दिखलाती है। मालूम नहीं कि यह मंदिर किसने और किस समय में बनाये थे, पर बड़ा ही रुपया खर्च पड़ा होगा। दौलताबाद से छ मील इल्लूरू के रास्ते में ४५० फुट ऊंचे उसी पहाड़ के घाटे पर जिस्मे मंदिर काटे हैं शहरपनाह के अन्दर रौज़ा नाम एक बस्ती है, यद्यपि अब वीरानी पर है तौ भी स्थान सुहावना है, वहां सय्यद जैनुलआबिदीन और औरंगज़ेब बादशाह की क़बरें हैं, सिवाय इन के और भी ज़ियारत्तगाहें कई हैं। हैदराबाद से ७३ मील वायुकोन को खाई और शहरपनाह के अन्दर जिसका दौर छ मील होवेगा बिदर का

पुराना शहर बसा है। बादशाही अमल्दारी में उसके साथ उसी नाम का एक सूबा गिना जाता था और शास्त्रों में उसका नाम विदर्भ लिखा है, पर बहुत लोग नागपुर को विदर्भ मानते हैं। वहां के हुक्के रकाबी आबखोरे इत्यादि रूप जस्त के प्रसिद्ध हैं, और उस शहर के नाम से बिदरी कहलाते हैं। अमीर बरीद का मक़बरा वहां देखने लाइक़ है। हैदराबाद से १३५ मील उत्तर वायुकोन को झुकता गोदावरी के बांएं कनारे नांदेड में, जो किसी समय उस नाम के सूबे की राजधानी था, सिख लोगों का तीर्थ है। गुरु गोविंदसिंह उसी जगह मारा गया था। औरंगाबाद के उत्तर ईशानकोन को झुकता हुआ तिरपन मील पर अजन्ती अथवा अजयंती के घाटे के पास पहाड़ खोद कर गुफ़ा के तौर किसी जमाने के मंदिर बने हुए हैं, देखने लाइक़ हैं। अजंती से पच्चीस मील दक्षिण अग्निकोन को झुकता हुआ असाई अथवा असूस्ये का गांव है, वहां सन् १८०३ में जनरल विलिज़ली ने ४५०० सिपाहियों से महाराजै नागपुर और दौलतराव सेंधिया दोनों की इकट्ठी फ़ौज को जो ३०००० से कम न थी शिकस्त दी थी।—२—मैसूर, हैदराबाद के दक्षिण, चारों तरफ़ सरकारी ज़िलों से घिरा हुआ २०० मील लंबा और १५० मील चौड़ा बिस्तार में सैंतीस हजार मील मुरब्बा है। यह इलाका पूर्व और पश्चिम दोनों घाटों के बीच समुद्र से बहुत ऊंचा चबूतरे की तरह पड़ा है। जो कोई उस इलाक़े में जाना चाहे, पहले उसे घाटों पर चढ़ना होगा, पर सब जगह से बराबर बट्टाढाल नहीं है, कहीं १८०० फ़ुट कहीं २००० कहीं २५०० कहीं इस्से भी न्यूनाधिक ऊंचा है, और फिर इस बलंदी पर भी ऊंचे ऊंचे पहाड़ हैं, शिवगंगा का पहाड़ जो सबसे बड़ा है ४६०० फ़ुट ऊंचा

है। इसी ऊंचाई के कारण यहां की आबहवा बहुत अच्छी है, और मौसिम एतिदाल के साथ रहता है, बरन सदा बहार है। जंगल भी बड़े बड़े हैं, बहुधा खजूर के। धरती अकसर लाल और पथरीली। लोहे की खान है। दीमक बहुत होते हैं, यहां तक कि घर में तसवीर लगाओ और थोड़े ही दिनों उसकी खबर न लो तो केवल शीशा ही दीवार में चिपका रहजायगा, काग़ज़ और चौकठा बिलकुल नदारद, पर ऊंचे पहाड़ों पर नहीं होते। वहां के हिन्दू दान देने से दान लेने में अधिक पुण्य समझते हैं, यहां तक कि जब बीमार होते हैं, तो कितने ही मन्नत मानते हैं, कि जो अच्छे होजांय तो इतने दिन भीख की रोटी खाकर जीयें, और जब किसी से गांव में तकरार होजाती है तो गधा मारकार रास्ते में डाल देते हैं, उसी दिन वह सारा गांव वीरान होजाता है, यदि वह गधा मारने वाला भी उसी गांव में रहता हो तो उसे भी अपना घर छोड़ना पड़ेगा, क्योंकि वहांवाले जिस गांव में गधा मारा जाय फिर उसमें नहीं बस्ते। आमदनी इस इलाके की सत्तर लाख रुपया साल है। राजधानी मैसूर, जिसका शुद्ध नाम महिशासुर अथवा महिशुर बतलाते हैं, १२ अंश १९ कला उत्तर अक्षांस और ७६ अंश ४२ कला पूर्व देशांतर में लाल मिट्टी की शहरपनाह के अन्दर बसा है। क़िला अंगरेज़ी तौर का बहुत बड़ा बना है, और उसी के अन्दर राजा के महल हैं। थोड़े ही फ़ासिले से एक ऊंची ज़मीन पर अजंटी का मकान है। क़िले के पास से पहाड़ तक जो शहर से पांच मील पर १००० फ़ुट का ऊंचा होवेगा एक बड़ा तालाब है और उस पहाड़ की चोटी पर साहिब अजंटने एक बंगला बनवाया है, वहां से बहुत दूर दूर तक की सैर दिखलाई देती है, पहाड़ की बग़ल में सोलह

फुट ऊंचा एक पत्थर का नन्दी बहुत उमदा बना है। राजा के यहां हाथियों के रथ हैं, एक उन में इतना बड़ा जिस में दो सौ आदमी सवार होते हैं, सड़कें वहां की बहुत चौड़ी हैं। मैसूर से नौ मील उत्तर कावेरी के टापू में श्रीरंगपट्टन जो टीपूसुलतान के वक़्त में उस मुल्क की राजधानी था शहरपनाह के अन्दर बसा है, पास ही एक बाग़ में टीपू और उसके बाप हैदरअली का मक़बरा संगमूसा का बना है, उसके महल शहर के अंदर जो अब टूटे फूटे पड़े हैं, कुछ देखने योग्य नहीं हैं बाज़ार सीधा और चौड़ा है, पर गलियां ख़राब, श्रीरंगनाथ जी का मंदिर और बड़ी मसजिद देखने लायक़ है, दो पुल निरे पत्थर के कावेरी की दोनों धारा में बने हैं, दोनों हिन्दुस्तानी डौल पर हैं, मिहराब किसी में नहीं, एकही एक पत्थरके चौखुंटे खंभे तराश कर पानी में खूब मज़बूती के साथ खड़े करादिये हैं, और फिर उनपर पत्थर की सिला पाट दी हैं, उत्तर की धारा में जो पुल बना है उस में सरसठ सरसठ खंभों की तीन क़तार खड़ी हैं, और दक्षिण धारावाले पुलपर से पानी की नहर भी आई है। बंगलूर का शहर श्रीरंगपट्टन से सत्तर मील ईशानकोन की तरफ़ समुद्र से ३००० फुट ऊंचा लाल मिट्टी की शहरपनाह के अन्दर बसा है। बाज़ार चौड़ा दुतरफ़ा नारियल के दरख़्त लगे हुए, क़िला बहुत मज़बूत, खाई गहरी पहाड़ में कटी हुई, कोस एक पर सरकारी फ़ौज की छावनी है। साहिब अजण्ट वा कमिश्नर के रहने का यही सदर मुक़ाम है। बंगलूर से ३६ मील उत्तर ईशानकोन को झुकता चिकाबालापुर है, कि जहां मिसरी और क़न्द निहायत उमदा बनता है, पर मंहगा बहुत चिकाबालापुर से अनुमान अस्सी मील बायुकोन को चितलदुर्ग अथवा

चित्रदुर्ग का क़िला, जिसे वहां वाले सीतलदुर्ग भी कहते हैं, पहाड़ों के झुण्ड पर जो ८०० फ़ुट तक ऊंचे हैं बहुत मज़बूत बना है, दीवार के अन्दर दीवारें और दरवाज़ों के अन्दर दरवाज़े कोई ऐसी जगह बिना रोके नहीं छोड़ी जिधर से दुश्मन हल्ला कर सके, पानी इफ़रात से, फ़ौज इस में सरकारी रहती है। इस गिर्दनवाह में भी लोग बंगाले की तरह चरख पूजा करते हैं, अर्थात् अपनी पीठ लोहे की हुक से छेदकर महादेव के साम्हने बांस में लटकते और चर्खी की तरह घूमते हैं। बंगलर से बीस मील पश्चिम नैर्ऋतकोन को झुकता सुवर्ण दुर्ग एक पाव कोस ऊंचे खड़े पहाड़ पर बहुत मज़बूत क़िला बना है। मैसूर से ४० मील ईशानकोन को, जिस जगह कावेरी दो धारा होकर शिवसमुद्र अथवा सीवनसमुद्र का टापू बनाती है, जिस पर किसी समय में गंगपारा अथवा गोंगगोदपुर का शहर बस्ता था, उसका जल सौ फ़ुट से लेकर दो सौ फ़ुट तक के ऊंचे पत्थरों से कई धारा होकर इस ज़ोर शोर के साथ चद्दरों की तरह नीचे गिरता है कि जब उसके आस पास के मनोहर जंगल पहाड़ों पर और उस स्थान के निर्जल एकान्त होने पर नज़र करो विशेष करके बरसात के दिनों में तो शायद ऐसी रम्य और सुहावनी दूसरी जगह दुनियां में मुश्किल से मिलेगी। हमने यह इलाक़ा मैसूर का रजवाड़ों में इसलिये लिखा है कि आमदनी वहां की सरकारी खज़ाने में नहीं आती, हुकूमत का खर्च काटकर बिलकुल वहां के राजा को दे दी जाती है, पर इतना याद रखना चाहिये कि राजा को मुल्क के बन्दोबस्त में कुछ भी इख्तियार नहीं है, यह काम साहिब कमिश्नर और उनके असिस्टेंटों के सिपुर्द है, अजण्टी और कमिश्नरी दोनों काम एक ही साहिब करते हैं, और कुड़ग का

इलाक़ा भी जो मैसूर और कानडे के बीच में पड़ा है, और वहां के राजा की सर्कशी के सबब सरकार की जब्ती में आ गया, इसी कमिश्नर के ताबे है, वहां मरकाडे में जो समुद्र से ४५०० फुट ऊंचा है, उसका एक असिस्टेंट रहता है। कुडग सारा जंगल पहाड़ों से भरा है, और वहांवालों का चलन मलबारियों से बहुत मिलता है।–३–कोची अथवा कच्छी, जिसे अंगरेज़ लोग कोचीन कहते हैं, मैसूर के दक्षिण। उस के पश्चिम को समुद्र है, और दक्षिण को त्रिवाङ्कोड़ू की अमलदारी से मिला है, बाक़ी दोनों तरफ़ सरकारी जिले हैं। बिस्तार उसका प्राय दो हज़ार मील मुरब्बा। पहाड़ों की जड़ में तो ताड़ केले और आम के पेड़ों में ज़मींदारों के घरहैं, और ऊपर बड़ेबड़े भारी दरख़्तों के जंगल हैं।ईसाई और यहूदी इस इला-क़े में बहुत रहते हैं यहां तक कि गांव के गांव उन्हीं के बस्तेहैं। उस तरफ़ के बेवकूफ़ लोग कोची और त्रिवाङ्कोड़ूके आदमियोंको जादूगर ख़याल करते हैं। आमदनी वहां की प्राय पांच लाख रुपया साल। राजधानी कोची जिसका ज़िक्र मलबार के जिले में हुआ है सरकार के क़ब्जे में है। –४–त्रिवाङ्कोड़ू अथवा तिरुवनंतपुर। उत्तर उस के कोची दक्षिण और पश्चिप को समुद्र, पूर्व की तरफ़ सरकारी जिले मथुरा और तिरुनेल्लूवालि के। लंबान अनुमान १४० मील और चौड़ान ४० मील। बिस्तार पांच हजार मील मुरब्बा है। पहाड़ों पर बड़े भारी जंगल हैं, पानी की इफ़रात से खेतों में अन्न बहुत पैदा होता है, और सब्जा हर तरफ़ दिखलाई देता है। चाल यहां की मलयालवालों से बहुत मिलती है, स्त्री बिलकुल मालिक रहती हैं, ख़ाविंद का इख़्तियार कुछ भी नहीं। मनुष्य यहां के बहुधा झूठे और बदकार। प्राय लाख आदमियों के उस इलाक़े में क्रिस्तान

है। आमदनी चालीस लाख रुपया साल। इस इलाके में खारे पानी के दर्मियान एक जानवर जलचर सील की क़िस्म से और ऊदबिलाव से मिलता हुआ चार फुट लंबा मुंह गोल कान छोटे गर्दन मोटी पैर के पंजे बतक की तरह जुड़े हुए बाल तेलिये बदन और दुम मछली की तरह होता है, शायद लोगों ने उसी को देखकर कहानियों में जलमानसों की बात बनाली। राजधानी त्रिविंद्रम् ८ अंश ९ कला उत्तर अक्षांश और ७९ अंश ३७ कला पूर्व देशांतर में बसा है, उसी में राजा के रहने का क़िला और मकान अंगरेज़ी तौर का और रज़ीडंटी है।—५—कोलापुर हैदराबाद के पश्चिम। चारों तरफ़ सरकारी ज़िलों सें घिरा और उन के साथ ऐसा मिला हुआ कि उसका लंबान चौड़ान बतलाना कठिन है। बिस्तार साढ़े तीन हज़ार मील मुरब्बा है। यह इलाक़ा कुछ तो घाट के पहाड़ों में है और कुछ घाट से नीचे। आमदनी पंद्रह लाख रुपया साल है। राजधानी कोलापुर १६ अंश १९ कला उत्तर अक्षांस और ७४ अंश २५ कला पूर्व देशांतर में पहाड़ों के बीच एक नदी के समीप बसा है। क़िला कुछ मज़बूत नहीं है, लेकिन शहर से दस मील के तफ़ावत पर वायुकोन को पवनगढ़ और पिनौलगढ़ के क़िले ३०० फ़ुट ऊंचे पहाड़ के ऊपर अलबत्ता मज़बूत बने हैं, पिनौलगढ़ साढ़े तीन मील के घेरे से कम नहीं है।–६–सावंतवाड़ी कोलापुर के नैर्ऋतकोन की तरफ़ और गोवेके उत्तर, पश्चिम घाट और समुद्र के बीच में, प्राय हज़ार मील मुरब्बा का बिस्तार रखता है। धरती बीहड़ पहाड़ी और ऊसर, जंगल बहुत, खेतियां हलकी, आमदनी दो लाख रुपया साल है। राजधानी वाड़ी १५ अंश ५६ कला उत्तर अक्षांस और ७४ अंश पूर्व देशांतर में बसा है, पर राजा के

नालाइक होने के सबब इंतिजाम इस इलाके का बिलफैल सरकार करती है, जो कुछ रुपया हुकूमत के खर्च से बचता है वह राजा को मिलता है ॥

सिवाय सरकारी और हिंदुस्तानी अमल्दारियों के जिनका ऊपर बर्णन हुआ कुछ थोड़ी थोड़ी सी जमीन इस हिंदुस्तान में फ़रासीस डेनमार्क और पुर्टगाल के बादशाहों के दखल में है। फ़रासीस के दखल में पटुचेरी कारीकाल और चंद्रनगर है। पटुचेरी का सुंदर शहर जिसे अंगरेज पांडिचेरी कहते हैं दक्षिण में पालार और काबेरी के मुहानों के बीच समुद्र के तट पर ११ अंश ५५ कला उत्तर अक्षांस और ७९ अंश ५१ कला पूर्व देशांतर में मंद्राज से ८५ मील एक बालू के मैदान के दर्मियान बसा है, और कारीकाल १० अंश ५५ कला उत्तर अक्षांस और ७९ अंश ४४ कला पूर्व देशांतर में मंद्राज से १५० मील दक्षिण तंजाउरु के पूर्व ईशान कोन को जरा झुकता हुआ समुद्र के तट कावेरी के मुहाने पर है, और चन्द्रनगर बंगाले से २२ अंश ५१ कला उत्तर अक्षांस और ८८ अंश २९ कला पूर्व देशांतर में कलकत्ते से बीस मील उत्तर गंगा के दहने कनारे पर पड़ा है। पटुचेरी फ़रासीसियों ने सन् १६७४ में वहां के हाकिम से मोल लिया था, और चन्द्रनगर सन् १६८८ में औरंगजेब से उन्हें मिला था। ९२ गांव पटुचेरी के साथ हैं, और १०७ गांव कारीकाल के इलाक़े में, और कुछ थोड़े से गांव चंदर नगर के भी आस पास हैं, सिवाय इस के कुछ थोड़ी थोड़ी जमी॰ और भी चार पांच शहरों में हैं। आमदनी इन सब की सन् १८३: में ३७९६६३ रुपये साल की हुई थी, और आदमी इस अमल्दा.री के अन्दर सन् १८४० में कुछ ऊपर एक लाख सत्तर हजार गिने

गये थे, उन की हिफ़ाज़त के वास्ते दो कम्पनी सिपाहियों की मुक़र्रर हैं। गवर्नर फ़रासीसियों का पदुचेरी में रहता है। वहां सूत कातने की एक कल फ़रासीस से बहुत अच्छी आई है, उससे बहुत ग़रीबों का गुज़ारा होता है। सिवाय इसके वहांवालों ने एक कारख़ाना ऐसा मुक़र्रर किया है, कि उसमें जो मुहताज क्रिस्तान उस जगह का जाकर मिहनत करे उसे खाने को मिलता है, और दो चार पैसे भी रोज़ दिये जाते हैं, फिर जब वे चीज़ें जो उन से बनाते हैं बिक जाती हैं, तो उनका फ़ायदा रुपये में बारह आना उन्हीं लोगों को मिलताहै, और बीमारी में भी उनकी खबर ली जाती है, निदान इस कारख़ाने की बदौलत बहुतेरे आदमी भीख मांगने से बचते हैं, और हलाल की रोटी खाते हैं यदि और शहरों के लोग भी मिलकर ऐसे कार-ख़ाने खड़े करें तो दीन दुखियों का क्या ही उपकार हो॥

डेनमार्क के बादशाह के दख़ल में तिरकम्बाड़ी कारीकाल से ६ मील उत्तर समुद्र के तट कावेरी की एक धारा के मुहाने पर १० अंश ६७ कला उत्तर अक्षांस और ७९ अंश ५४ कला पूर्व देशां-तर में मंदराज से १४५ मील दक्षिण तेरह गांव के साथ है। आदमी उस में सन् १८३५ में २३१८३५ गिने गये थे। अठारह बीस बीघे ज़मीन इस बादशाह की बलेश्वर में भी है॥ पुर्टगालवाले बादशाह के दख़ल में गोवे का इलाक़ा सावंतबाड़ी के दक्षिण और कानड़ा के उत्तर पश्चिमघाट और समुद्रके बीच में ६३ मील लम्बा और १६ से ३२ मील तक चौड़ा है। आमदनी वहां की सब मिलाकर नौ लाख रुपया साल है। राजधानी पुरानी अर्थात् गोदा जो १५ अंश ३० कला उत्तर अक्षांस और ७४ अंश २ कला पूर्व दे-शांतर में बम्बई से २५० मील दक्षिण अग्निकोण को झुकता बसा

था अब बिलकुल बे रौनक़ और वीरान सा पड़ा है, गवर्नर पुर्टगीज़ों का गोवे से ५ मील पश्चिम समुद्र के तट पर पंजिम में रहता है, और अब वही उस इलाक़े की राजधानी हो गया है, वहां किवाड़ों में शीशे की जगह सीप लगाते हैं, और पालकी की जगह पहाड़ियों की तरह बांस में झोली बांधकर उसी में बैठते हैं, और उसको दो आदमी सिर पर उठाते हैं, नाम इस सवारी का डण्डी है ॥

निदान इस भारतवर्ष में जो सब देश प्रदेश और नदी पर्वत हैं थोड़ा बहुत उन सब का वर्णन हो चुका, यदि उन्हें किसी नक़शे में देखो तो साफ़ नजर पड़ जायगा कि ऊपर (१) अर्थात् उत्तर में सिंधु नदी से लेकर ब्रह्मपुत्र तक सरासर हिमालय पहाड़ की श्रेणी चली गई है जिस में उत्तर खण्ड के सुन्दर ठंढे और अतिरम्य मनोहर मुल्क बस्ते हैं। शास्त्र में भी उसकी बड़ी प्रशंसा की है, उदासीन जनों के चित्त को उस से अधिक प्यारा दूसरा कोई स्थान नहीं है। इन पहाड़ों की जड़ में कोई तीस चालीस मील चौड़ा बड़े भारी घने जंगलों से घिरा हुआ वह स्थान है। जिसे तराई कहते हैं, गर्मी और बरसात में इस तराई की हवा विशेष करके नयपाल से नीचे नीचे ऐसी बिगड़ जाती है कि बहुधा पशु पक्षी भी अपनी जान बचाने के लिये वहां से निकल भागते हैं। बांएं हाथ अर्थात् पश्चिम जो जोधपुर जैसलमेर बीकानेर और सिंध और बहावलपुर के वे हिस्से जो सतलज और सिंधु के कनारों से दूर हैं

(१) अंगरेज़ी क़ाइदे बमूजिब नक़शे पर हर्फ़ सदा उसकी उत्तर अलंग ऊपर रखकर लिखते हैं, इसलिये जब नक़शे को दीवार में सीधा लटकाओगे उस की उत्तर अलंग ऊपर और दक्षिण नीचे होगी, और पूर्व दहने और पश्चिम बायें हाथ पड़ेगी ॥

रेगिस्तान के चटपर मैदान में बसे हैं, जहां पानी भी कम और तृण वीरूध का भी अभाव, जिधर देखो समुद्र की लहरों की तरह बालू के टीले दिखलाई देते हैं। जब गर्मियों में लुएं चलती हैं और आंधियां आती हैं, और वह बालू गर्म होकर हवा में उड़ती है, तो मानो बदन पर छर्रे बरसने लगते हैं. देखते ही देखते वे टीले उड़ कर एक जगह से दूसरी जगह इकट्ठा होजाते हैं, अकसर आदमी इस तरह के खतरे में आए हैं, और रेत के नीचे दबकर मर गये हैं। वहां सिवाय ऊंट के और किसी भी सवारीका गुज़र नहीं होसकता, बहुधा मुसाफ़िर लोग रात को तारों के निशान से चलते हैं, नहीं तो रेगिस्तान में सड़क पगडंडी बस्ती पेड़ इत्यादि चीज़ों का आसरा और पता कुछ भी नहीं मिलता, केवल कहीं कहीं फोक झड़बेरी आक और करील अवश्य नज़र पड़जाते हैं। अरबली पहाड़, जो सिरोही और जोधपुर को उदयपुर सरकारी ज़िले अजमेर और किशनगढ़ से जुदा करता शेखावाटी और अलवर की अमलदारी में होता हुआ दिल्ली के पास जमना के कनारे तक चला गया है, इस मरु देश की पूर्व सीमा है। दहने हाथ अर्थात् पूर्व की तरफ़ सूबै बंगाला समुद्र और हिमालय के बीच सीधा बट्टाढाल. जिस्मे पहाड़ तो क्या कहीं पत्थर का रोड़ा भी देखने को नहीं मिलता, नदियों की बहुतायत से ऐसा सेराब है कि बरसात में प्राय आधे से अधिक जलमग्न होजाता है। आबादी बहुत, धरती उपजाऊ परले सिरे की, धान हरतरफ़ लहलहाते हैं, । पूर्व भाग में बम्हा की सरहद पर ऐसे सघन और अगम्य जंगल पड़े हैं, कि जैसा उत्तर में इस देश को हिमालय से बचाव है वैसा ही इधर इन जंगलों की मानों दीवार खड़ी है, शत्रु उस राह से कदापि नहीं आ सकता। निदान यह बं-

गाले का मैदान नदियों से सिंचा हुआ गंगा के दोनों तरफ़ हिमालय और विंध के बीच हरिद्वार तक चला गया है, और गंगा यमुना के बीच जो देश पड़ा है उसे अन्तरवेद और दुआबा भी कहते हैं, और यही दो चार सूबे अर्थात् दिल्ली आगरा अवध और इलाहाबाद यथार्थ मध्यदेश अर्थात् असली हिंदुस्तान है। वायूकोन में सिखों का मुल्क पंजाब है, जिसके पांचो दुआबे जिन जिन नदियों के बीच में पड़े हैं उन दोनों नदियों के नाम के हर्फ़ों से पुकारे जाते हैं, जैसे व्यासा और सतलज के बीच में दुआबेबस्तजालन्धर, व्यासा और रावी के बीच में दुआबेबारी, रावी और चनाब के बीच में दुआबै रचना, झेलम और चनाब के बीच में दुआबैजच, और झेलम और सिंधु के बीच सिंधुसागर दुआब। मध्य में विन्ध्याचल के तटस्थ नर्मदा और शोण के कनारों पर, और फिर शोण के कनारे से सूबे उड़ेसा और नागपुर की अमलदारी के बीच गोदावरी तक, वे सब जंगल और झाड़ झंखाड़ और उजाड़ हैं जिनमें भील गोंद धांगड़ कोल चुआड़ और संठाल इत्यादि असभ्य अर्धबनमानस तुल्य प्राय जंगली मनुष्य बसते हैं। नीचे नर्म्मदा पार दक्षिणदेश पूर्व और पश्चिम घाटों के बीच एक चबूतरा सा उठा हुआ, ज्यों ज्यों दक्षिण गया ऊंचा होता गया, यहां तक कि मैसूर की धरती प्राय तीन हजार फ़ुट समुद्र से बलन्द है, और बलंदी के सबब वहां मौसिम भी अच्छा रहता है, गर्मी की शिद्दत नहीं होती। यह ऊंचा देश दोनों घाटों के बीच कृष्णा नदी से दक्षिण बालाघाट कहलाता है, और घाटों से उतरकर समुद्र की तरफ़ जो नीचा देश है वह पाईं घाट। असल में कर्नाटक उसी बालाघाट का नाम था, पर अब अंगरेज लोग पाईंघाट को भी उसी नाम से पुकारते हैं, और कृष्णा

के मुहाने से कावेरी के मुहाने तक समुद्र के तटस्थ देश को कारोमंडल भी कहते हैं। कारोमण्डल चौलमण्डल का अपभ्रंश है, कि जो नाम अब तक भी वहांवालों की जुबान पर जारी है (१) इस कनारे समुद्र के निकट धरती बिलकुल रेतल और ऊसर है। कृष्णा पार दक्षिणदेश में मुसलमानों का राज्य पक्का न जमने के कारण वहां अबभी बहुतेरी बातें असली हिंदू धर्म की देख पड़ती हैं, मन्दिर औ शिवालय बहुत बड़े बड़े प्राचीन बने हुए, धर्मशाला और सदाबर्त हरतरफ़ मुसाफ़िरों के लिये, ब्राह्मण वेदपाठी और अग्निहोत्री जगह जगह इफ़रात से, और नाम नगर और ग्रामों के अहमद महमूद पर कोई नहीं वही पुराने हिंदी चले जाते हैं। यद्यपि हिसाब से प्राय दो तिहाई मुल्क अर्थात् प्राय सात लाख मील मुरब्बा अब भी हिन्दुस्तानियों के दखल में है, परन्तु वो आबादी और आमदनी में सरकारी मुल्क के आधे हिस्से की भी बराबरी नहीं कर सकता। सरकारी अमलदारी में नौ करोड़ आदमी बसते हैं, हिन्दुस्तानी अमलदारी में कुल पांच करोड़। सरकार के यहां तीस करोड़ रुपया तहसील होता है, हिन्दुस्तानियों को ग्यारह करोड़ भी पल्ले नहीं पड़ता। यह केवल नियत की बर्क़त है, और इंतिज़ाम की खूबी॥

---

(१) रामस्वामी अपनी किताब में लिखता है कि कारोमण्डल कारीमलाल का अपभ्रंश है, और क़ारीमलाल उस गांव का नाम है जो पुर्टगालवालों ने पहले ही पहल उस कनारे पर देखा था॥

इति

नक़शा हिन्दुस्तान के रजवाड़ों के विस्तार और आमदनी का वर्णमाला के क्रम से।

संख्या	नाम इलाक़े का	विस्तार मील मुरब्बा	आमदनी साल में
१	अंबाले की अजण्टी	२३००	
	जींद		३०००००
	पटियाला	४५००	२००००००
	मालेरकोटला		३०००००
२	अलवर	३५००	१८०००००
३	इन्दौर	८०००	२२०००००
४	उदयपुर	११६००	१२५००००
५	कच्छ (तूल १६० अर्ज़ ५५ मील)		८०००००
६	कपूरथला		२०००००
७	करौली	१९००	५०००००
८	कश्मीर	२५०००	१००००००००
९	किशनगढ़	७००	३०००००
१०	कोची	२०००	५०००००
११	कोटा	६५००	४५०००००
१२	कोलापूर	३५००	१५०००००
१३	गढ़वाल	४५००	१०००००
१४	ग्वालियर	३३०००	७८०००००
१५	चम्बा		१०००००
१६	जयपुर	१५०००	८५०००००
१७	जैसलमेर	१२०००	१०००००
१८	जोधपुर	३५०००	१७०००००
१९	टोंक	१८००	१००००००

संख्या	नाम इलाक़े का		बिस्तार मील मुरब्बा	आमदनी साल में
२०	ढूंगरपुर	....	१००८	२०००००
२१	त्रिवाङ्कोडू	....	५०००	४००००००
२२	देवास	....		४०००००
२३	धार	....	१०००	४७५०००
२४	धौलपुर	....	१६२५	७०००००
२५	नयपाल	....	५४५००	३२०००००
२६	पर्तापगढ़	....	१५००	२०००००
२७	बघेलखण्ड	....	१००००	२००००००
२८	बड़ोदा	....	२४०००	७००००००
२९	बहावलपुर	....	२००००	१५०००००
३०	बांसवाड़ा	....	१५००	२०००००
३१	बीकानेर	....	१७०००	६५००००
३२	बुंदेलखण्ड	....	१००००	
	दतिया	....		१००००००
	उरछा	....		७०००००
	चारखाड़ी	....		४०००००
	छतरपुर	....		३०००००
	अजयगढ़	....		३२५०००
	पन्ना	....		४०००००
	समथर	....		४५००००
	विजावर	....		३२५०००
३३	बूंदी	....	२२००	१००००००
३४	भरतपुर	....	२०००	२००००००
३५	भुटान (तूल १०० मील अर्ज़ ५० मील)			

संख्या	नाम इलाक़े का		बिस्तार मील मुरब्बा	आमदनी साल में
३६	भूपाल	....	७०००	२२०००००
३७	मनीपुर	....	७५००	१०००००
३८	मैसूर	....	३७००	७००००००
३९	मंडी	....		३५००००
४०	रामपुर	....	७००	१००००००
४१	शिकम	....	१६००	
४२	सतलज और जमना के बीच के रजवाड़े			
	कहलूर	....		१०००००
	बिसहर	....		१०००००
	सिरमौर	....		१०००००
४३	सावन्तवाड़ी	....	१०००	२०००००
४४	सिरोही	....	३०००	१०००००
४५	सुकेत	....		८००००
४६	हैदराबाद	....	१०००००	१५००००००

अनुक्रमणिका

दूसरा हिस्सा

प

॥ इति ॥